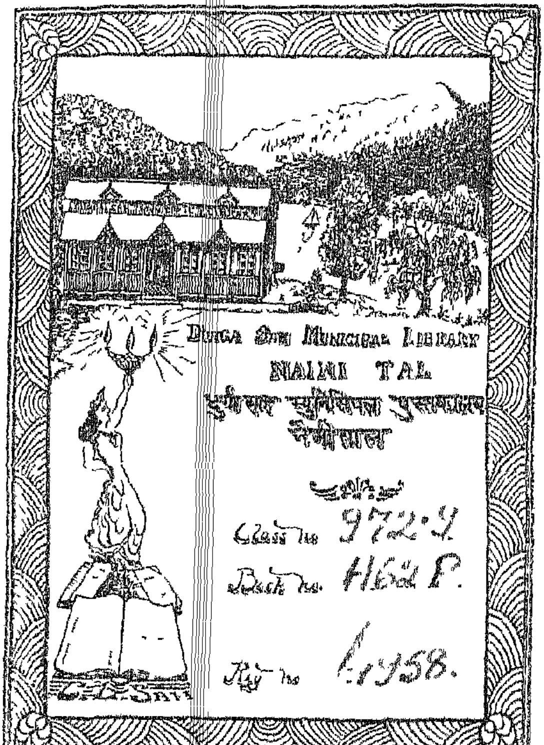

Durga Sah Municipal Library
Naini Tal
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल

परिवर्तन

आधुनिक पुर्टोरिको की कहानी

लेखक

अर्ल पार्कर हेनसन

प्रकाशक

आदर्श पुस्तक मंदिर

इलाहाबाद

प्रथमावृत्ति] [मूल्य १॥)

परिवर्तन

आधुनिक पुर्टोरिको की कहानी

पुस्तक समीक्षाओं के कुछ अंश

"यह पुर्टोरिको की, अपने को उपनिवेशवाद के दलदल से खींच कर बाहर निकालने की सङ्कल्पित चेष्टाओं की, और उपलब्ध आश्चर्यजनक परिणामों की कहानी है। शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से यह एक उत्साहवर्धक (तथापि अभी पूर्ण नहीं) सफलता रही है, क्योंकि लेखक का कथन है, सारा काम पुर्टोरिकी स्वयं ही कर रहे हैं।"

"लेखक, जो भूगोलशास्त्री और इञ्जीनियर है, और जो पुर्टोरिकी पुनर्निर्माण प्रशासन के आयोजन में परामर्शदाता रह चुके हैं; सरल, स्पष्ट, और टीका-टिप्पणियों के झमेले से मुक्त शैली में प्रगति की यह कहानी प्रस्तुत करते हैं।"

"श्री हेनसन; मुनोज की उस सङ्कल्पित चेष्टा में विश्वास रखते हैं, जिनके अन्तर्गत करों की माफी, कारखानों के लिए सस्ते मकानों की उपलब्धि, वेतन की कम दरों में और विश्व की विशालतम उपभोक्ता मंडी में प्रवेश की सुविधाओं द्वारा उद्योग आकर्षित किये गए हैं।"

"ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी। श्री हेनसन ने इसमें एक ऐसी ओजपूर्ण 'प्रयोगशाला' की कहानी प्रस्तुत की है जिसके परिणाम केरेबियन सागर के क्षेत्रों से बाहर भी फैल सकते हैं। यह कहानी उन्होंने भली प्रकार कही है।"

एडवर्ड चेस
न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून
पुस्तक समीक्षा में (३० जनवरी '५५)

लेखक के विषय में ● ● ●

अर्ल पार्कर हेनसन का जन्म १८९९ में बर्लिन, जर्मनी में हुआ। वे अमेरिकी माता-पिता की सन्तान हैं। विस्कानसिन विश्वविद्यालय से आपने स्नातक की उपाधि प्राप्ति की एवं शिकागो विश्वविद्यालय और कोलम्बिया विश्वविद्यालय में स्नातक-कार्य किया। अपने जीवन में विविध अवसरों पर आप इञ्जीनियर, अन्वेषक, प्राध्यापक और लेखक रहे हैं। भूगोल-शास्त्र के सामान्य विषय पर आपने कई विशिष्ट पुस्तकें लिखी हैं और भौगोलिक एवं शास्त्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रचुरता से लेख लिखते हैं। इस समय आप डेलवेयर विश्वविद्यालय के भूगोल एवं भू-गर्भ शास्त्र विभाग के अध्यक्ष हैं। पुर्टोरिको में लेखक की रुचि का आरम्भ १९३५ से हुआ जबकि आपने वहाँ उस कार्य की आरम्भिक स्थितियों में आयोजन, परामर्शदाता के रूप में कार्य किया जिसे "आज पुर्टोरिको आयोजन मंडल" कर रहा है।

पुस्तक के विषय में ● ●

पुर्टोरिको की कहानी, शब्द के अमेरिकी अर्थ में एक क्रान्ति की कहानी है। यह पुस्तक बतलाती है कि किस प्रकार एक छोटा, घना बसा और अविकसित द्वीप अपने को प्रजातांत्रिक सामाजिक परिवर्तन की वेगवान प्रयोगशाला में परिणत करता जा रहा है। इस पीढ़ी के एक महान और मिश्रित विचारों वाले पुरुष लुइस मुनोज मारिन के नेतृत्व में पुर्टोरिको प्रति सप्ताह एक नया कारखाना खोलता है, उसने अपनी प्रति व्यक्ति आय दुगनी कर ली है, मलेरिया को समाप्त कर दिया है, नये स्कूल, सड़कें और अस्पताल बनाये हैं। परिवर्तन की गति अभी भी वेग पकड़ती जा रही है। अभी भी थोड़े से पुर्टोरिकी साम्यवादी, और उसी भाँति कुछ आतंकवादी भी हैं, किन्तु ये उन सभी पुरुषों के मुकाबले, जो पुर्टोरिको के जीवन में सच्चे क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए, विशाल जन-समर्थन के साथ, कार्य कर रहे हैं, अजीब पुराने तौरतरीकों के लोग नजर आते हैं। पुर्टोरिको को उपनिवेश की संज्ञा दी जाती थी और जो अब महाद्वीप, अमेरिका के, जो संसार भर के अन्य भूतपूर्व औपनिवेशिक क्षेत्रों के लिए आशा का भंडार है, साथ नये प्रकार के सम्बन्धों की स्थापना कर रहा है।

विषय-सूची

न्याय पुनः विजयी होगा

यह उस छोटे से द्वीप की कहानी है जिसके पास अपनी कल्पना-शक्ति और अपनी जनता के सङ्कल्प के अतिरिक्त अन्य साधन बहुत कम थे। यह कहानी बतलाती है कि एक पिछड़ा हुआ अविकसित समाज किस भाँति अपने भूतकाल से ऊपर उठा है और आज प्रगति के प्रतीक के रूप में सिर उठाये खड़ा है।

पुर्टोरिको पश्चिमी गोलार्द्ध की दो संस्कृतियों के मध्य एक विशिष्ट कड़ी है। उसे उत्थान के पूर्व या तो दक्षिण अमेरिका की मनाना भावना का अथवा उत्तर अमेरिकी साम्राज्यवाद का अथवा इन दोनों ही का एक दुखद उदाहरण बतलाया जाता था। आज वह इन दोनों संस्कृतियों के मैत्रीपूर्ण मेलमिलाप के परिणामों का सर्वोत्तम प्रमाण है। उस युग में जब राष्ट्रवाद की अति प्रबलता अनेक अविकसित देशों को विषाक्त कर देती है, पुर्टोरिको ने अपना मन-मस्तिष्क शांत रखा और स्वयं अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा बनायी। आंतरिक मामलों में पूर्णतया स्वशासित पुर्टोरिको ने समान नागरिकता, आदर्शों एवं हितों के साथ स्वेच्छापूर्वक अमेरिका से अपना नाता कायम रखने का निश्चय किया।

इस कहानी में नायक अनेक; और खलनायक गिने चुने हैं। इसकी भूमिका में सर्वोच्च हैं गवर्नर लुइस मुनोज मारिन जिनका उनके देशवासी कामनवेल्थ के संस्थापक के और उस नेता के नाते जिसने हमें चर्चिल के समान 'रक्त, पसीना और आँसू' से अधिक कुछ न माँगने का वचन देते हुए हमें हमारे कठिन मार्ग पर चलने की प्रेरणा और मार्ग-दर्शन दिया, आदर करते हैं।

पुर्टोरिको के उदय की कहानी में इस पुस्तक के लेखक एक दूसरे महत्वपूर्ण पात्र हैं। १९३५ में मुझे "पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन" के आयोजन विभाग में उनके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ था। आर्थिक-सुधारों का बीजारोपण, अनुसंधान, आयोजन, और सृजनात्मकता से, अँगुलियों पर गिने जाने वाले व्यक्तियों के एक छोटे से बीज रूप, दल द्वारा किया गया था। अर्ल हेनसन ने आयोजन विभाग के कार्यकारी मन्त्री के नाते हम सब को अधिकाधिक सफलता के लिए प्रेरित किया। पुर्टोरिकी नेताओं और वैज्ञानिकों में अधिकांश ने जब मुनोज मारिन का समर्थन करने के लिए "पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन" से सम्बन्ध तोड़ लिया था, अर्ल हेनसन ने भावना से अपने पुर्टोरिकी भाईयों का पक्ष चुना, और हमारे साथ त्यागपत्र दे दिया। इसके कुछ ही समय पश्चात मुझे अपना एक लेख उन्हें समर्पित करने का आनन्द मिला और तब मैंने यह विश्वास व्यक्त किया कि एक दिन "पुर्टोरिको" में "न्याय पुनः विजयी होगा"। यही घटित भी हुआ, और हम सबको हर्ष है कि पुर्टोरिको के कट्टरतम मित्रों में से एक, हमारे विकास को देखने, हमारी प्रगति का अध्ययन करने और अपनी प्रेरक शैली व शब्दों में उससे संसार को अवगत कराने के लिए, आज हमारे बीच आये हैं।

रेफेल पिको

अध्यक्ष, "पुर्टोरिको आयोजन मंडल"

परिचय

लेखक—चेस्टर बोल्स

ऐसे समय, जब कि हम अमेरीकियों को अपनी निजी चेतनाओं और सार्वजनिक नीतियों में संसार के अविकसित क्षेत्रों की आकांक्षाओं एवं उनकी उद्यमशीलता को सहानुभूतिपूर्वक स्वीकार करने की नितांत आवश्यकता है, यह सौभाग्य, और हर्ष का विषय है कि पुर्टोरिको हमें बहुत शिक्षा दे सकता है।

यह सौभाग्य का विषय है; क्योंकि हमारे लिए, केरेबियन में रहने वाले अपने बीस लाख सह-नागरिकों की भूमि, इस द्वीप, के अतिरिक्त और कोई अन्य क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ हमें इतनी तत्परता से प्रवेश मिल सके और जिसके लिए हमारी चिन्ता वैध हों। यह हर्ष का विषय है; क्योंकि हाल के वर्षों में पुर्टोरिको में हुए उल्लेखनीय परिवर्तन का अभी तक शेष अमेरिकी जनता ने ठीक से मूल्यांकन नहीं किया है।

प्राध्यापक हेनसन की यह पुस्तक इस अभाव की पूर्ति में बड़ा योग देगी। अन्वेषक, अनुसंधानकर्ता, भूगोल-शास्त्री और यांत्रिक श्री हेनसन बहुत समय पूर्व ही, अनेक क्षेत्रों में, ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

१९५२ में पुर्टोरिको और महाद्वीपीय अमेरिका में ऐसा सम्बन्ध स्थापित हुआ जो अद्वितीय एवं वर्णनातीत है। राजनीतिक-परीक्षण के रूप में "अस्वतंत्र" स्वतंत्रता का यह पुर्टोरिकी परीक्षण अपने में सर्वथा बेजोड़ है, और श्री हेनसन ने, सावधानी-पूर्वक, बतलाया है

कि पुर्टोरिकियों के लिए उनकी अपनी विशिष्ट-अवस्था को कायम रखना कितना अपरिहार्य हो सकता है। वे इस बात को सफलतापूर्वक व्यक्त करते हैं कि उनके लिए राज्यत्व अथवा पूर्ण स्वतन्त्रता के विकल्प न केवल असंभव, बल्कि विनाशक भी होंगे।

किन्तु जहाँ वैधानिक प्रणालियाँ बाहर से लाकर नहीं रोपी जा सकतीं, वहाँ मूलभूत विचारों के सम्बन्ध में बहुधा यह बात लागू होती है। वस्त्र, आवास एवं भोजन की असुविधाओं से ग्रस्त दो-तिहाई मानवता की आकांक्षाओं एवं सन्ताप में अधिकांश अमेरीकियों से अधिक पुर्टोरिको के निवासी भागीदार हैं। तथापि, कदाचित इजराईल की कृषि-बस्तियों अथवा भारत की कुछ औद्योगिक एवं ग्राम्य-विकास योजनाओं को छोड़ अन्यत्र कहीं भी पुर्टोरिको में हाल ही में खोजी गयी पद्धति से मेल खाने की संभावना प्रदर्शित करने वाले आर्थिक-विकास के बलशाली प्रयत्न नहीं हुए।

मैं, भारत में सफलताओं और असफलताओं, निराशा तथा सुफल की दैनिक क्रमिक गाथाओं से यह समझ पाया कि सूझ-बूझ पूर्ण विकास-कार्य कितना महत्वपूर्ण होता है। गान्धी के देश में मैंने संसार के दूसरे छोर पर स्थित पुर्टोरिको की इस दूसरी अहिंसक-क्रांति की भावना को हृदयंगम किया।

अविकसित देश स्वयं भी वास्तविक उपलब्धियों को मान्यता देने में पीछे नहीं रहे हैं; यह तथ्य उस आवागमन उत्सुक विदेशियों के आगमन और प्रशिक्षित विशेषज्ञों के निर्गमन—से बहुत बड़ी मात्रा में प्रमाणित हो गया है, जो हाल के दिनों में पुर्टोरिको में हो रहा है।

गवर्नर लुइस मुनोज मारिन निस्संकोच रूप से अपने शासन को "गरीबों के लिये गरीबों की सरकार" की संज्ञा प्रदान करते हैं। उनकी पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी का ध्येय-वाक्य "रोटी, भूमि और

स्वतंत्रता", एशिया, आफ्रिका और दक्षिण अमेरिका में कहीं की भी जनता के लिये जागरण का आह्वान है।

पुर्टोरिको सूक्ष्म रूप से अधिकांश विश्व में पायी जाने वाली व्याधियों का संग्रह है। जब भी कहीं जनता उपनिवेशवाद के जुए को उतार फेंकने हेतु अङ्गड़ाई ले रही होती है, ये ही केन्द्रीयपूर्ण समस्याएँ बारम्बार उपस्थित होती हैं :

—सुदूरवर्ती राजनीतिक नियंत्रण और लुभावने आर्थिक एकाधिकार को उखाड़ फेंकने का दृढ़ संकल्प ;

—औद्योगीकरण के लिये अधीरता ;—जो १५० वर्षों से भी अधिक समय से पश्चिमी यूरोप और अमेरिका में व्याप्त सुविधापूर्ण तदर्थ प्रगति को सहन नहीं करेगी ;

—सिंचाई, बाढ़-नियंत्रण तथा बिजली हेतु विकसित जल-साधनों एवं बहुउद्देश्यीय योजनाओं की आवश्यकता ;

—भूमि के पुनर्वितरण एवं ग्रामीण-पुनर्वास की अनिवार्य आवश्यकता ;

—सुधरी हुई साफ-सफाई, अच्छे स्वास्थ्य, अधिकाधिक साक्षरता तथा आरामदेह, अल्प लागत वाले मकानों की व्यवस्था के कार्य-क्रम;

—बढ़ती हुई जन-संख्या के कारण उत्पन्न गम्भीर चिन्ता ;

—विश्वविद्यालय-स्नातकों की संख्या और उनकी रुझान तथा उन्हें एवं उनकी प्रतिभा को उपयुक्त रीति से उपयोग में लाने की समाज की क्षमता के बीच की असमानता ;

प्रगति से संस्कृति का मेल बैठाने की किंकर्तव्यविमूढ़ता।

'नये कार्यक्रम'* के स्थानीय सहधर्मी के नाते १९३० के आसपास

*'नया कार्यक्रम' (New Deal) : रूजवेल्ट-प्रशासन द्वारा १९३२ व बाद के वर्षों में क्रियान्वित किया गया सामाजिक व आर्थिक सुधार कार्यक्रम।

के वर्षों में 'पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन' की उपलब्धियाँ जो भी रही हों, परन्तु आरम्भ से ही इस प्रशासन ने ऐसी सरकार द्वारा जिसका स्थानीय समस्याओं से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं था 'अनुग्रहपूर्वक' बनाकर दी गई उस कठोर योजना की प्रभावहीनता सामने ला दी। इस प्रकार एक दशक पूर्व पुर्टोरिको ने यह पाठ,—जो अब वास्तविक बन गया है,—पढ़ा कि यदि किसी भी प्रकार के खतरे से, चाहे वह साम्यवाद का सशस्त्र आक्रमण हो अथवा गरीबी और रोग का सामाजिक अभिशाप, जनता को बचाना है, तो अंतिम विश्लेषण के नाते उनका बचाव उनकी ही, स्वशक्ति, गौरव और उत्तरदायित्व की भावना के माध्यम से किया जा सकता है। यदि बाहरी व्यक्तियों को सहायक होना है तो उनकी सहायता को 'मैत्रीपूर्ण, एवं बाधा-उपस्थित-न-करने-वाली', सहायता का स्वरूप ग्रहण करना होगा।

पुर्टोरिको में सहकारिता-आन्दोलन की आरम्भिक असफलताओं ने दर्शाया कि वास्तव में जनता के अनुकूल मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्कार एक तीव्र समस्या को हल करने के, यों तर्क-संगत तरीकों की सफलता हेतु, कितने अनिवार्य हैं। स्वेच्छा से सामूहिक खेती का कठोर अनुशासन जब अस्वीकार्य सिद्ध हुआ, पुर्टोरिको सरकार ने बुद्धिमानीपूर्वक अपना ध्यान अन्य विकास-कार्यों की ओर लगा दिया।

मुनोज मारिन का कथन है कि: 'न तो हम सिद्धान्तवादी हैं और न रूढ़िवादी। हम तो केवल यथार्थवादी हैं।' शासता का स्वरूप ऐसा होता है, जिसे प्रत्येक अविकसित देश अभ्यास और गलतियों द्वारा; अपने आप ही सीखता है। हर देश अपने गलत आरम्भों और अपनी ध्वस्त-आशाओं के पेचीदे जाल में उलझता है। यदि वह, इन सब पर, पुर्टोरिको द्वारा खोजे गये लचीले तथा व्यावहारिक तरीकों से विजय प्राप्त कर ले, तो वह दूसरा अनिवार्य पाठ भी सीख लेगा।

संस्कृति और शिक्षा जगत में किये गये सुधार, प्राचीन पुर्टोरिको परम्पराओं से, पृथकत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं और उस परम्परा से उनका ताल-मेल बैठाना एक जटिल विषय है। इस सम्बन्ध में लेखक के मत, उनके अपने ही हैं; परन्तु कोई भी उन प्रश्नों के महत्व पर जो उन्होंने उठाये हैं, अधिक बल नहीं दे सकता।

तीन अविकसित महाद्वीपों के देशों के पर्यवेक्षक जब पुर्टोरिको जाते हैं, उनके लिए वहाँ देखने समझने को बहुत कुछ है। वे वहाँ 'जल-साधन अभिशक्ति' (पुर्टोरिको की नन्हीं तेनसी घाटी अभिशक्ति), 'परिवहन अभिशक्ति,' 'आवास अभिशक्ति' और सामाजिक कार्यक्रम प्रशासन के कार्य संचालन, एवं अन्य एजेन्सियों की गतिविधियों को सूत्रबद्ध करने के आयोजना मंडल के प्रयत्नों को देखना चाहेंगे। वे विकास कम्पनी और विकास बैंक के इतिहास का अध्ययन करेंगे वे 'भूमि अभिशक्ति' तथा 'आनुपातिक लाभ' वाले कृषि-क्षेत्रों के काम-काज की जानकारी प्राप्त करेंगे। वे पायेंगे कि आर्थिक विकास प्रशासन में सरकार को अतिशय-उत्पादक गवेषणा से कोई भय नहीं है। निजी कारोबार को प्रोत्साहन देने हेतु पुर्टोरिको में अल्प, अस्थायी समाजवाद की उपयोगिता को वे ठीक समझेंगे, जैसा कि एक बार सिनेटर टाफ्ट ने समझा था। वे बाहरी पूँजी को आकर्षित करने एवं उसे सामाजिक दृष्टि से उत्तरदायी बनाने के सरकारी तौर-तरीकों का अध्ययन करेंगे।

यह सब करते हुए वे, जन-चिकित्सा व्यवस्था के थोड़े से ही वर्ष में, मलेरिया को समाप्त कर देने, तपेदिक में भारी कमी कर देने, और जीवन-संभावना को विस्मयजनक रूप से बढ़ा देने वाली जनता की विलक्षण प्रगति को समझने लगेंगे। वित्तीय-मामले, वैज्ञानिक कृषि और शक्ति-योजनाओं से लगा कर आवास, ग्राम नियोजन और जन-निर्माण-कार्यों तक के व्यापक क्षेत्र में नये

तौर-तरीके खोजने में प्राप्त उपलब्धियों की मात्रा का वे सम्मान करेंगे। उन्हें यह ज्ञात होगा कि किस प्रकार पुर्टोरिको प्रति सप्ताह एक नये कारखाने का उद्घाटन कर रहा है और किस प्रकार थोड़े से वर्षों में प्रति व्यक्ति आय बढ़ कर दुगनी हो गयी है।

वे उस जनता की भावनाओं की प्रशंसा करने लगेंगे, जिसने अपने सम्पूर्ण व्यय का एक तिहाई भाग—व्यावसायिक प्रशिक्षण से लगा कर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए चलते-फिरते पुस्तकालयों तक के एक दूरदर्शितापूर्ण शिक्षा-कार्यक्रम पर लगाया है। विश्वव्यापी चार-सूत्रीय विकास कार्यक्रम में पुर्टोरिको अपने सार्वजनिक कोष से जो वार्षिक योग प्रदान कर रहा है, उस योग में निहित गौरवपूर्ण बलिदान-भावना का वे आदर करेंगे। और उन्हें ऐसे कार्यक्रम की प्रेरणा मिलेगी, जो प्रजातांत्रिक और अपनत्व की भावनायुक्त संस्कृति को पुष्ट बनाते हुए भी, यही सब कुछ कर सकता है।

यही कारण है कि अमेरिका को, पुर्टोरिको के 'अभ्युदय अभियान' में दिये गये उसके अपने, हाल के और विचारवान सहयोग के प्रति विशेष गौरव अनुभव करना चाहिए। यही कारण है कि अविकसित क्षेत्रों की सामान्य समस्याओं के प्रति अमेरिकी मनोवृत्ति की इस कसौटी को, यदि हम चाहते हैं तो, अन्यत्र भी इतने ही ओज के साथ जारी रखा जाना चाहिए।

विशेष सफलताओं के इस दृष्टान्त द्वारा दिये गये सुअवसर का हम अधिकाधिक लाभ उठावें। इस दृष्टान्त में आचरण और नीति के वे तत्व विद्यमान हैं जो हमें, उनके अभावों से ग्रस्त संसार को चुकाना है।

—×—

अध्याय १

परिवर्तन

एक छोटे से समाज ने अपनी उपनिवेशवादिता की तन्द्रा और संताप उतार फेंका और अपना नया रूप संवारना आरम्भ दिया। इस प्रकार उसने किसी "यूटोपिया" (स्वप्न-संसार) का सृजन नहीं किया। सदा सर्वदा के लिए, उसने एक भी मानवीय समस्या का हल उस अंतिम अर्थ में नहीं किया, जो अर्थशास्त्रियों को अतिप्रिय है और जिसकी वे बहुधा माँग करते रहते हैं, परन्तु जो मानव द्वारा कभी उपलब्ध नहीं किया जा सकता। उसकी सफलतायें वास्तविक दुनिया में वास्तविक संघर्षरत एवं आशंकायुक्त जन की सफलताएँ थीं। किसी भी दृष्टि से ये सफलताएँ उल्लेखनीय कही जा सकतीं हैं।

उस चुनाव में, जो एक राजनीतिक-विस्फोट के समान था, मानव शक्तियों सृजनात्मक उद्देश्यों के लिए फूट पड़ीं। बाद के वर्षों, में परीक्षा, गलती, खोज, भूल-चूक और प्रासंगिक-सफलताओं की जटिल प्रक्रिया के बीच से ये शक्तियाँ पर्याप्त रूप से संयुक्त हो कर सामने आयीं और एक सुखद जीवन के लिए उन्हें ठोस प्रवाह प्रदान किया जा सका। जीवन-यापन के स्तर, और उसके साथ भावी पीढ़ी के लिए आशायें उन्नत होने लगीं। कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन की मात्रा बढ़ने लगी। शिक्षा ने, जिसमें जनता की आवश्यकता पूर्ति हेतु विशेष ध्यान दिया गया, एक अविच्छेद्य अधिकार का स्थान ग्रहण कर लिया। शारीरिक स्वास्थ्य एवं जीवन-सम्भावनाओं में इतना आश्चर्यपूर्ण सुधार हुआ कि इस ओर, संसार का ध्यान आकर्षित

होने लगा। उपनिवेशवाद, जो समाज पर आच्छादित राजनैतिक आवरण था, समाप्त कर दिया गया, आर्थिक-शक्ति के रूप में उसमें भारी सुधार कर लिया गया और मनोवृत्ति के रूप में उसे पूर्णतया नष्ट कर दिया गया। प्रजातन्त्र एक व्यावहारिक वास्तविकता के रूप में अपना स्थान ग्रहण करने लगी।

वह छोटा सा समाज आज का पुर्टोरिको है। उसकी पीड़ा, विस्फोट, एवं वर्तमान प्रयत्नों की कहानी इस पुस्तक का वस्तु-विषय है। यह एक महत्वपूर्ण कहानी है जिससे, और भी अधिक भली-भाँति अवगत होना चाहिए—चाहे मात्र इसीलिये ही कि वह विश्व इतिहास के एक ऐसे समय में जबकि अमेरिका पर व्यापक एवं वैमनस्यपूर्ण प्रहार हो रहे हैं, अमेरिका को महान श्रेय एवं सम्मान प्रदान करती है।

बीस लाख से भी अधिक जनता अयनवृत्तीय जलवायु वाले एक सौ मील लम्बे और पैंतीस मील चौड़े इस द्वीप पर और कुछ समीपस्थ द्वीपों पर निवास करती है। उनकी जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील ६५० है। कृषि प्रधान समाज की दृष्टि से यह क्षेत्र संसार के अति घने बसे क्षेत्रों में से एक है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर ऊँची है और जनसंख्या भयावह गति से बढ़ती है। आधुनिक युग का उदय होने के पूर्व, १६४० में, यह जनता अपनी अति कठिन समस्याओं को हल करने में अपेक्षाकृत असहाय थी, कम से कम वह अपने को असहाय अनुभव करती थी और अर्थ तो इसका भी वही होता है। इन लोगों में से अधिकांश जीवन भर पोषकतत्वों के अभाव से पीड़ित रहे हैं। इनमें से बहुतों के पास भूख, बीमारियाँ, गरीबी और उनके दयनीय निवास थे और साथ उनका आशा रहित भाग्यवाद था।

और तब, १६४० में, उन्होंने एक नेता चुना, जिसने उन्हें सुखद जीवन की दिशा में लम्बे, कठिनाइयों भरे और कभी-कभी संकटपूर्ण

दुर्गम मार्ग पर केवल पथ-प्रदर्शन करने का वचन दिया। उस चुनाव के साथ पुर्टोरिको के निवासियों ने अपने मामले अपने हाथ में लेने, अपनी आकांक्षाएँ बनाने एवं उन्हें पूर्ण करने, अपना भाग्य संवारने के अपने संकल्प की अभिव्यक्ति की।

पुर्टोरिको में साधारण यात्री की दृष्टि, १९४० के बाद से हुये विशाल प्रगति के बाह्य लक्षणों पर नहीं भी पड़ सकती है, क्योंकि तुलना के लिये उसके पास कोई आरम्भिक बिन्दु नहीं रह गया है। उसे थोड़े से शानदार होटल, थोड़े से उतने ही शानदार मकान, कुछ पक्की सड़कें, चित्ताकर्षक दृश्यावलि, कुछ थोड़े से विशाल आवास कार्यक्रम, और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की घिनौनी गंदी बस्तियाँ, जो अंधेरे-युग के दिनों से चली आ रही हैं और उन्हें आज तक भी पूर्णतया समाप्त नहीं किया जा सकता है, दिखलाई देंगी। सम्भावना यह है कि वे सेवाभावी और स्फूर्तिवान अधिकारी उसे नहीं दिखलाई देंगे जो दिन-रात कार्य करते हैं और उन समस्याओं का पीछा नहीं छोड़ते, जो उनका अपना अस्तित्व बन गई हैं। हो सकता है कि पहाड़ियों एवं तटवर्ती मैदानों में, स्वयं अपनी समस्याओं पर और उन समस्याओं को सामुदायिक-प्रयत्नों से हल करने के तरीकों पर विचार विमर्श करते हुये लोगों पर संयोगवश उसकी नजर शायद नहीं पड़े। किन्तु यदि वह एक दशक पूर्व के इस द्वीप को देख चुका था और लौटकर आज वहाँ आया है, तब दृष्टिगोचर होने वाले परिवर्तनों को देखकर एवं उनसे भी अधिक आने वाले परिवर्तनों का आभास पाकर उसमें केवल हर्ष का भाव ही उदित होगा।

बीस वर्ष पूर्व इस द्वीप का परिचय रखने वाला कोई भी व्यक्ति, जब आज उसे देखता है, तब जिस किसी ने भी पहले लुकिवलो जैसे नगरों को नष्ट होते, उनके विशाल चौकों में जङ्गल उठते, उनकी सड़कें ऊबड़-खाबड़ होते और उनके मकान ढहते देखा है और वह जब आज उन्हें नवनिर्मित, रंगे-पुते, मरम्मत किये हुये, पक्की सड़कों

से युक्त और उनमें सुनियोजित ढंग पर बने भवनों को देखता है, तब जिस किसी ने भी उनके ग्रामीण-क्षेत्रों की सड़कों पर यात्रा की हो और उन पर मनुष्यों को अपनी शक्तिहीनता के कारण रेंगते देखा हो और वह जब आज उन्हें मैत्रीभाव एवं शक्ति से ओतप्रोत और कभी-कभी अपनी सरकार की उस नौकरशाही की, जो उस प्रगति में बाधक होती प्रतीत हो रही है जो बीस वर्ष पूर्व विद्यमान नहीं थी, स्वस्थ्य आलोचना करता दीख पड़ता है : कोई भी व्यक्ति जो निकट के भूतकाल से वर्तमान के विश्लेषणात्मक विवरण की तुलना करता है, उनके उत्पादन आय-व्यय, शिक्षा, जन स्वास्थ्य एवं चुनाव, जो कि राजनैतिक भाषा में जनता की आकांक्षा व्यक्त करता है, सम्बन्धी आंकड़ों, तालिकाओं, रेखा-चित्रों व टिप्पणियों का अध्ययन करता है, तुरन्त जान जाता है कि वह एक नये पुर्टोरिको को देख रहा है, ऐसे पुर्टोरिको को जिसके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि उसने कोलम्बस के उस भूमि पर कदम रखने से बाद की शताब्दियों से कहीं अधिक प्रगति १६४० के बाद के वर्षों में की है।

१६४० के बाद से, अन्य बातों के साथ ही :

- पुर्टोरिको ने अपने विद्युत-जाल का भारी विस्तार कर लिया है और रोजगार प्रदान करने एवं अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ एवं अनुरूप बनाने के लिए औद्योगीकरण का एक उल्लेखनीय कार्यक्रम आरंभ किया है।

- पुर्टोरिको ने अपने कृषि-उद्योग में विविधरूपता लाने की, उसके आधुनिकीकरण की तथा समविष्ट उत्पादन करने की दिशा में भारी कार्य किया है।

- पुर्टोरिको ने क्रमशक्ति के अर्थों में अपनी प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय दुगनी कर ली है और द्वीप के समस्त निवासियों में इस आय को अधिक अच्छी तरह से वितरित करने में भी सफलता भी प्राप्त की है।

●पुर्टोरिको ने इस गोलार्द्ध में एक सर्वोत्तम जन-स्वास्थ्य सेवा की रचना की है अपनी मृत्यु दर घटा कर इतनी कम कर दी है कि उसकी तुलना महाद्वीपीय अमेरिका की दर से की जा सकती है।

●पुर्टोरिको ने अपनी शिक्षा-व्यवस्था का विस्तार किया है और उसे आधुनिक-आवश्यकताओं के अनुरूप स्वरूप प्रदान करने हेतु सशक्त एवं प्रभावपूर्ण कदम उठाये हैं।

●पुर्टोरिको ने उस महान गति-वेग का पुर्टोरिको के समस्त वर्गों में उस सीमा तक संचार किया है कि आज हजारों व्यक्ति 'असैनिक रोजगार' में लगे हुए हैं और जो अपना जीवन-स्तर सुधारने के लिए हर बात की अपेक्षा अपनी सरकार से करने के बजाय उस ओर स्वयं अपना मन-मस्तिष्क और श्रम लगाये हुए हैं।

●पुर्टोरिको ने ऐसी सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का निर्माण किया है जिनमें उसकी पिछली "विस्फोटक जन्म-दर बढ़ने से रुक गयी है, और तेजी से कम होती जा रही है, और इस प्रकार समाज को उस स्थिति के निकटतर लाती जा रही है जब कि जन संख्या अंत में उत्पादन बढ़ाने से संतुलित होगी।

●पुर्टोरिको ने अपना भूतकालीन औपनिवेशिक दर्जा समाप्त कर दिया है और राजनैतिक संबंधों के नये स्वरूप की रचना की है जिसमें आज वह अमेरिका के क्षेत्र में और उसकी व्यापक स्वाधीनता में भागीदार, एक 'स्वतंत्र' देश है।

●इतने प्रभावकारी और अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यक्रम का संचालन वास्तव में बगैर विरोध के नहीं किया जा सकता था। पुर्टोरिको में आश्चर्य विरोध के विद्यमान होने पर नहीं वरन् उसके कमजोर होने पर है।

●पुर्टोरिको के वर्तमान अभ्युदय का एक सन्तोषप्रद प्रासंगिक परिणाम अमेरिका के साथ सम्बद्धता की एक नवीन एवं आवश्यक भावना है। जैसा कि पहले कभी नहीं था, अब पुर्टोरिको की बहुमत

जनता अपनी अमेरिकी नागरिकता में और महान अमेरिकी-संघ की सदस्यता के अपने दर्जे में गौरव का अनुभव करती है और उसे व्यक्त करती है। अपेक्षाकृत बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अभी-अभी अमेरिका से पृथक्, स्वतन्त्रता की बात करते हैं। इनमें से अधिकाँश राजनीतिक दृष्टि से अपने को 'इन्डिपेन्डेन्टिसटाज', अर्थात स्वतन्त्रता पार्टी का सदस्य कहते हैं, उन्हें मत अल्प संख्या में मिलते हैं और यदि वे चुनते भी हैं, तो बहुत ही थोड़े से पदाधिकारी। इस पार्टी के नेता शांतिपूर्ण साधनों से और अमेरिका के प्रति उचित मैत्री-भाव के साथ सार्वभौमत्व प्राप्त करने की आशा रखते हैं। थोड़े से, मुट्ठी भर लोग, जो अपने आपको राष्ट्रवादी कहते हैं, अमेरिका के प्रति विषाक्त घृणा व्यक्त करते हैं, स्वतन्त्रता नामक भाववाचक शब्द के अंध-भक्त हैं, और रक्तपात तथा आतङ्कवाद की *भाषा में अपना अस्तित्व प्रमाणित करते हैं।* वे प्रकाश में आये तब जब १ नवम्बर १६५० को उनमें से दो व्यक्तियों ने प्रेसिडेन्ट ट्रूमैन की हत्या का यत्न किया और पुनः १ मार्च १६५४ को, उन में से चार व्यक्तियों ने, उसी दिन से केराकास में आरम्भ हुए १० वें अंतर-अमेरिकन सम्मेलन में अमेरिका को कठिनाई में डालने के उद्देश्य से हाउस आफ रिप्रिसेन्टेटिव्ह पर गोलियाँ बरसायीं। उनके उद्देश्य और तरीकों की साम्यवादी-क्षेत्रों और कुछ दक्षिण अमेरिकी देशों, में एक सीमा तक प्रशंसा की जाती है। परन्तु वे किसी भी अर्थ में पुर्टोरिको की जनता के एक नगण्य अंश से अधिक के विचारों एवं आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

× × ×

स्वयं पुर्टोरिको की जनता द्वारा चुने जाने वाले पहले गवर्नर हैं: श्री लुइस मुनोज मारिन। १६४८ में उनके प्रथम निर्वाचन के पूर्व और पश्चात् हुये राजनैतिक-परिवर्तन, विश्व-व्यापी परिवर्तनों के अङ्ग थे। वे परिवर्तन फिलिपीन्स, भारत और इन्दोनीसिया को दी

गई युद्धोत्तर स्वतन्त्रता एवं श्री लंका को दिये गये साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य से मेल खाते हैं ।

२ जनवरी १६४६ को अपने प्रथम उद्घाटन भाषण में श्री मुनोज ने कहा 'औपनिवेशिक व्यवस्था पुर्टोरिको से न केवल समाप्त ही होने जा रही है, वरन् वह अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ अधिक तेजी से लुप्त हो रही है । ऐसा किस उपनिवेश में, ससार के किस भाग में अथवा किस समय में घटित हुआ है ? अपनी जनता के स्वतन्त्र मतों से, स्वयं अपने विधानानुरूप एवं कार्यकारी शासन का अब और किस उपनिवेश ने निर्वाचन किया है ? अमेरिका की एवं विशेषकर उसके प्रेसिडेंट एवं कांग्रेस की उच्चतम प्रशंसा, केवल उनके अतुलनीय आचरण के प्रति आदर- भाव व्यक्त करके ही, की जा सकती है । पुर्टोरिको में औपनिवेशिक व्यवस्था के चिन्ह अभी भी शेष हैं, किन्तु यह स्पष्ट है कि इस समाज में उपनिवेशवाद की जड़ें तेजी से खोदी जा रही हैं ।'

वह उद्घाटन समारोह, जिसमें उन्होंने उपरोक्त शब्द कहे, निःसन्देह पुर्टोरिको के इतिहास में महानतम समारोह, सर्वाधिक उल्लासपूर्ण अवसर एवं मानवीय भावनाओं का प्रासंगिक प्रवाह था। २५ जुलाई १६५२ को मैं उस दूसरे समारोह में सम्मिलित हुआ जिसने इस द्वीप के औपनिवेशिक दर्जे पर अन्तिम रूप से पटाक्षेप किया और जिस दिन कि अमेरिकी-संघ के स्वशासित सदस्य के रूप में पुर्टोरिको के नवीन 'कामनवैल्थ' का उदय हुआ । इस बीच की अवधि में अमेरिका की काँग्रेस ने अपना सार्वजनिक-कानून-६०० पारित कर दिया था, जिसके द्वारा पुर्टोरिको की जनता को अपना संविधान बनाने का अधिकार दिया गया था । संघीय विधि विधान में अपूर्व यह कानून पुर्टोरिको और अमेरिका के मध्य एकता की आधारशिला के समान था। पुर्टोरिको की जनता की स्वीकृति के बिना यह कानून प्रभावशील नहीं होता ; यदि वह अस्वीकार कर दे, तो सार्वजनिक

कानून ६०० की मृत्यु हो जाती। पुर्टोरिको ने उसे स्वीकार करने हेतु जनमत संग्रह और साथ ही संविधान-सम्मेलन के लिए सदस्यों का चुनाव किया। इस संविधान सम्मेलन ने संविधान का प्रारूप तैयार किया। पुर्टोरिको की जनता ने यह संविधान स्वीकारा और कॉंग्रेस ने, एक या दो मामूली परिवर्तनों के साथ, जो पुर्टोरिको के संविधान-सम्मेलन द्वारा अङ्गीकार कर लिये गये, जुलाई १९५२ के आरंभ में उसकी पुष्टी कर दी।

इस घटनाक्रम ने पहले के एक शासक और दूसरे उपनिवेश के बीच स्वतंत्रतापूर्वक एवं दोनों पक्षों की सहमति से स्थापित एकता को जन्म दिया। इस एकता के अन्तर्गत पुर्टोरिको का कामनवैल्थ आज अमेरिकी नागरिकों के, अमेरिकी-संघ का, एक स्वशासित हर अर्थों में महान् अमेरिकी अर्थ व्यवस्था का, सदस्य है। कामनवैल्थ रचना की सम्पूर्ण क्रान्तिकारी प्रक्रिया के दौरान कॉंग्रेस द्वारा प्रदर्शित प्रजातांत्रिक निष्पक्षता के, मुट्ठी भर विक्षिप्त राष्ट्रवादियों, अंध-राष्ट्रवादियों को छोड़ लगभग सभी पुर्टोरिकी हार्दिक प्रशंसक हैं।

यह नया दर्जा २५ जुलाई १९५२ के दिन अविकृत रूप से प्रभावशील हुआ। यह दिन संविधान दिवस के रूप में चुना गया क्योंकि यही वह दिन भी था जब स्पेन अमेरिका युद्ध में जनरल मिलेस अपने बल के साथ पुर्टोरिको की भूमि पर उतरे थे। समूचे दक्षिण अमेरिका में, जो अमेरिकी ध्वज के अन्तर्गत जाने वाले पश्चिमी गोलाई के अन्तिम भूतिपूर्व स्पेन अधिकृत क्षेत्र के रूप में पुर्टोरिको के विशिष्ठ दर्जे से भी भली-भाँति परिचित था, इस घटना ने बहुत अटकलों से पूर्ण दिलचस्पी को जन्म दिया। इसका एक कारण था कि मुनोज ने इस अवसर का उपयोग उस कृतज्ञताज्ञापन के लिए किया जिसे वे पुर्टोरिको द्वारा अमेरिका के प्रति कर्तव्य रूप से आवश्यक समझते थे। अपने साथी-कार्यकर्त्ताओं से, जो समारोह के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ कर रहे थे, आपने कहा:

अमेरिका और दक्षिण अमेरिका से कई सौ सम्मानित अतिथियों को आमंत्रित किया जाय, विशेष कर दक्षिण अमेरिका से। उन्हें टेलीफोन और समुद्री तार द्वारा निमन्त्रण भेजे जाँय। यदि आवश्यक हो तो उन्हें लाने हेतु विशेष वायुयानों का प्रबन्ध किया जाय। प्रमुख राजनीतिक नेताओं एवं पत्रकारों को आमंत्रित किया जाय। दक्षिण अमेरिका से अमेरिका के कुछ जाने-माने शत्रुओं को भी, यदि वे आ सकें, सम्मिलित किया जाय। हमें उन्हें अमेरिका का वह चित्र उनके सामने रखना है जो उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा होगा। दक्षिण अमेरिकी होने के नाते वाशिंगटन के प्रति हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम समस्त महाद्वीप में अमेरिका की प्रतिष्ठा बढ़ाने में कोई यत्न शेष न रखें।

अमेरिका के सम्बन्ध में—'उत्तर के भीम-पुरुष,' यांकी (अमेरिकी) साम्राज्यवादी और डालर-वादी कूटनीतिज्ञ, जो पुर्टोरिको के प्रति किये जा रहे अपने व्यवहार से समस्त दक्षिण अमेरिका के प्रति अपनी कुख्यात दुर्भावनाओं का प्रदर्शन कर रहा है, के रूप में दक्षिण अमेरिका में प्रचलित अनेक धारणाओं को परिवर्तित करने हेतु मुनोज ने दक्षिण अमेरिकी अतिथियों को अलग ले जाकर वार्ताएं कीं।

मैंने उनसे पूछा कि आपने क्या कहा था ? उन्होंने उत्तर दिया : "मैंने केवल हमारी अपनी कहानी सुनाई। हमारे औपनिवेशिक-संताप और, १९४० से, उपनिवेशवाद एवं उसके समस्त मानसिक एवं आर्थिक दोषों के उन्मूलन के हमारे सफल सङ्कल्प के बारे में मैंने उन्हें बतलाया। मैंने उन्हें घटनाक्रम व कांग्रेस की निष्पक्षता की जानकारी दी, जिसके परिणामस्वरूप हमें वर्तमान कामनवेल्थ का दर्जा मिला। मैंने बतलाया कि किस प्रकार यह व्यवस्था साम्राज्यवाद के लेशमात्र दुष्प्रभाव के बिना हमारे आर्थिक एवं साथ ही सांस्कृतिक सम्बन्धों के, अनुरूप है। मैंने उन्हें गत दशक में प्राप्त हमारी महान

 4958

आर्थिक एवं आर्थिक उपलब्धियों की बात बतलाई एवं उन्हें आमंत्रित किया कि वे द्वीप में जहाँ भी चाहें, जाकर, स्वयं उस प्रगति के लक्षण देख सकते हैं। वे सभी जानते थे कि हम दक्षिण अमेरिकी हैं और संस्कृति से दक्षिण-अमेरिकी ही रहे हैं। मुझे उनसे कोई सौदा नहीं करना पड़ा। मैंने उन्हें पुर्टोरिको का अवलोकन कर, हमारे और अमेरिका के बारे में अपना निष्कर्ष निकालने दिया।

न केवल दक्षिण अमेरिकी राष्ट्र ही, वरन् असाम्यवादी दुनिया के समस्त 'अविकसित' प्रदेश, पुर्टोरिको के आधुनिक प्रयत्नों के स्वभाव एवं उनके गहरे अर्थ को यथार्थ रूप में समझते जा रहे हैं। यह सुव्यवस्थिता एवं सजगतापूर्वक, विश्वव्यापी चार-सूत्रीय कार्यक्रम में, कामनवेल्थ के सक्रिय एवं स्वेच्छया योग का यह परिणाम है। वह वार्तालाप ही जो गवर्नर मुनोज मारिन एवं प्रेसिडेन्ट ट्रूमेन ट्रूमेन के मध्य इस सहयोग की व्यवस्था हेतु १९४९ में हुआ, पुर्टोरिको के मामले में अपूर्व था।

प्रेसिडेन्ट ट्रूमेन का कार्यकाल आरम्भ होने के तुरन्त बाद जब गवर्नर मुनोज उनसे मिले तब के दोनों के बीच हुए वार्तालाप का कोई लिखित विवरण नहीं है। फिर भी सामान्यतया वह निम्न प्रकार था।

प्रेसिडेन्ट ने कहा : "मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

'कुछ नहीं', पुर्टोरिको के गवर्नर का उत्तर था। उन्होंने प्रेसिडेन्ट से कहा गत दस वर्षों में हम 'पश्चाताप' की स्थिति से निकल कर 'सन्नद्धता' की स्थिति में आ गये हैं। हमने वे कार्य हाथ में ले लिये हैं जिन्हें करने का आह्वान आपने चार-सूत्रीय कार्यक्रम में किया है। हमने उन कार्यों को करने की रीति-नीति खोज निकाली है और हम अपनी बुनियादी समस्याओं को हल करने की दिशा में भली भाँति प्रगति कर रहे हैं। काम काज की अमेरिकी योजना की परिधि में हमने अपने प्रजातन्त्र को अपार रूप से सुदृढ़ और व्यापक भी बना

लिया है। अब हम आपको चार सूत्रीय कार्यक्रम के क्रियान्वय में हर सम्भव सहयोग देना चाहते हैं।'

आपने स्पष्ट किया : 'हमारा विश्वास है कि तथा-कथित अविकसित क्षेत्रों एवं उनकी जनता को हम कुछ सीख दे सकते हैं। यदि आप हमारे यहाँ उनके प्रतिनिधि एवं आपके यांत्रिक भेजें, हम अपने गत दस वर्षों के अनुभवस्वरूप उन्हें, सहर्ष, अपनी शक्ति भर, अपना काम दिखलावेंगे और उन्हें सिखलावेंगे। हमारा विश्वास है कि इस प्रकार हम संसार भर में अमेरिका की सद्-प्रतिष्ठा को मजबूत बनाने में भी सहायक हो सकेंगे, क्योंकि हमने जो कुछ किया है और हम जो कुछ कर रहे हैं, वह एक बहुत बड़ी सीमा तक अमेरिकी निष्पक्षता, सहयोग एवं प्रजातन्त्र का ही परिणाम है।

मुनोज सेनजुआन लौटे और उन्होंने अपने विधानमंडल के सदस्यों से चर्चा की। चार सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत थोड़े से अंश को वास्तविकता प्रदान करने वाला कानून अमेरिकी कांग्रेस द्वारा स्वीकार किये जाने के पूर्व ही, अपर्याप्त साधनों से स्वयं अपनी समस्याओं को हल करने हेतु संघर्षरत, और संघ के दरिद्रतम राज्य से भी दरिद्र, नन्हा पुर्टोरिको, राष्ट्र को उसके विश्वव्यापी कार्यक्रम में सहायता देने हेतु ५०,००० डालरों का विनियोग कर चुका था। किसी भी राज्य ने अमेरिकी-संघ के किसी भी अन्य भाग ने चार-सूत्रीय कार्यक्रम को वित्तीय सहयोग नहीं दिया था। १९५० से, प्रति वर्ष हमारे इस भूतपूर्व उपनिवेश ने, इस हेतु ३५,००० डालर की राशि प्रदान की है और आगामी छः वर्षों के लिये भी ऐसी ही व्यवस्था योजित की गयी है।

सेनजुआन और वाशिङ्गटन में उपयुक्त शासकीय व्यवस्था की स्थापना की गयी। न केवल अमेरिकी यांत्रिक ही वरन् लौह-आवरण के इधर के प्रजातंत्रिक पक्ष के समस्त अविकसित देशों के अधिकृत अभ्यागत भी नये सरकारी कार्यक्रम के अन्तर्गत इस द्वीप में आने

लगे। यह क्रम दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। ये लोग कुछ दिन, कुछ सप्ताह, माह या एक आध वर्ष इस द्वीप में बिताते हैं। वे विभिन्न कार्यक्रमों का निरीक्षण करते हैं, नेताओं से वार्तालाप करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, और मूल्यवान विचारों का लाभ उठाते हैं। इनमें से कुछ पुर्टोरिको प्रदत्त छात्रवृत्तियों पर वहाँ जाते हैं, और वैज्ञानिक खेती, सामाजिक कार्यक्रम, और आवास-व्यवस्था के माध्यम से जन-कार्य नियोजन से लगाकर मुद्रण एवं स्वचालित यंत्रों तक के व्यापक-क्षेत्रों वाले काम-धन्धों की कुशलता में बहुमूल्य प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इस पुस्तक के लिखने के समय तक, लगभग एक हजार विदेशी अभ्यागत और छात्र या तो वाशिङ्गटन द्वारा पुर्टोरिको भेजे गये अथवा स्वयं इस द्वीप द्वारा सीधे आकृष्ट होकर आये।

इन नर-नारियों ने, एक दशक पूर्व की 'अमेरिका पोषित गंदगी' से एक अंतर्राष्ट्रीय मेलजोल को जन्म दिया। इस द्वीप के उन्नतिशील चक्र का विस्तार दुनिया के अन्य हिस्सों में करने के लिये इनमें से बहुतों ने पुर्टोरिकी विचारों एवं तौर-तरीकों को तथा स्वयं पुर्टोरिकियों को भी अंगीकार किया है। शिक्षा, जन-स्वास्थ्य, आवास, वित्त जैसे क्षेत्रों में पुर्टोरिको के नवीन प्रवर्तन एवं आविष्कार भारत और पाकिस्तान, इन्दोनीसिया और पश्चिमी अफ्रिका में प्रगट होने लगे हैं।

कोरिया-युद्ध ने पुर्टोरिको के परिवर्तन का एक पहलू, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण भी है, न केवल अमेरिका के ही समक्ष, वरन् समूची असाम्यवादी दुनिया के समक्ष स्पष्ट किया।

द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान पुर्टोरिकी सैनिकों ने विभिन्न मोर्चों पर लड़ाइयाँ लड़ीं थीं और स्पष्ट रूप से उन्होंने उच्चता प्रमाणित की थी। तथापि कोरिया-युद्ध आरम्भ होने के समय ही इस द्वीप के सैनिक-इतिहास का विकास, इस अर्थ में आरम्भ हुआ कि

पुर्टोरिकी सैनिकों ने, स्वयं अपनी पुर्टोरिकी यूनिटों में ही, सैनिक घटनाओं में उल्लेखनीय योग दिया।

इस युद्ध के दूसरे महीने से १९५३ के अंत तक पुर्टोरिकी पैदल सेना की ६५वीं रेजिमेंट एक यूनिट के रूप में, जो पूर्णतया पुर्टोरिकी थी, कोरिया युद्ध के घमासान में रही। युद्ध के खराब से खराब समय में उसने अमेरिका की मेरीनकोर को पीछे हटने हेतु आवरण प्रदान किया और साम्यवादियों को तब तक रोके रखा जब तक कि मेरीनकोर ने अपनी नई चौकियाँ स्थापित नहीं कर लीं। राष्ट्रसंघीय सैन्य में यही एक मात्र यूनिट थी जिसके एक-एक हताहत का स्थान स्वयंसेवक ग्रहण करते थे, ऐसे अनेक लड़ाई पर बुलाये जाने के लिये अपने घरों में इन्तजार करते होते थे। उसकी हताहत संख्या राष्ट्रसंघीय पक्ष की अन्य किसी भी यूनिट की हताहत संख्या से अधिक रही। बहुत बार इस यूनिट का नाम चमका।

कोरिया स्थित अपने सैनिकों के प्रति इस द्वीप के निवासियों द्वारा प्रदर्शित अगाध गौरव की भावना का हममें से उन लोगों पर, जो १९५१ व १९५२ में पुर्टोरिको में थे, प्रभाव पड़ा।

स्वाभाविक ही था कि यह सांस्कृतिक जगत की एक नवीन घटना थी। कारण कुछ भी क्यों न हो, तथ्य यह था कि जैसे ही पुर्टोरिको ने आगे बढ़ने का और नये जीवन से पूर्ण नये समाज की रचना का अधिकार प्राप्त किया, जैसे ही पुर्टोरिकियों ने, 'उपनिवेशी अमेरिकी नागरिकता' से उठकर अपना वर्तमान दर्जा प्राप्त किया, उन्होंने विद्यमान विश्व-संघर्ष में हमारे पक्ष के प्रति पागल का सा लगाव और निष्ठा भी प्रदर्शित की।

आधुनिक पुर्टोरिको के प्रयत्न अधिकांशतया लुइस मुनोज मारिन के प्रयत्न हैं। आधुनिक पुर्टोरिको का इतिहास लुइस मुनोज का, उनके आरम्भिक संघर्ष, उनकी असफलताओं एवं पराजयों, एवं निर्विवाद नेतृत्व तक के, उनके अन्तिम विजयपूर्ण उत्थान का,

इतिहास है। ये दोनों (इतिहास) अविभाज्य हैं। मुनोज को समझे बिना पुटोरिको को समझना सम्भव नहीं है।

इस पुरुष का मानव-मातृत्व में और सृजनात्मक-क्षमता में इतना दृढ़ विश्वास है कि वह कुछ को रहस्यपूर्ण एवं, कितनों ही को नौसिखियापन प्रतीत होता है; यह विश्वास इतना अचल है कि उन्होंने १९४० में ही अपने देशवासियों में उसका प्रस्फुरण आरंभ कर दिया था और इस प्रकार उन्हें स्वयं अपने में एक नई आशा और एक नया विश्वास प्रदान किया था। मानवता में उनके विश्वास की दार्शनिक कमजोरियाँ चाहे कुछ भी हों, राजनीतिक नेतृत्व में उसके बल की प्रतीति १९४८ के बाद से इस द्वीप में स्थापित सैकड़ों कल-कारखानों से होती है।

यह एक ऐसा पुरुष है जिसने अपने आप में और अपने लिए एक कुलीन किसान की कल्पना साकार की है और उसे विशिष्ट सफलता के साथ लागू किया है। समाजशास्त्री पुटोरिकी जिबारो का मिला जुला अध्ययन करते हैं और पाते हैं कि उसमें उतना ही दोष हैं जितने अन्य समस्त व्यक्तियों में, वह भी उतना ही लालची या उदार, उतना ही बुद्धिमान, उतना ही भ्रमित, उतना ही पानीदार है। मुनोज इन सभी बातों को परे हटा देते हैं। वे एक सरल, कुशल, सांसारिकता की दृष्टि से विवेकी गौरव अनुभव करने वाले, शिष्ट एवं अधिक शिष्टाचार को माँग पर दृढ़ रखने वाले किसान के रूप में जिबारो की अपनी कल्पना पर अडिग रहते हैं। यह कल्पना उपयोगी सिद्ध होती है। मुनोज की राजनैतिक एवं वैयक्तिक शक्ति का मुख्य स्रोत वह सरल सांसारिक एवं गौरव-मिश्रित प्रेम है जो समस्त मानवों एवं विशेष कर जिबारो के सद्गुणों में उनके अविचल विश्वास के उत्तर में जिबारो मुनोज के प्रति अनुभव करते हैं और जिसे वे लगातार व्यक्त करते रहते हैं।

उस समय जब मास्को रेडियो, घिसे-पिटे तथ्यों को, औंधे-सीधे तथ्यों को लेकर, "तथ्यों" का अथवा तथ्यहीनता का आविष्कार कर, बारम्बार पुर्टोरिको की निर्मम अमेरिकी साम्राज्जवाद के पीड़ित के रूप में प्रस्तुत करता हुआ अमेरिका पर विश्वव्यापी एवं विषाक्त प्रहार करता है, विश्व के समस्त असाम्यवादी-क्षेत्रों के सैकड़ों विदेशी अभ्यागत इस द्वीप का लगातार 'साम्यवाद की अमेरिकी उत्तर' के अधिकतम सम्भव प्रभावकारी उदाहरण के रूप में अध्ययन करते हैं।

—×—

अध्याय २

उपनिवेश

पुर्टोरिको एक अपेक्षाकृत छोटा, विलक्षण सौंदर्य से पूर्ण और अपने निवासियों का अत्यधिक प्रिय,—द्वीप है, जो चार शताब्दियों से भी अधिक समय से किन्हीं दूसरों के लिए, पुर्टोरिकियों से प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध न रखने वाले कारणों से महत्वपूर्ण था। वह उपनिवेश था, पहले स्पेन का और तत्पश्चात अमेरिका का।

पुर्टोरिको की कहानी अवश्यभावी रूप से उस जनता की कहानी है, जिनका आरम्भ स्पेन वालों के रूप में हुआ, किन्तु क्योंकि उन्हें सच्चे स्पेन वालो के रूप में आचरण करने की अनुमति नहीं दी गयी, उन्होंने अपनी वह मौलिकता अधिकांश में खो दी और 'संस्कृति-हीन' बन गये। यह कहानी इस विषय की है कि उन्होंने किस प्रकार शनैः शनैः आंशिक रूप में आत्म-रक्षा के लिए पुर्टोरिकी चारित्र्य प्राप्त किया, किन्तु बाद में उन्हें इस चारित्र्य को भी बाहर की, विदेशी संस्कृति के प्रभाव की मांग स्वरूप नया रूप देना पड़ा, और यह कहानी इस विषय की भी है कि उन्होंने पुर्टोरिकी चारित्र्य बिना छोड़े किस प्रकार सच्चे अमेरिकी बनने की अंतिम विजय प्राप्त की।

पुर्टोरिको को स्पेन लगभग विशिष्ट रूप में एक दुर्ग समझता था जहाँ से कैरेबियन और पनामा के मुहाने—स्पेन के अमेरिकी साम्राज्य की कुञ्जियों की रक्षा की जा सकती थी। पुर्टोरिको के निवासी इस दुर्ग के चाकर बने। उन्होंने साम्राज्य की सम्पदा-वृद्धि में इतना कम योग दिया कि द्वीप के कार्य-संचालन एवं सुरक्षा-व्यवस्था हेतु

मैक्सिको के खजाने खाली होने लगे। उनका अपना योग कम होने के कारण वे उपेक्षित भी रहे।

उन्नीसवीं शताब्दि में इस द्वीप पर उदारतावाद की उल्लेखनीय, परन्तु अस्थिर हलचल दिखलायी दी जिसमें थी राजनीतिक एवं आर्थिक सुधारों की भरमार 'नागरिक-स्वतंत्रता के लिए आकुलता, जिसके परिणामस्वरूप कई सच्चे पुर्टोरिकी, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक नेताओं का उदय हुआ। इस द्वीप की जनता ने, जो अभी तक सांस्कृतिक अर्थों में स्वरूपहीन थी, सच्चे पुर्टोरिकी के रूप में अपना स्वरूप एवं संज्ञा ग्रहण की। अपनी शिकायतों को वह साफ-साफ एवं जोरदार शब्दों में प्रस्तुत करने लगी और स्पेन से यदा-कदा सुधार प्राप्त करने लगी। पुराना व्यापारिक-औपनिवेशिक-शासन बदल दिया गया। अमेरिका एवं अन्य विदेशी उपनिवेशों के साथ वाणिज्य का अधिकार दिया गया और यह वाणिज्य किया जाने लगा। अन्य सुधारों में सम्मिलित थे : समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता, नागरिक एवं सैनिक सत्ता का पृथक्करण और सांस्कृतिक-समाजों की रचना।

एक अनिवार्य परिणाम निकला महत्त्वपूर्ण 'क्रान्तिकारी' समाचार पत्र 'लाडेमोक्रेसिया' जिसकी स्थापना द्वीप के वर्तमान गवर्नर के पिता लुइस मुनोज रिवेरा द्वारा की गयी। स्पेनीय सत्ता के दौरान में पुर्टोरिकी जनता में राष्ट्रीय चेतना का संचार करने एवं उनकी राजनीतिक मुक्ति का बीड़ा उठाने के उद्देश्य से संस्थापित एवं संचालित इस पत्र का उपयोग अमेरिकी सत्ता के दौरान में इन्हीं उद्देश्य के लिए मुनोज मारिन द्वारा होना था।

१८६७ में मुनोज रिवेरा ने पुर्टोरिको के लिए पहला वास्तविक संविधान, इस द्वीप को प्राप्त वास्तविक स्वराज्य का प्रथम अधिकार-पत्र, प्राप्त किया। इस संविधान का सत्कार इस द्वीप की जनता ने हर्षोल्लास से किया, परन्तु वह एक वर्ष ही अस्तित्व में रहा। पेरिस की सन्धि द्वारा पुर्टोरिको को अमेरिका के हाथों सौंप देने के परिणामस्वरूप

यह संविधान समाप्त हो गया। तुरन्त बाद के वर्षों में—जबकि इस द्वीप के लिए बाहरी सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारों वाले अमेरिकी गवर्नर, चार शताब्दियों के बाद स्पेन की प्रजा के रूप में प्राप्त की गयीं गिनी चुनी राजनीतिक एवं नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करने हेतु संकल्पित पुर्टोरिकियों से टकराते रहे; अमेरिका में यह विचार उत्पन्न हो गया कि पुर्टोरिकी उच्छृंखल, अकृतघ्न और स्वशासन के 'अनुपयुक्त' हैं। हमारे शासन के प्रथम वर्ष में १८९७ के स्पेन प्रदत्त अधिकांश अधिकार एवं स्वतंत्रता समाप्त कर दी गयी। कई पुर्टोरिकी, जिन्होंने मुक्तिदाता कह कर हमारा सम्मान किया था, परिस्थिति के प्रति निराश हो चले।

स्पेन-अमेरिका युद्ध के बहुत पहले से अमेरिका और अमेरिका के निर्माण के पूर्व तेरह उपनिवेशों के साथ, पुर्टोरिको के गाढ़े व्यापारिक सम्बन्ध थे। आरम्भिक दिनों में यह व्यापार स्पेन के दमनकारी आर्थिक शासन से बचने के लिए अवैध, तथापि बड़े पैमाने पर, तटकर के रूप में हुआ करता था। उन्नीसवीं शताब्दि के दौरान में वह वध हो गया।

इस द्वीप पर चीनी-उद्योग का विकास हुआ जिसमें समतल एवं उपजाऊ तटवर्ती भूमि पर गन्ना बागान अपेक्षाकृत बड़े, गन्ना पेरने की मिलें छोटी व साधन रहित थीं और अमेरिका उनका सबसे महत्वपूर्ण ग्राहक था। अमेरिकी किसानों ने शकरकन्दी बोनी आरम्भ की, और १८७० में वे अपने इस शिशु-उद्योग को तटकर द्वारा संरक्षण दिलवाने में समर्थ हुए। पुर्टोरिको के किसान दीवालिये हो गये, अमेरिका के साथ खुले व्यापार के लिए शोर करने लगे। उनकी बहुत सी भूमि पुनः चरवाही के काम आने लगी।

स्पेन-अमेरिका युद्ध के पश्चात, जब पुर्टोरिको अमेरिकी सत्ता के अधीन हुआ, उसने मुख्य भूमि अमेरिका के साथ खुले व्यापार की वह सुविधा प्राप्त कर ली जिसके लिये वह लम्बे समय से शोर कर रहा

था। परन्तु तब उसने अनुभव किया कि उसके चीनी-उत्पादक कारखाने इतने साधन-हीन, पुराने, और क्षमता रहित हैं कि वह परिस्थिति का लाभ नहीं उठा सकता। अमेरिका की टेरिफ सूची में इस द्वीप को सम्मिलित किये जाने का लाभ अमेरिकी पूँजी को मिलने लगा; न कि पुर्टो रिकी पूँजी को।

पुर्टो रिको अमेरिका की, करोड़ों डालर की पूंजी लगाने का क्षेत्र बना। यह पूंजी अमेरिकी सत्ता के अन्तर्गत वेग से इस द्वीप में प्रवाहित होकर आयी और परिणामस्वरूप द्वीप के समूचे जीवन पर उसका प्रभुत्व हो गया

प्रथम तो यह पूंजी चीनी-उद्योग में लगी, परिणास्वरूप उल्लेखनीय परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण दृष्टिगोचर हुआ। बड़ी-बड़ी नयी मिलें खड़ी की गयीं, उनींदे, पिछड़े हुये और दारिद्रयग्रस्त भूतपूर्व स्पेनीय उपनिवेश में औद्योगिक क्षमता प्रविष्ट की गयी, कम्पनियों की बस्तियाँ बसने लगीं, अमेरिकी पूँजी की हित-रक्षा हेतु भू-भाग खरीदे गये। कई पुर्टो रिकी किसानों ने अपनी जमीनें और इस रूप में अपने जीविकोपार्जन का साधन, बेच दिया। केवल, अपेक्षाकृत बहुत ही कम, पुर्टो रिकी किसान अपने को बड़ी-बड़ी मिलों को अपना गन्ना बेचने वाले कोलोनोस के रूप में, बचाकर रख सके।

चीनी उद्योग के सम्बन्ध में, पुर्टो रिकी सरकार द्वारा १९४१ में प्रकाशित स्टेबन बर्ड की प्रामाणिक रिपोर्ट के अनुसार १८७९ का ७०,००० टन का उत्पादन बढ़कर १९३४ तक १० लाख टन से अधिक हो गया। जितने एकड़ भूमि में गन्ना बोया जाता था, वह इस शताब्दि के प्रथम पैंतीस वर्षों में तिगुनी हो गई, किन्तु उत्पादन टनों में उत्पादन का आंकड़ा दस गुना बढ़ गया।

अमेरिकी पूँजी इस द्वीप की अर्थ व्यवस्था की अन्य शाखाओं खट्टे मिट्ठे फलों, तम्बाखू और माल-परिवहन के व्यवसाय में भी प्रविष्ट होने लगी, परन्तु चीनी-उद्योग का,—उसके अपने प्रभाव के

कारण, सभी पर प्रभुत्व रहा। कहवे का महत्व, जो कि स्पेन-अमेरिका युद्ध के पूर्व तक मुख्य-फसल थी, प्रथम विश्व-युद्ध के उपरांत घट गया। कहवा उद्योग में कोई विदेशी पूँजी नहीं लगी। पुर्टोरिको के कहवा उत्पादक अपनी भूमि के स्वामी तो बने रहे, किन्तु उनकी मंडियाँ उनके हाथों से निकल गईं और इस प्रकार दिवालिये बन गये।

१९३० तक इस द्वीप की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का आधार लगभग पूर्णतया चीनी-उद्योग ही था। प्रमुख मार्गों से अथवा रेलों से माल-परिवहन की व्यवस्था चीनी-उद्योग की सहायता हेतु की गई थी, कृषक-ऋण केवल चीनी पर ही मिल सकता था, सिलाई-बुनाई को छोड़, लगभग प्रत्येक विद्यमान उद्योग चीनी-उद्योग का सहायक था, व्यापार का ध्यान चीनी की ओर रहता था और वह अपनी भलाई के लिये मुख्य रूप से चीनी पर ही निर्भर करता था, राजनीति लगभग पूर्णतया चीनी के प्रभाव में थी। अमेरिका के हित का अर्थ ही था चीनी, और न केवल अमेरिका द्वारा नियुक्त गवर्नर ही अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए जागरूक थे परन्तु चीनी भी इस द्वीप के राजनीतिक-जीवन में घुली-मिली थी। वे राजनैतिक दल ही जीवित रह सकते थे, जिन्हें चीनी-उद्योग अथवा इस उद्योग के सहकारी हितों से सहायता स्वरूप धन-राशि मिलती थी, शेष नहीं। हजारों श्रमिकों एवं पर्वतीय क्षेत्रों के छोटे-छोटे किसानों ने चुनाव के समय अपने-अपने मत बेचे। द्वीप के विधान-मंडल में काफी बड़ी संख्या में पुर्टोरिकी चीनी-उद्योग के अभिभावक आ गये थे, जो स्पष्ट था कि इस द्वीप के प्रमुख उद्योग एवं स्वयं अपनी आय के साधनों के साथ किसी प्रकार गड़बड़ पसन्द नहीं करते थे।

निश्चयपूर्वक चीनी-उद्योग ही द्वीप का अधिकांश कर-भार चुकाता था, उसके अधिकांश मजदूरों को रोजगार देता था, उसके

व्यापार का मुख्य अङ्ग था, और पुर्टोरिको के बीस में से सत्रह बन्दरगाहों को, इन अर्थों में, सम्भाले हुये था, कि इन सत्रह बन्दरगाहों से केवल चीनी ही बाहर जाती थी और वहाँ किसी अन्य वस्तु के लिये गोदाम आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी। किन्तु वह समय आने वाला था जबकि, अर्थ व्यवस्था में चीनी-उद्योग का योग द्वीप की आवश्यकताओं के लिये अत्यन्त ही अपर्याप्त बन गया।

एक नये प्रकार का जीवन, मुख्यतया इस द्वीप की सीमाओं से बाहर निर्देशित एवं संचालित आधुनिक उद्योग-वाद, पिछड़े हुए पुराने स्पेनीय सांस्कृतिक विचारों वाले केथौलिक मतावलम्बी कृषि-प्रधान समाज पर थोप दिया गया। भौतिक दृष्टि से कल-कारखाने एवं उत्पादक-क्षमता के रूप में परिणाम प्रभावोत्पादक थे, तथापि उस के लाभ का एक बहुत ही बड़ा अंश गैर-पुर्टोरिकी जेबों में जा रहा था। नई व्यवस्था में कुछ पुर्टोरिकियों का भी भाग्य चमका और पुर्टोरिकियों का एक छोटा सा वर्ग, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चीनी-उद्योग से सम्बन्धित था, लाभ, बचत, जीवन-यापन स्तर में उन्नति का,जो स्पेन के शासन काल की आर्थिक परिस्थितियों से सर्वथा भिन्न थी, प्रदर्शन करने लगा। समाज के रूप में पुर्टोरिको द्वारा उठाये गये प्रत्यक्ष लाभ का विषय तथापि विवादग्रस्त ही था।

हम अमेरिकी सराहनी स्फूर्ति के साथ स्पेन से हुये अपने युद्ध के पश्चात पुर्टोरिको में सफाई करने लगे। सड़कें, पाठशालायें,और जन-स्वास्थ्य के कार्यक्रम, इस स्फूर्ति के एवं उसमें निहित सद्भावना के प्रमाण हैं। हमने समुद्र-पार व्यापार की व्यवस्था की जो कि पहले स्पेन द्वारा की जा रही इस द्वीप की लूट से सर्वथा विपरीत थी, और जिससे आज वह साधन प्राप्त हो रहे हैं जिनके बल पर पुर्टोरिको दलदल से निकल कर अपने अभ्युदय-अभियान तक आ पहुँचा है।

सशस्त्र-सेनाए जो स्पेनीय दिनों में खर्च करने का माध्यम थीं, अब द्वीप की अर्थ-व्यवस्था में योग प्रदान करने लगीं। सैनिक एवं नाविक निर्माण पुर्टोरिकी सैनिकों एवं नाविकों को वेतन और पेन्शन, उनके आश्रितों के लिये सुविधायें, हवाई-अड्डों की साज—संभाल, ये सभी और अन्य कार्यों से, जो स्पैन-अमेरिका युद्ध से लगाकर प्रथम और द्वितीय विश्व-युद्धों के बीच आज के अर्थपूर्ण सावधानी के युग तक फैलाव एवं महत्त्व में सतत बढ़ते जा रहे हैं, पुर्टोरिको में करोड़ों डालर बाहर से लाये हैं।

जहाँ पुर्टोरिको को तटकर संरक्षित अमेरिकी मंडियों में निर्बंध प्रवेश की छूट दी गयी थी वहाँ यह भी तय कर लिया गया था कि विदेशी जलपोतों से इस द्वीप के बंदरगाहों को होने वाली कस्टम की आय को संघीय कोप में जमा करना आवश्यक नहीं है, किन्तु उसे द्वीप के कामकाज के लिये वहीं रखा जा सकेगा।

संघीय शासन में अपना कोई प्रतिनिधि न होने एवं बगैर प्रतिनिधित्व कोई कर न चुकाने के सिद्धान्त के आधार पर पुर्टोरिकियों ने कभी वाशिंगटन को कोई कर नहीं दिया है। आज भी उनका आय कर विशेष तौर पर उनकी अपनी सरकार को जाता है, और स्थानीय उत्पादित सामग्री—जैसे रम, (गन्ने से बनने वाली शराब) को ही एक्साइज कर भी, संघीय कोषालय में जाने के बजाय जैसा कि विभिन्न राज्यों द्वारा किया जाता है, पुर्टोरिको में ही रहता है।

अमेरिकी शासन आरम्भ होने के समय से १९३० के बाद के धूमिल वर्षों तक, व्यापार, शिक्षा, जन-स्वास्थ्य, सड़क-निर्माण, और कदाचित उन सभी मामलों में जिनके सम्बन्ध में सरकारी आंकड़े उपलब्ध हैं, सुस्थिर प्रगति दिखलायी दी। विदेशी-व्यापार १८९९ के १६,७८६,००० डालर से बढ़कर १९३० में १८२,८८५,००० हो गया। हम गौरवपूर्वक यह तथ्य दर्शाने लगे कि अमेरिकी शासन के अन्तर्गत पुर्टोरिको ने अमेरिकी महाद्वीप के अन्य कई देशों के, जो

भी तुलना की दृष्टि से सुविधाजनक हों, मुकाबले प्रति व्यक्ति अधिक टेलीफोन, अधिक मील सड़कें, स्कूलों में अधिक स्थान, अस्पतालों में अधिक रोगियों के रहने का स्थान, कल्पना की सीमा में आने वाली लगभग सभी वस्तुएँ अधिक संख्या या मात्रा में, प्राप्त की हैं। रोजगार पहले से अधिक हो गये, और निश्चय ही प्रति व्यक्ति आय,—जो कि कुल जन संख्या से कुल आय का विभाजन कर प्राप्त की जाती है,—पहले के किसी भी समय से अधिक हो गयी। १६३० से पुर्टोरिको का अपना एक विश्वविद्यालय है, और उसके कई स्नातक द्वीप की व्यवस्था में, शासन में, काम-धन्धों में, जन-सेवाओं आदि में रोजगार प्राप्त कर सके हैं।

पुर्टोरिको की औपनिवेशिक अर्थ-व्यवस्था का योग द्वितीय दशक के अंतिम वर्षों में, मंदी आरम्भ होने के पूर्व ही स्पष्ट होने लगा था, जबकि ब्रुकिंग्स इन्स्टिट्यूशन ने द्वीप का अपना सर्वेक्षण और बायली डिफ्फी और उसकी पत्नी जस्टाइन ने अपने 'पोर्टोरिको: एक खंडित संकल्प' का, जो कि एक गैर-पुर्टोरिकी शास्त्रज्ञ द्वारा पुर्टोरिको की औपनिवेशिक अर्थ-व्यवस्था पर किये गये प्रथम—यद्यपि कुछ स्थानों पर अतिमिश्रित—आक्रमण के रूप में महत्वपूर्ण था, प्रकाशन किया। डिफ्फी-दम्पत्ति ने बतलाया कि यद्यपि पुर्टोरिको का व्यापार, जिसमें निर्यात का मूल्य आयात के मूल्य से १०० लाख डालर वार्षिक अधिक है, संतुलन की दृष्टि से अनुकूल है किन्तु चुकारे की राशि, कभी यदि लिखी भी जाती है तो वह, बहुत ही कम है।

बाहर के पूँजी लगाने वालों द्वारा पुर्टोरिको से प्राप्त किया गया लाभ, पुर्टोरिको से निर्यात होने वाले एवं मुख्य भूमि से इस द्वीप को आयात होने वाले माल पर दिया भाड़ा, पूँजी लगाने वालों के स्वामित्व की सम्पत्ति पर किराया, आदि विभिन्न मदें मिलाकर, डिफ्फी-दम्पत्ति के एवं लटकर एवं व्यापार परिस्थिति के जैकडि-गोलिया के अध्ययन के अनुसार, २०० लाख डालर होती हैं। इसका

अर्थ था कि अर्थ-व्यवस्था,—संघीय व्यय एवं पूँजी विनियोग को छोड़ : जो उस समय बन्द हो चुके थे जबकि डिफ्फी-दम्पत्ति ने अपनी पुस्तक लिखी, प्रति वर्ष १०० लाख डालर का घाटा उठा रही थी।

१९३० के बाद पूर्ण दिवालियेपन की दिशा में पुर्टोरिको की गति और भी तीव्र हो गयी। एक के बाद दूसरी म्युनिसिपेल्टियां, वेतन एवं पारिश्रमिक के रूप में, अपना कर्तव्य चुकाने योग्य नहीं रह गयीं, बन्धक पर ऋण एवं उसी के साथ निजी गिरवी के आंकड़े इतने बढ़-चढ़ गये जितने पहले कभी नहीं चढ़े थे, व्यक्तिगत-कष्ट : जो भुखमरी के सन्निकट थे, जनता के जीवन में पैठ गये।

पुर्टोरिको सम्बन्धी आंकड़ों में अपार सुधार हुआ, परन्तु जनता और आंकड़ों में जमीन-आसमान का अन्तर है। अमेरिका के संरक्षण एवं सामान्य औपनिवेशिक घटनाक्रम, जिसे समाजशास्त्री कभी भी संतोषप्रद रूप में स्पष्ट नहीं कर सके हैं : के तारतम्य में इस द्वीप में जन्म संख्या की दर भी तेजी से बढ़ने लगी कि स्वच्छता की व्यवस्था में किया गया सुधार भी निश्चयपूर्वक इसका एक कारण था। यह तथ्य भी स्पष्ट है कि दरिद्रता और भूख बहुधा सामाजिक-चक्र की अधोगति में योग देती हैं और ऊँची एवं बढ़ती हुई जन-संख्या की दर इसमें अतिरिक्त योग प्रदान करती है १९०० में जन-संख्या ९००,००० थी, जो १९४० तक बढ़कर लगभग २० लाख हो गयी। निस्सन्देह इस शताब्दि के आरम्भिक दशकों में अर्थ-व्यवस्था का विस्तार हुआ, परन्तु जहाँ तक पुर्टोरिको का सम्बन्ध था, यह एक कृत्रिम अर्थ-व्यवस्था थी। इतना ही नहीं, उसका विस्तार उतनी तेजी से नहीं हुआ जितनी तेजी से आबादी बढ़ी, और १९२९ के आसपास जब नई पूँजी इस द्वीप में आनी बन्द हो गयी; उसका वह विस्तार भी थम गया।

१९३५ में चीनी उद्योग में कोई १००,००० मजदूर; अथवा २० प्रतिशत वेतन भोगी काम कर रहे थे। इनमें से कोई ९३,०००

खेतिहर श्रमिक थे, जिनमें से अधिकांश मौसम के समय में वर्ष में चार या पाँच माह काम करते थे, और शेष समय बेकार रहते थे। अधिकांश चीनी-मजदूर कम्पनी के मकानों में, जो कि बहुधा अन्य ग्रामीण आवासों की अपेक्षा अच्छे होते थे, रहते थे, वे कम्पनी की दुकानों से, जहाँ सामान्यतया अन्य दुकानों की अपेक्षा मूल्य कम होते थे, सामग्री खरीदते थे, कम्पनी की कई दुकानों में उन्हें उधार पाने की सुविधा थी, जिससे उन्हें लम्बी बेकारी का समय बिताने में सहायता मिलती थी, उनके वेतन उन वेतनों से आम-तौर पर कुछ ज्यादा थे, जो उन्हें अन्यत्र कहीं मिल सकते थे। तथापि इस्टेबन बर्ड ने यह आरोप लगाया कि चीनी-उद्योग अपने अनुपस्थित हिस्सेदारों के लिये प्रभावोत्पादक लाभ खींचते हुये, श्रमिकों के प्रति सरासर अन्याय का आचरण कर रहा है। बर्ड ने प्रमाण-स्वरूप ब्रुकिंग्स इन्स्टीट्यूट द्वारा १६२६ में किये गये आरम्भिक अध्ययन को प्रस्तुत किया जिसके अनुसार एक पुर्टोरिकी मजदूर परिवार की औसत साप्ताहिक आय ६.४७ डालर प्रति परिवार, ३.४६ डालर प्रति मजदूर और ०.८५ डालर प्रति व्यक्ति थी। उसकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लगभग प्रतिदिन १२ सेन्ट और चाहिए थे। ये परिवार अपनी साप्ताहिक आय का ६४ प्रतिशत भोजन पर, जिसमें सबसे बड़ी मद है "पालिश किया हुआ" चावल, व्यय करते थे।

"प्रति व्यक्ति प्रतिदिन बारह सेन्ट की समस्या सभी रोगों की जड़ है, वर्तमान परिस्थितियों को जारी रखने के कई समर्थकों की जो मजदूर पर आलस्य आरोपित करते हैं, निर्मम धारणाएँ इससे समाप्त हो जानी चाहिये। प्रति व्यक्ति प्रतिदिन बारह सेन्ट की समस्या पुर्टोरिको के गन्ना-उत्पादक क्षेत्रों में आंतों की सूजन और अतिसार के कारण ५७५ (प्रति १००,०००), तपेदिक के कारण २३७,

और मलेरिया के कारण २२१ मृत्युओं के लिये अधिकांश रूप में जिम्मेदार हैं।"

बर्ड के कथन में यह और सम्मिलित कर दिया जाना चाहिए कि मन्दी के दिनों में लाखों पुर्टोरिको पूर्णतया बेरोजगार रहते थे और पूरक फसल उपजाने के लिये उनके पास जमीन नहीं थी, हजारों महिलाएँ सीने-पिरोने का कार्य, हाथ से रूमालों की कढ़ाई और मगजी लगाने और यह सामान मजदूरों के हाथों में पहुँचाने का कार्य तीन सेन्ट प्रति दर्जन की दर से करती थीं।

अध्याय ३

उपनिवेशवाद

पुर्टोरिको के आधुनिक रूपान्तर का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू इस धारणा का विकास है कि लाखों व्यक्ति अपनी स्पेनी-भाषा को और अपनी प्राचीन स्पेनी-संस्कृति के बुनियादी आधारों को अक्षुण्ण रखते हुये भी अच्छे अमेरिकी हो सकते हैं। अमेरिका के पदार्पण करने के कुछ ही समय पश्चात् पुर्टोरिकियों में अति-देशभक्तों का एक दल जोर पकड़ने लगा, इसका आंशिक कारण था कि वे भावना व संस्कृति और साथ ही वस्तु-स्थिति में अमेरिकी बनना चाहते थे और आंशिक यह था कि हर अमेरिकी वस्तु-विषय के प्रति उत्साह प्रदर्शित कर, काम-धंधा करना या रोजगार प्राप्त करना उन्हें सरल प्रतीत हुआ। तथापि अमेरिका निवासियों द्वारा, अनेक अमेरिकी अधिकारियों द्वारा और स्वयं पुर्टोरिको के अति-देशभक्तों द्वारा प्रतिपादित अमेरिकावाद में एक अजीब घुमाव-फिराव था। अमेरिका में रहने वाला अमेरिकी बहुत से अमेरिकी बातों की आलोचना कर सकता था, करता था और कर रहा था किन्तु पुर्टोरिको में किसी भी अमेरिकी बात की आलोचना करने वाला व्यक्ति अच्छा-अमेरिकी नहीं माना जाता था। हर अमेरिकी वस्तु-विषय को सर्वोत्तम मानकर स्वीकार करना होता था, नहीं तो उसकी आलोचना करने वाला पुर्टोरिकी अमेरिका-विरोधी समझा जाता।

अति-देशभक्त अब भी पुर्टोरिको में, परन्तु मुख्य रूप से वृद्धजनों में दृष्टिगोचर हो सकते हैं। आज के नेता, व्यापारी, अध्यापक, व्यावसायिक, वे व्यक्ति हैं जिन्हें उतनी तीव्रता से अमेरिकावाद को

परेशानी में डालना आवश्यक प्रतीत नहीं होता। अमेरिकी शासन में जन्म लेने और बहुधा अमेरिका में विद्योपार्जन करने वाले इन लोगों को अमेरिकी तौर-तरीके और विचार-स्वभाव अंगीकार करने में कठिनाई नहीं होती। कदाचित यही कारण था कि पुर्टोरिको की वास्तविक क्रान्ति को, जो १६४० में आरम्भ हुई और जिसने औपनिवेशिक मनोविज्ञान के उन्मूलन में आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त की हैं, तब तक गतिवान नहीं हो सकी जब तक कि उसे इस द्वीप के समाज को बीसवीं शताब्दि का अपना प्रथम, अमेरिका में शिक्षित, दोनों संस्कृतियों से भली भाँति परिचित, अमेरिकी शासन में ही पालित-पोषित और अमेरिकी व्यवस्था में इस द्वीप की उल्लेखनीय प्रगति को स्पष्ट कर दिखलाने वाले नये सहायकों के दल से अनुसेवित, नेता नहीं मिल गया।

अमेरिकी व्यापारी-संस्थाओं में उच्च पदों से वञ्चित रखे जाने वाले पुर्टोरिकी, हमारे शासन के प्रथम दो दशकों में उनकी अपनी सरकार में भी उच्च पदों से वञ्चित रखे गये। १६१७ के पूर्व ऐसे पदों पर पुर्टोरिकियों की नियुक्ति—फिर भी वाशिंगटन में निर्धारित नीतियों के क्रियान्वय हेतु अभी भी नहीं; आरम्भ नहीं हो सकी; १६५२ के पूर्व इस द्वीप के निवासियों को पूर्ण स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी नीतियाँ—अमेरिकी-संविधान की, अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा की गई व्यवस्था की परिधि में निर्धारित करने और इन नीतियों के क्रियान्वय हेतु अपने नेता चुनने का अधिकार नहीं मिल सका।

पुर्टोरिको की राजनीति, सदैव इस द्वीप में गरीबी की काली छाया के नीचे लड़खड़ाती रही है। राजनीति, बजट पर नियंत्रण और इसलिये संरक्षकत्व पाने हेतु, एक दलीय संघर्ष बन गई। मनुष्य की जीविका बहुधा इस बात पर निर्भर करती थी कि उसका दल सत्तारूढ़ होता है अथवा नहीं, या कम से कम संरक्षकत्व का कुछ भाग

प्राप्त करता है या नहीं। पड़ोसी-पड़ोसी के खिलाफ थे। उनका मतभेद बाहर से तो सिद्धान्तों का मतभेद दिखलाई देता था, परन्तु वास्तव में वह होता था रोजगार सम्बन्धी मतभेद। विभिन्न नगरों में व्यवसायियों के साथ उनकी राजनैतिक सम्बद्धता के अनुसार संरक्षकत्व अथवा तिरस्कार का व्यवहार किया जाता था।

मुख्यतया मक्खन-रोटी के लिए संघर्ष के रूप में राजनीति ने भी इस समूचे द्वीप पर अपना आधिपत्य जमा लिया हर व्यक्ति, सड़क बुहारने वाले भी, राजनीति से वास्ता रखता था। इन परिस्थितियों में यह आश्चर्यजनक है कि पुर्टोरिको के राजनीतिक नेता एवं राजनीतिज्ञ सामान्य रूप में,किसी भी जगह पाये जा सकने वाले सर्वाधिक ईमानदार व्यक्तियों में से थे। इसी गुण के कारण वे सभी, स्पेनीय सत्ता के आरम्भ से उस शासन काल में अपना उच्च भौतिक स्तर कायम रख सके, वित्तीय मामलों में उन्होंने अपनी निष्कलुषता प्रदर्शित की और उनमें से प्रत्येक की मृत्यु दरिद्रता में ही हुई। इस द्वीप ने ऐसे बड़े घोटालों का अनुभव नहीं किया जिसमें मामला छोटी-मोटी चोरी के मुकाबले,मोटी-मोटी मदों का होता है। दूसरी ओर यह भी सही है कि, मुनोज द्वारा १९४० में परिस्थिति परिवर्तन के पूर्व, चुनाव विक्षिप्त बेइमानी के उपद्रव एवं कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन थे। मत खुले रूप से, खरीदे गये, क्योंकि जो लोग उन्हें बेचते थे उन्हें अपने कृशकाय परिवारों के लिये धन चाहिये था।

द्वीप विधान मंडल हेतु चुने जाने वाले व्यक्तियों के कदाचित अपने विचार रहते हों कि चीनी-उद्योग एक महान लाभकर्त्ता है अथवा शोषक जोंक, परन्तु वे एक बार विधान-मंडल में पहुँचने के पश्चात् चीनी-उद्योग को उसके अपने मार्ग पर छोड़ देते थे। द्वीप के विधान मंडल की शक्ति चाहे कितनी ही अधिक क्यों न रही हो, उस पर सदैव उस गवर्नर का निषेध-मताधिकार छाया रहता था, पुर्टोरिको की जनता की अपेक्षा वाशिंगटन के प्रति उत्तरदायी था। अतएव,

वास्तविक महत्व के मामलों में, विभिन्न-विधान-मंडल सदस्य वफादार अमेरिकी नागरिकों के समुदाय के रूप में आचरण करते प्रतीत होते थे।

सभी दल जिस एक विशिष्ट राजनीतिक-प्रश्न की थोथी चर्चा किया करते थे, वह था अंतिम दर्जे का प्रश्न। यह प्रश्न सभी राजनैतिक-चिंतन को प्रभावित किये हुये था और हजारों पुर्टोरिकियों के तन-बदन में सिहरन फैल जाना इस बात पर निर्भर करता था कि बहस किस प्रकार के दर्जे पर की जा रही है। अमेरिका ने पुर्टोरिको को केवल यही वचन नहीं दिया था कि उनका उपनिवेशवाद अस्थायी है,—उपनिवेशवाद सदैव उसके अपने स्वभाव और मानव-स्वभाव को देखते हुये अस्थायी ही होता है,—वरन् यह भी स्वयं प्रमाणित था कि उपनिवेशवाद कार्य-सञ्चालन हेतु ठीक नहीं है, अतएव उसके स्थान पर किसी अन्य व्यवस्था की स्थापना अवश्यंभावी है।

तथापि जहाँ अंतिम दर्जे का प्रश्न सर्वोच्च प्रश्न था, वहाँ उसकी यह असाधारणता केवल चर्चाओं तक ही सीमित थी। स्वतन्त्रता की आवाज उठाने वाले दलों को उनके आन्दोलन के लिये व्यापार से आर्थिक सहायता तभी तक मिल सकती थी जब तक कि उन पर यह विश्वास कायम रहता कि वे इस मामले में कुछ करने-धरने वाले नहीं हैं। अमेरिकी शासन के आरम्भ में ही कई पुर्टोरिकियों को यह ज्ञात हो चुका था कि स्वतन्त्रता का पक्ष लेना भी खतरनाक है;—यद्यपि आरम्भ ही से यह भावना स्पष्ट थी कि यदि पुर्टोरिकी चाहेंगे तो उन्हें स्वतन्त्रता पाने का अधिकार होगा। जैसा कि उन्हें स्पेन की सत्ता के अन्तर्गत ज्ञात हो चुका था, पुनः उन्हें ज्ञात हो गया कि एक उपनिवेश में दृढ़ राजनीतिक धारणाओं को व्यक्त करना एवं उन पर आचरण करना खतरनाक है। जो एक गवर्नर को रुचिकर हो

और जिसे वह प्रोत्साहन देता हो, दूसरे को वह रुचिकर नहीं भी हो सकता—और इसलिये दमन चक्र को आकर्षित कर सकता है।

इस द्वीप में यह आज सर्वथा स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता की व्यक्तिगत उत्कंठा, आवश्यक नहीं कि तर्क-युक्त ही हो, उसका आधार राजनीति तक और उसका जन्म-स्रोत व्यक्तिगत कठिनाइयों या अमेरिका की नापसन्दगी की भावना तक हो सकता है। बहुधा यह व्यक्ति की जड़ों में संस्कृति के प्रति गौरव, जीवन के दृष्टिकोण एवं विचार-स्वभाव की और सदियों के सांस्कृतिक विकास के फलस्वरूप प्राप्त विचारधारा की तर्करहित एवं अत्यन्त गहरी मनोभावनाओं का उद्वेग ही होता है।

शिक्षा का प्रश्न, जिसने स्पेनीय शासन के अन्तिम दशक में भारी विवाद उत्पन्न किया था, अमेरिकी शासन के पहले पाँच दशकों में संघर्ष का मूलाधार रहा। १८९८ में जब हमने पुर्टोरिको के मंच पर पदार्पण किया, इस द्वीप की शिक्षा-व्यवस्था का विस्तार करना और वेगवान अमेरिकीकरण की दृष्टि से उसे नया स्वरूप प्रदान करना हमारा एक पहला कदम था। महाद्वीप के शिक्षा-शास्त्री, जो पुर्टोरिको और उसकी समस्याओं से सर्वथा अनभिज्ञ थे, शिक्षा-आयुक्तों के रूप में इस द्वीप में गये और वहाँ उन्होंने महाद्वीपीय-आधार पर बगैर इस बात का विचार किये पाठ्यक्रम निर्धारित किये कि वे इस द्वीप की आवश्यकताओं के उपयुक्त हैं या नहीं। पुर्टोरिको के बालक आरम्भ से ही अमेरिका के बारे में जानने लगे, उनके समाज-अध्ययन में उस पुर्टोरिकी जीवन के स्थान पर जिसके अनुरूप उन्हें बनना था, अमेरिका के जीवन को स्थान प्राप्त था, उन्हें पढ़ाया जाने वाला अधिकांश इतिहास अमेरिका का इतिहास था, उनकी पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में थीं और वे पुर्टोरिकियों के लिये नहीं; महाद्वीप के छात्रों के लिये तैयार की गयीं थीं।

इससे भी बुरा यह था कि आरम्भ ही से यह आदेश दे दिया गया कि सभी स्तरों पर, समस्त विषयों का अध्यापन अंग्रेजी भाषा में

ही किया जायेगा। स्पेन की भाषा बोलने वाले पुर्टोरिकियों को अंग्रेजी पढ़ाने एवं सच्चे द्विभाषीय बनाने का यह एक अच्छा तरीका समझा गया। परन्तु उससे काम नहीं चला। अध्यापकों को, जो अंग्रेजी नहीं जानते थे, अपनी नौकरियाँ चले जाने के भय से यह भाषा तुरन्त सीखनी पड़ी, उसके पश्चात् उन्हें पढ़ाने का काम, उस भाषा में करना पड़ता था जिस पर उनका पूर्ण अधिकार नहीं था और जो उनके लिये विदेशी थी। बालकों से, जिन्होंने अपने जीवन में स्पेनीय भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य सुनी भी नहीं थी, प्रथम श्रेणी में प्रविष्ट होते ही यह अपेक्षा की जाती थी कि वे लिखने, पढ़ने एवं गणित का और अन्य विषयों का, वह सम्पूर्ण ज्ञान जो उन्हें ऐसी भाषा में, जिसके बारे में वे सर्वथा अनभिज्ञ थे, ऐसे अध्यापकों द्वारा, जो उस भाषा को टूटी-फूटी बोलते थे और जिस भाषा में उन्हें अपने को व्यक्त करने में कठिनाई होती थी, पढ़ाया जाता था, प्राप्त कर लें। इसका परिणाम हुआ बौद्धिक-अराजकता की दिशा में बढ़ती हुई और विक्षोभ-मिश्रित अव्यवस्था।

उस व्यवस्था की खामियाँ कई अमेरिकीयों के समक्ष स्पष्ट थीं। पडिन-योजना नामक कार्यक्रम के अन्तर्गत, जिसमें प्राथमिक शालाओं में सारी पढ़ाई स्पेनीय भाषा में करने का प्रबन्ध था, महत्वपूर्ण सुधार किये परन्तु अंग्रेजी अध्ययन का एक आवश्यक विषय बन गया। यह यह योजना अत्यधिक लोकप्रिय हुई और १६३६ के तूफानी वर्ष के पहले तक, जबकि राष्ट्रवादियों ने हिंसा और हत्याओं का कार्यक्रम अपनाया और कुछ अमेरिकी-क्षेत्रों में थोड़े से कट्टर पंथियों के कृत्यों का आरोप समस्त पुर्टोरिकियों पर डाला जाने लगा, काम बहुत ठीक ढङ्ग से चला।

गृह विभाग के उच्च पदाधिकारियों ने अंग्रेजी भाषा सम्बन्धी पडिन की नीति को कभी स्वीकार नहीं किया था। अब उन्होंने उस नीति को बदलने का कार्य आरम्भ कर दिया। शिक्षा आयुक्त के पद

से उन्होंने पडिन का त्याग पत्र स्वीकार कर लिया और ऐसे आदमी की खोज करने लगे जो विभ्रमित बालकों के गलों में अंग्रेजी उतार कर अमेरिकीकरण की गति द्रुत करने के कार्य की दृष्टि से विश्वास-भाजन हों। उनका काम कुछ सरल नहीं था; कोई भी सुपात्र पुर्टोरिकी उन शर्तों पर यह काम स्वीकार नहीं कर सकता था; अन्त में, १९३७ में उन्होंने अपनी आशा चार्ल्सटन कालेज में स्पेनी के एक अध्यापक डा० जोस गेलार्डो पर केन्द्रित की। गेलार्डो एक मूलतः बेहूदी योजना को लेकर, जिसमें पढ़ाई आधे समय अंग्रेजी में और शेष स्पेनी भाषा में की जाती थी, लड़खड़ाने लगे। इसे इतनी भारी अव्यवस्था उत्पन्न हुई कि उन्हें स्वयं ही यह योजना बदल देनी पड़ी। गेलार्डो का अराजकतापूर्ण द्वितीय कार्य काल १९४९ के आरम्भ में समाप्त हुआ और १९३८ में संगठित तथा १९४१ से सत्तारूढ़ पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी ने नई शिक्षा नीति के नेतृत्व हेतु किसी और को चुनने का निर्णय किया। इसकेस इस काम को संभालने को तैयार थे, किन्तु नियुक्ति की पुष्टि सिनेट द्वारा होनी आवश्यक थी, और इस पुष्टि के लिए आवश्यक था अंग्रेजी भाषा पर जोर देने की कट्टर नीति का बचन देते हुये वफादारी की लिखित गारंटी देना। पुनः, इन शर्तों पर कोई सुपात्र पुर्टोरिकी यह काम स्वीकार करने वाला नहीं था।

पुर्टोरिको की नई पीढ़ी ने, जो अब शासन का नियंत्रण करती थी, शासक देश की हर बात को बगैर किसी प्रकार का सवाल किये स्वीकार कर लेने के विषय में औपनिवेशिक स्वभाव को तोड़ फेंका था। तथापि, यह गतिरोध कई वर्षों रहा, जिसके दौरान में द्वीप की शिक्षा-व्यवस्था में कोई उत्तरदायी प्रधान नहीं रहा। अन्ततः, १९४८ के कांग्रेस ने पुर्टोरिकियों को स्वयं अपना गवर्नर चुनने का अधिकार दिया। यह गवर्नर बाद में पुर्टोरिक था गवर्नर और पुर्टोरिकी की जनता के प्रति उत्तरदायी शिक्षा-आयुक्त, स्वयं नियुक्त कर सकता था।

अध्याय ४

दीवालिया उपनिवेशवाद

कतिपय पुर्टोरिकन क्षेत्रों में, जहाँ इस द्वीप का नव-भाषित अमेरिकावाद, नये धर्म परिवर्तकों द्वारा अपने नये धर्म के प्रति बहुधा प्रदर्शित किये जाने वाले उत्कार से आविर्भूत हो रहा है, उपनिवेशवाद अब लगभग एक घृणित शब्द हो गया है। उसका उल्लेख मात्र ही, अमेरिका को जो हाल के वर्षों में जीवन-सुधार के संघर्ष में पुर्टोरिको का इतना बड़ा सहायक रहा है, बदनाम करने की अकृतज्ञता समझी जाती है। इसी आधार पर और उन्हीं क्षेत्रों में यह जताने का शौक बढ़ता जा रहा है कि १८९८ में अमेरिका द्वारा सत्ता संभालने के तुरन्त बाद ही से जीवनयापन का स्तर उन्नत होने लगा था।

इस धारणा के समर्थक आंकड़े चाहे जो हों, यह निःसन्देहात्मक रूप में सच है कि हमारे शासन के आरम्भिक तीस वर्षों में उन पुर्टोरिकियों की कुल संख्या में वृद्धि हुई जो अपने सौन्दर्यपूर्ण द्वीप के पर्वतों पर और घाटियों में भूखे और निराश भटकते फिरते थे।

मंदी के कारण, १९३३ में 'सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन' (Emergency Relief Administration) की स्थापना हुई। पहले इसका नाम 'पुर्टोरिको सङ्कट-कालीन सहायता प्रशासन' (Puerto Rico Emergency Relief Administration) था और बाद में उसे 'संघीय सहायता प्रशासन' (Federal Relief Administration) की स्थानीय शाखा कहा जाने लगा। स्थानीय

रूप में से जेम्स बोर्न के नेतृत्व में, जिन्हें एक कुशल समाज-सेविका डोरोथी बोर्न की सहायता प्राप्त थी, यह प्रशासन प्रति माह लाखों डालर राशि, उसके सर्वाधिक सदुपयोग की दृष्टि से एवं इस हेतु वाशिंगटन में निर्धारित नियमों के अनुसार, व्यय करने का एक असामान्य एवं संगठित साधन बन गया। उसका प्राथमिक उद्देश्य लाख-लाख व्यक्तियों के लिये जहाँ विद्यमान अर्थव्यवस्था ने बहुतों को घृणित मृत्यु की दिशा में निराशापूर्वक धकेलने के सिवाय और कुछ भी नहीं दिया, भोजन उपलब्ध कर उन्हें जीवित रखना था।

दार्शनिक दृष्टिकोण से सहायता सङ्गठन की कमजोरियाँ चाहे कुछ भी रही हों, उसकी एक अपार शक्ति भी थी जो केवल उसके विगठन के पश्चात ही स्पष्ट हुई। अध्यक्ष पद पर जेम्स और डोरोथी बोर्न, तथा अमेरिका से सामान्य-मार्गदर्शन के लिये आये थोड़े से परामर्शदाताओं को छोड़ उसके समस्त कर्मचारी पुर्टोरिकी ही थे। बाद का वह सांस्कृतिक कलह भी जिसने उक्त सङ्गठन के उत्तराधिकारी, 'पुनर्निर्माण प्रशासन' को लगभग छिन्न-भिन्न ही कर दिया था ; "पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" और "संघीय सहायता प्रशासन" कलह का कारण था प्रशासकीय एवं नीति-निर्धारक पदों पर अमेरिकियों और पुर्टोरिकियों दोनों ही की उपस्थिति ;—इनमें से पहले वर्ग का ध्यान वाशिंगटन की ओर तथा दूसरे वर्ग का ध्यान द्वीप की आवश्यकताओं की ओर रहता था।

आंशिक रूप से मध्यम-वर्गियों को रोजगार देने के लिये, आंशिक रूप से अपने प्रयत्नों के मार्गदर्शन के लिये "पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" ने जीवनयापन परिस्थितियों का व्यापक अध्ययन करवाया। प्रशासन के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने विश्वासातीत दारिद्रय के अगणित उदाहरण खोजकर प्रस्तुत किये।

वाशिंगटन की सत्ता के कारण परेशान-से, इस व्यापक, किन्तु मंद गति सङ्गठन, "पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" के

अपने इस भारी कार्य को प्रत्यक्ष सहायता के रूप में आरम्भ किया। वाशिंगटन की सत्ता के अनुसार 'सहायता' को केवल वास्तविक सहायता ही रखना था और उसमें मूलभूत अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की कोई बेहूदगी नहीं आनी थी। दूसरी ओर, चारों ओर अपने भयावह स्वरूप में खड़ी मानवीय आवश्यकताओं के मूल्यांकन के अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य हेतु अतिशय तीव्र गति से अधिकाधिक सामाजिक कार्यकर्ता प्रशिक्षित करने थे। परन्तु शीघ्र ही प्रत्यक्ष सहायता का विस्तार रोजगारी-सहायता के रूप में भी होने लगा और उसके प्रयत्न आर्थिक पुनर्निर्माण एवं उस दिशा में भावी कार्य-क्रमों के विकास की ओर होने लगे।

नकद धनराशि, भोजन, वस्त्र तथा अन्य सुविधाएँ देने के अतिरिक्त उसकी गतिविधि द्वीप के जीवन की अन्य शाखाओं तक भी पहुँची, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित हो सकता है।

स्कूल, अस्पताल और अन्य सार्वजनिक इमारतों, पुलों आदि के निर्माण का एक कार्यक्रम था। क्योंकि पुर्टोरिको को और भी अधिक भौतिक-विकास की बहुत ही आवश्यकता थी, अतएव यह महत्वपूर्ण तो था; किन्तु कांग्रेस के इस नियम के अन्तर्गत, कि निधि का एक निश्चित, अपेक्षाकृत बहुत कम, प्रतिशत ही निर्माण सामग्री पर व्यय किया जा सकता है; शेष वेतनों पर व्यय किये जाने के लिये है, यह भी अपर्याप्त ही था। फिर भी इस कार्यक्रम ने मानव को, श्रम की प्रतिष्ठा और ठोस उपलब्धियों के वातावरण में जीवित रखा।

"पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" ने अपने कृषि-कार्य-क्रम के अन्तर्गत गृह-उद्यानों की स्थापना की, कहवा-उत्पादक क्षेत्रों में बीज और पौधे उपलब्ध करने की व्यवस्था की, नारियल-क्षेत्रों में कलियों में लगने वाले कीड़े नष्ट करने का कार्य किया, फलों के डिब्बों में बन्द करने के केन्द्रों की स्थापना हेतु सुविधा एवं

प्रशिक्षण प्रदान किया, ताकि महिलाएँ इन उपजों को सुरक्षित रख सकें।

सहकार-आन्दोलन, जिसने द्वीप में आज वास्तविक शक्ति प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है, उसका बहुत कुछ आरम्भ ग्रामीण-क्षेत्रों में "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन" द्वारा प्रेरित वस्तु-विनिमय एवं परिवर्तन की एवं उन सहकारी-समितियों के रूप में ही हुआ था जो दस्तकारी की वस्तुओं के उत्पादन एवं विक्रय के लिए बनाई गयी थीं। समूची आवश्यकता को देखते हुए वे प्रयत्न यद्यपि पूरे नहीं थे, फिर भी इस नाते वे अमूल्य ही थे कि एक बुनियादी विचार को जो मोटे-तौर पर पुर्टोरिको के लिये नया था, और सहकार के बुनियादी अनुशासन को, जिसकी जड़ें रोगग्रस्त भूमि में केवल धीरे-धीरे और कठिनाई से ही जमती हैं, स्थापित करनेकी दिशा में राहत-निधि से व्यय किया गया।

आधुनिक मानदंडों की दृष्टि से मछली-पालन और जूता-निर्माण के कार्य भी अपर्याप्त थे, परन्तु फिर भी, उन से विभिन्न प्रकार के कौशल का विकास हुआ, पहले सदैव से कृषि-प्रधान रहे समाज में नये विचारों की पौध जमी और फलतः एक मूल्यवान सामाजिक-परीक्षण की सिद्धि हुई।

राहत-प्रशासन के सिलाई-उद्योग में जिन पांच हजार महिलाओं को आजीविका मिलती थी, उन्हें मुख्य महिला कार्यकर्त्ताओं द्वारा लगातार सावधान किया जाता रहता था कि वे धीमें चलें, बहुत तेजी से काम न करें, ताकि कहीं वेतन पर व्यय की जाने वाली धन-राशि सामग्री पर खर्च करने हेतु राजनीतिक दृष्टि से निर्धारित राशि से घटकर कम न हो जाय। परन्तु इन महिलाओं ने हाथ से सिलाई कर अथवा पुराने ढङ्ग की सिलाई मशीन को पैरों से चला कर काम किया और हजारों कपड़े तैयार कर दिये, जो बाद में प्रत्यक्ष-सहायता के रूप में दे डाले गये।

लोक-कल्याण गतिविधियों में बाल-कल्याण, मानसिक- स्वास्थ्य और मानसिक-चिकित्सा, परीक्षणावधि एवं पेरोल, चिकित्सा-समाज-सेवा, अनुसंधान एवं आयोजन, पौष्टिक-आहार एवं गार्हस्थ्य-अर्थ शास्त्र, मनोरंजन, समाज-सेवा प्रशिक्षण, सामाजिक विधि-विधान और कानूनी-सलाह तथा अन्तर-एजेंसी-सेवा और प्रत्यक्ष सहायता सम्मिलित थे। फिर सामाजिक-दृष्टि से उनका प्रभाव कुल मिलाकर चाहे कुछ भी रहा हो, परन्तु इन गतिविधियों ने कई आधुनिक-विचारों को जो कृषि-प्रधान पुर्टोरिकों के लिए अपेक्षाकृत नये थे, प्रविष्ट किया अथवा उनकी स्थापना की तथा कई व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना आरम्भ किया जो बाद में, १९४० के पश्चात् द्वीप के आधुनिकीकरण एवं पुनर्निर्माण के कई पहलुओं के कार्य-संचालन में समर्थ हो सके। सर्वाधिक महत्व का एक कार्यक्रम मातृ-स्वास्थ्य केन्द्रों का था, जहाँ वे महिलाएँ सलाह एवं संतति-निग्रह के साधन प्राप्त करती थीं, जिनके लिये और संतान होना घातक था। इन केन्द्रों में सदैव भीड़ रहा करती थी।

१९३९ में भी जन संख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा परिवार-नियोजन हेतु सहायता पाने के लिये उद्विग्न था।

शिक्षा-क्षेत्र में "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन" ने बाल एवं प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम हेतु बेरोजगार अध्यापकों एवं अन्य व्यक्तियों को संगठित कर इस द्वीप की सरकार के प्रयत्नों में सहायता पहुँचाई। वहाँ भी, वास्तविक आवश्यकता में से केवल एक अंश की ही पूर्ति की जा सकी। क्योंकि धन राशि सीमित थी, एक परिवार का एक ही बालक नरसरी स्कूल में स्थान पा सकता था।

सरकार और म्युनिसिपल प्रशासनों की आर्थिक कठिनाईयों के कारण जब जन-स्वास्थ्य-सेवा लगभग पूर्णतया छिन्न-भिन्न हो गयी, "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन" ने कई चिकित्सा केन्द्रों एवं औषधि-वितरण-केन्द्रों का भार अपने ऊपर ले लिया।

ग्रामीण, एवं उसी प्रकार शहरी-क्षेत्रों में आवास-व्यवस्था को सुधारने के प्रयत्नों के फलस्वरूप गन्दी-बस्तियों के उन्मूलन कार्यक्रम की दिशा में एक छोटा सा, किन्तु वास्तविक कदम उठाया, जिसके लिये पुर्टोरिको आज संसार में प्रसिद्ध हो चुका है।

दूरगामी परिणामों की दृष्टि से, "पुर्टोरिको संकट-कालीन सहायता प्रशासन" का आयोजन गवेषणा कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य आंशिक रूप से शिक्षित बेरोजगारी की शक्ति का उपयोग करना था, कदाचित सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। उसने द्वीप की वास्तविक समस्याओं की ओर, कार्यक्रमों एवं योजनाओं की ओर, जो इन समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक थे, और बहुत बार उन बाधाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया जो प्रभावकारी कार्यवाही करने के मार्ग में सामने आयीं। तथापि, यह मंतव्य कदापि नहीं है कि ऐसी गतिविधियों के लिए प्रथम प्रेरणा संघीय एजेंसी से प्राप्त हुई। अनेक पुर्टोरिकी लम्बे समय से अपनी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं की अनेक बारीकियों का विश्लेषण करते जा रहे थे और इस द्वीप की सरकार के विविध विभाग एवं कार्य-केन्द्र कुछ समय से ऐसे विश्लेषणों का प्रकाशन कर रहे थे। महत्व की बात यह थी कि अब संघीय-एजेन्सी ने द्वीप के कल्याण की भावना से कार्य हाथ में लिया, संघीय निधि का उपयोग इस द्वीप में होने लगा और, परिणाम स्वरूप, इस प्रकार दर्जनों पुर्टोरिकी, पुर्टोरिकियों की कठिनाइयों के अनेक पहलुओं से अधिक भली प्रकार अवगत होने लगे। यह प्रयत्न उस शृंखला की ही एक कड़ी था जिसे प्रत्यक्ष रूप से इस द्वीप के आज की—जबकि पुर्टोरिको अपनी सामाजिक वैज्ञानिक-नियोजन में विशिष्ट है—अवस्था का मार्ग प्रशस्त करना था।

नियोजन एवं विकास विभाग की गतिविधियाँ सटकर के क्रियान्वय की पड़ताल से आरम्भ होकर, रोजगार एवं रोजगार-योग्यता और अन्त में समुद्र-पार के व्यापार तक फैली हुई थीं। उनमें परि-

व्यक्त बालकों और मिथ्या-भाषिता का अध्ययन, कृषक-सर्वेक्षण, खनिक-साधनों सम्बन्धी अनुसंधान, और पुर्टोरिको की संभावित मूल्यवान फसलों के रूप में लहसुन, अदरक तथा वनीला की खेती के परीक्षणों का समावेश भी था। ये गतिविधियाँ, पौष्टिक-आहार के अध्ययन, मोनरंजन गतिविधियों, तपेदिक की रोकथाम, म्युनिसिपल व्यय एवं कृषि-ऋण के क्षेत्र में भी फैलने लगीं। इन सब से एक व्याधिग्रस्त समाज के ढाँचे का और इस प्रश्न का स्पष्टीकरण हो गया कि वह व्याधिग्रस्त क्यों और कैसे हुआ।

पुर्टोरिको अपने को इस भयावह भ्रमजाल से मुक्त करने में समर्थ क्यों नहीं हो सकता था? स्थानीय व्याधियों के उपचार का हर स्थानीय प्रयत्न क्यों असफल होता था? "पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" ऐसे प्रश्नों को अब हाथ में लेने लगा था और इस तथ्य का अर्थ मात्र यह नहीं था कि उन विषयों से अब कई पुर्टोरिकी अवगत हो चले थे, परन्तु उसका अर्थ यह भी था कि वाशिंगटन से आने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पुर्टोरिकी सम्बन्धी शिक्षा काफी बढ़ चुकी थी।

द्वीप पर एक भारी राजनीतिक विक्षोभ छा गया। मंदी के वर्षों में स्वतंत्रता की भावना ने जो जोर पकड़ा था उस का मुख्य उद्गम विद्यमान आर्थिक परिस्थितियों में था। अनेक पुर्टोरिकियों की धारणा थी कि इन परिस्थितियों के उपचार का कार्य अमेरिकी-शासन के अधीन नहीं किया जा सकता। परन्तु स्वतंत्रता के प्रतिपादक उसका विभिन्न स्वरूपों में प्रतिपादन करते थे एवं उसकी उपलब्धि हेतु—कुछ तो अमेरिका के प्रति घृणा की भावना को और बहुत से मैत्री की भावना को; जो पुर्टोरिको और अमेरिका दोनों ही के निवासियों की सुविधा का विषय होती-विविध साधन बतलाते थे। ये दो दल,-पहला संख्या में छोटा होते हुये भी आचरण में कट्टर था, दूसरा संख्या में बड़ा होने पर भी विवेकी और अपने तौर-तरीकों में प्रजातांत्रिक था,—

उत्तेजनापूर्वक एक दूसरे का विरोध करने लगे। समाज-व्यवस्था की चोटी पर अपेक्षाकृत धनवान लोग थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के हर विचार को, उन पर होने वाले उसके आशंकित प्रभाव के कारण, अस्वीकार किया और 'राज्यत्व' की प्राप्ति हेतु अपना संघर्ष जोर शोर से चलाया।

ऐसे पुर्टोरिकी कितने कम थे कि जिन्हें १९३५ में यह कल्पना हो सकती थी कि मन्दी के वर्षों की वेदना नई विश्व-शक्तियों को उन्मुक्त कर, ऐसी नई क्रान्तिकारी प्रक्रिया को गति प्रदान करेगी जो शीघ्र ही पुराने विचार-मानों में परिवर्तन को आवश्यक बना देगी। उन्हें यह कल्पना नहीं हो सकती थी कि उपनिवेशवाद का दीवालियापन उन राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का निर्माण करेगा जिनके अंतर्गत,—अमेरिकी-शासन में ही और अन्य किसी भी शासन की अपेक्षा, उस शासन में अधिक भली प्रकार, पुर्टोरिको की रक्षा करना आखिरकार संभव हो जाएगा।

अध्याय ५

दुखद मतिविभ्रम

१६३० के आस पास के वर्षों में समूचे कैरीबियन-क्षेत्र पर विक्षोभ की जो लहर दौड़ गयी उसका प्रभाव, समीपवर्ती द्वीपों की अपेक्षा पुर्टोरिको में उतना गहरा नहीं था। एक कारण यह था कि पुर्टोरिकी परम्पराओं एवं स्वभाव से शांति प्रिय हैं; दूसरा यह कि अमेरिका अन्य औपनिवेशिक एवं सार्वभौम सरकारों की अपेक्षा सहायता कार्य पर अधिक धन व्यय कर सकता था। परन्तु, पुर्टोरिको में भी तम्बाकू एवं चीनी-उद्योगों में हड़तालें होने लगीं, और राजनैतिक तनाव बहुत चढ़ गया।

बहुत कम लोगों का समर्थन प्राप्त होने पर भी अधिकतम शोर मचाने वाला नेता, हार्वर्ड का स्नातक, पेड्रो अल्बिज़ु कम्पोस था। उसने अपने राजनीति दर्शन का आधार, पुर्टोरिको की वास्तविकता और आवश्यकताओं से नहीं, वरन् देश भक्ति की उस व्यापक धारणा से ग्रहण किया, जो इस समय तक वक्तृत्व कला और इतिहास के अति-साधारणीकरण के कारण पुरानी एवं घिसीपिटी हो चुकी थी।

विविध अमेरिकी क्रान्ति के ये भावनात्मक तत्व थे। दक्षिण अमेरिका के कई भागों में, जिनका राष्ट्रों के रूप में स्पेनीय, केथोलिक संस्कृति और स्वतन्त्रता की सीमित स्पेनीय धारणा के साथ, उदय हुआ, अमेरिका की परिभाषा, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों के दौरान में, संस्कृति के भारी शत्रु, भौतिकवादी और उत्तर के 'भीमकाय प्रोटेस्टेन्ट' के रूप में की जाने लगी।

इन सभी तत्वों को एक आग उगलने वाले वक्ता में सम्मिलित कर दीजिये और आपको कदाचित्, एक ऐसा विस्फोटक मिश्रण प्राप्त हो जायेगा, जिसमें अन्धी किन्तु उत्तेजक देशभक्ति के माध्यम से भावनाओं को भड़काने और प्रवाहित करने हेतु तत्पर विभिन्न आयु वाले थोड़े से दारिद्र्य-ग्रस्त व्यक्तियों के लिये गहरा आकर्षण विद्यमान होगा। आल्बिजु ने प्राचीन व्यवस्था के दर्पण में अपने आपको देखा था और अभी भी देख रहे हैं। अपने समस्त सार्वजनिक जीवन में उसने अमेरिका के प्रति तीक्ष्ण घृणा युक्त अंधी एवं भावना प्रधान देशभक्ति का उपयोग, लगभग पुर्टोरिको की व्याधियों की नाजुकता और वास्तविकता पर पर्दा डालने के लिये किया। उस युग में जिसमें उपनिवेशवाद लुप्तप्राय हो चुका है और राष्ट्रवादी स्वतन्त्रता का स्थान ग्रहण करने हेतु परस्परावलम्बन ने जन्म-ग्रहण कर लिया है, जिसमें अब मुक्ति-सेनाएँ—उन देशों को छोड़ जहाँ साम्यवादी उनका उपयोग अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु करते हैं—लोकप्रिय अथवा शक्य नहीं रह गई हैं, उसने अपने ही तरीके से अमेरिका के विरुद्ध हमला बोल रखा है।

उसके अनुयायी अपने आप को राष्ट्रवादी कहते हैं, इस दल का आरम्भ एक वैध दल के रूप में हुआ था। तथापि इस प्रकार, १९३२ के मदी के वर्ष में, वे उस प्रथम एवं एकमात्र चुनाव में जिसमें उन्होंने भाग लिया, सफलता प्राप्त नहीं कर सके। उसके बाद से इस दल की सदस्य संख्या लगातार कम होती जा रही है किन्तु इसी के परिणाम-स्वरूप अधिक कट्टर हो चली है। आज वह किसी भी अर्थ में राजनीतिक पक्ष नहीं रह गया है, वरन् पुर्टोरिको के अधिकृत अनुमानों के अनुसार कुछ सौ की संख्या में आतङ्कवादियों का एक दल है।

मैं ये पंक्तियाँ ९ मार्च १९५४ को, वाशिंगटन में चार राष्ट्रवादियों के दुःखद कृत्य से संसार को धक्का लगने के कोई एक सप्ताह से

कुछ अधिक समय बाद, लिख रहा हूँ। १ मार्च को, केराकास में अन्तर अमेरिकी मामलों के दसवें सम्मेलन के प्रथम दिन, राष्ट्रवादी-पक्ष के चार सदस्य, एक महिला और तीन पुरुष, अकस्मात् हाउस आफ रिप्रिजेन्टेटिव्ह की दीर्घा में उठ खड़े हुए, उन्होंने पुर्टोरिको की आजादी का घोष किया और सदन पर गोलियाँ बरसाना आरम्भ कर दिया, परिणामस्वरूप काँग्रेस के पाँच सदस्य घायल हुए। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं थी कि प्रहार किस पर किया जा रहा है। लोलिश लेब्रोन नामक उस महिला के कथनानुसार, केराकास में अमेरिका के सम्मुख कठिनाई उपस्थित करने के उद्देश्य से, संसार के समाचार पत्रों को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु वे कृतसंकल्प थे।

लगभग समस्त पुर्टोरिकी के निवासी और उनके नेता इस दुःखद कृत्य के कारण समान रूप से आहत हुए और इस आशंका से पशोपेश में पड़ गये कि उनका और उनकी प्रतिष्ठा का क्या होगा। वे यह न समझ सके कि यह कृत्य ऐसे समय क्यों किया गया जब कि उनका समाज, पिछले दशक में से मिले निष्पक्ष सहयोग के कारण, अपने इतिहास में किसी भी अन्य काल से अधिक अच्छी स्थिति में था।

यह स्पष्ट ही है कि पुर्टोरिको में परिस्थितियाँ जितनी सुधरीं; राष्ट्रवादी उतने ही कट्टर हो गये। इस रूप में वे अतुलनीय आतकवादी हैं कि वे ऐसी बुराईयों के विरुद्ध, ऐसी पुरानी धारणा का पक्ष लेकर जिसकी वैधता दिन प्रति दिन घटती जा रही है और जो विश्व के लिये पुरानी पड़ चुकी है, लड़ रहें हैं जिनका उन्मूलन मोटे रूप से किया जा चुका है। सचमुच, वे ऐसे कट्टर व्यक्ति की परिभाषा में उपयुक्त उतरते हैं जो अपने लक्ष्य को पूर्णतया भूल चुकने के बाद अपने प्रयत्नों को द्विगुणित करता है।

१ मार्च, १९५४ की दुःखद घटना उस आतंकपूर्ण कार्यवाही का स्पष्टता से स्मरण दिलाती है जो चार वर्ष से भी कम समय पूर्व की गयी थी।

१ नवम्बर १९५० को राष्ट्रवादी वाशिंगटन के पेनसेल्वानिया एवेन्यू नामक मार्ग पर आये। उनके नाम थे : ग्राइसेलियो टोरेसोला और आस्कर कोलाझो। जब वे ब्लेयर हाउस के सामने पहुँचे, जहाँ उन दिनों प्रेसिडेन्ट टू्मैन रहते थे, उन्होंने रिवाल्वर निकाले और अस्थायी व्हाइट-हाउस के प्रवेश पर तैनात रक्षकों पर गोलियाँ दागना आरम्भ कर दिया—मानों उन पर अंदर घुसने और प्रेसिडेन्ट की हत्या करने का पागलपन सवार था। गोलियाँ चलने से एक रक्षक की मृत्यु हो गयी। टोरेसोला मारा गया। कोलाझो घायल हुआ और अस्पताल और जेल भेज दिया गया। ब्लेयर हाउस के तीसरे तल्ले पर प्रेसिडेन्ट ट्रूमैन को सामने खुलने वाली खिड़की से, जहाँ वे यह देखने पहुँचे थे कि शोरगुल किस लिए है; हटा दिया गया।

इस और पहले के विस्फोटों में हताहत-संख्या इस प्रकार रही : ७ पुलिस वाले मारे गये और २१ घायल हुए, १ नेशनलगार्ड मारा गया और ११ घायल हुए, १ फायरमैन मारा गया और १ घायल हुआ, १८ राष्ट्रवादी मारे गये और ११ घायल हुए, समीप खड़े २ नागरिक मारे गये और ७ जख्मी हुए।

निःसंदेह इस रक्तपात का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रवादियों की ओर, जो अपने आप को पुर्टोरिकी देश भक्त कहते थे, संसार का ध्यान आकर्षित करने और इस मिथ्या कल्पना को नाटकीय स्वरूप प्रदान करने का रहा कि एक सूरवीर जनता यांकी अमेरिकी दमनकर्त्ता के जुए को उतार फेंकने के लिये अचानक उठ खड़ी हुई है। तथापि उन सभी को, जो पुर्टोरिको को जानते हैं और जानते थे, यह भली भाँति

ज्ञात था कि राष्ट्रवादी पुर्टो रिकी जनता में नगण्य हैं और उनमें उस जनता के विचारों एवं भावनाओं की सही अभिव्यक्ति नहीं है।

राष्ट्रवादियों को सर्वाधिक नैतिक-समर्थन साम्यवादी क्षेत्रों से, मिलता प्रतीत होता है, जो पूंजीवादी-दुनिया के किसी भी हिस्से में और, बहुधा अभी भी मुक्ति और स्वतंत्रता के पुरानी धारणाओं से चिपटे रहने वाले हैं, और इसी के साथ हाल के वर्षों की पुर्टो रिको की घटनाओं के प्रति सर्वथा अनभिज्ञ रहते हुए दक्षिण अमेरिका में होने वाली गड़बड़ी से लाभ उठाने के लिए कुछ शेष नहीं रखते हैं।

इसमें जरा भी संदेह नहीं हो सकता कि पेड्रो आल्विज़ू केम्पोस एक भारी व्याधि से ग्रस्त थे और अभी भी हैं। वे विगत की एक भारी भूल का साकार थे और अभी भी हैं तथा पुरानी स्पेनीय संस्कृति के प्रति कट्टर निष्ठा मिश्रित अंधी अमेरिकावाद-विरोधी उस शक्ति के प्रतिनिधि हैं जो कुछ दशक पूर्व समूचे दक्षिण-अमेरिका में सबल थी।

१ मार्च १९५४ की भयावह घटना के तुरन्त ही पश्चात् गोलियों से आहत कांग्रेस सदस्यों के प्रति दुःख एवं शोक के निष्ठापूर्ण संकेत एवं अमेरिका के प्रति वफादारी की पुष्टि स्वरूप गवर्नर मुनजो मारिन एवं उनकी धर्म-पत्नी ने वायुयान द्वारा तुरन्त वाशिंगटन के लिये प्रस्थान किया। समूचे अमेरिका के समाचार पत्रों ने इस यात्रा के पक्ष में अनुकूल विचार व्यक्त किये। घायल कांग्रेस-सदस्यों की धर्म-पत्नियों ने श्रीमती मुनोज मारिन को एक भोज दिया। शिकागो में, कई पुर्टोरिकियों ने, यह सुनने पर कि, कांग्रेस सदस्य बेंटली को रक्तदान की आवश्यकता है; वफादारी के स्वरूप स्वयं अपना रक्त दिया। पुर्टोरिको और पुर्टोरिको के मित्रों ने वास्तविक परिस्थिति समझाने एवं इस प्रकार पुर्टोरिको को दोष से मुक्त करवाने के लिये संसार भर के समाचार पत्रों में लेख लिखे। दक्षिण अमेरिका में भी, जहाँ पहले आल्विज़ु के अनुयायी और समर्थक सर्वाधिक संख्या में

थे, उसके और उसके उद्देश्य के प्रति सम्पादकों ने इतनी नगण्य मात्रा में सहानुभूति व्यक्त की कि वह लगभग नहीं के बराबर ही थी। क्योंकि गोलीकांड केराकास-सम्मेलन में अमेरिका के समक्ष कठिनाई उपस्थित करने के उद्देश्य से किया गया था ; उस सम्मेलन में अमेरिकी देशों में उपनिवेशवाद की भर्त्सना करने वाले प्रस्ताव की भावना से पुर्टोरिको सर्वथा पृथक रहा। दक्षिण अमेरिका की सरकारों के विचार से पुर्टोरिको आज उपनिवेश नहीं रह गया है।

राष्ट्रवादी दिनों दिन घटते गये। इस पुस्तक के लिखे जाने के समय उनके नेता जेलों में हैं—आल्विजु कम्पोस को एक जेल-अस्पताल में रखा गया है। किन्तु हो सकता है उनकी संख्या घटने के साथ शेष राष्ट्रवादियों की कट्टरता बढ़ती जाय। ऐसा प्रतीत होता है कि, १ मार्च १९५४ के गोलीकांड ने, इस महत्वपूर्ण तथ्य को स्पष्ट कर दिया है : इन आतङ्कवादियों के उद्देश्य की खोज तर्क की नहीं ; वरन् असामान्य मनोविज्ञान की दुनिया में, की जानी चाहिये।

—×—

अध्याय ६

नेता का विकास

लुइस मुनोज रिवेरा वह व्यक्ति थे जिन्होंने स्पेन से स्व-शासन का वह अल्पजीवी अधिकार-पत्र प्राप्त किया था जो अमेरिका का शासन स्थापित होते ही समाप्त कर दिया गया। अधिकारों के लिये जूझने वाले समाचार-पत्र ला डेमोक्रेसिया के वे संस्थापक तथा सम्पादक-स्वामी थे और अपने समय के इस द्वीप के महानतम एवं सम्मानित राजनीतिक-व्यक्ति थे। अधिकांश राजनीतिक-नेताओं के विपरीत वे अधिक बहुरंगी राजधानी सेनजुआन की बजाय पर्वतीय-क्षेत्र में रहते थे। वे उन लोगों के दल में से थे जो, उन्नीसवीं शताब्दि के दौरान, पुर्टोरिको की जनता को उसके अपने स्वाभिमान, अपनी समस्याओं और अपने अधिकारों के प्रति जागृत करने—एवं उन्हें एक सीमा तक सांस्कृतिक एकता प्रदान करने हेतु परिश्रम कर रहे थे। राजनीतिक दृष्टि वे पुर्टोरिको के स्वशासन के पक्षधर थे। वे उन लोगों में से थे जिन्हें '१८८७ के भयावह वर्ष' के दौरान, जबकि एक स्पेनीय गवर्नर ने सांस्कृतिक प्रगति के चक्र को आतङ्क एवं जासूसी की सत्ता से और कारावास की सजाओं से रोकने की चेष्टा की, जेल भेजे गये थे। वे द्वीप की ग्रामीण जनता के प्रिय थे। मुनोज रिवेरा, लुइस मुनोज मारिन के पिता थे। यशवन्त नाम की परम्परा मुनोज मारिन को उनके राजनीतिक जीवन के प्रारम्भिक दिनों में सहायक रही, तथापि उन्होंने कभी पितृ-अर्जित ख्याति का पल्ला नहीं पकड़ा। अन्य पुर्टोरिकी नेताओं के समान रिवेरा की मृत्यु भी लगभग दरिद्रावस्था में ही हुई। ला डेमोक्रेसिया से होने वाली

छुटपुट, और सदैव ही अपर्याप्त आय के अतिरिक्त मुनोज रिवेरा के पुत्र को आर्थिक दृष्टि में अपना मार्ग—बहुधा काफी कठिनाइयों से—स्वयं ही बनाना पड़ा।

लुइस का जन्म १८६८ में सेनजुआन में और लालन-पालन न्यूयार्क और वाशिंगटन में हुआ जहाँ उनके पिता स्थायिक आयुक्त थे। वहाँ लुइस ने आरम्भ ही से अमेरिकी शासन के कार्य-संचालन एवं मनोविज्ञान की जानकारी ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। चौदह वर्ष की आयु में वे जार्ज टाउन विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुये, जहाँ उन्होंने कानून का अध्ययन किया। मुनोज जब स्टेटार द्वीप पर रहा करते थे एडविन मारखम उनके निकट-मित्र और पड़ोसी थे। मारखम ने 'दि मेनविथ दि हो' का विख्यात और अभी भी प्रामाणिक माना जाने वाला भाष्य लिखा, जो मानव से परिचय पाने एवं न्याय की उनकी वैयक्तिक भावनाओं का प्रमाण है। पुर्टोरिकी आज भी उन्हें अलवेट के नाम से पुकारते हैं, जिसका अर्थ है चारण; एक सम्मानित उपाधि।

उन्होंने अपने को, कवि के इस अर्थ में; कि वह सदैव ही स्थापित धारणाओं की अपेक्षा जनता की मनोभावनाओं को, जीवन के आदर्शात्मक विश्लेषण की अपेक्षा मानवीय समस्याओं, आशंकाओं और आकांक्षाओं को व्यक्त करता है;—एक महान कवि सिद्ध किया है। शिक्षाविद, कभी-कभी उनके भाषण एवं लेखों को एक ऐसे अशिक्षित व्यक्ति के भाषण व लेख बतलाते हैं जिसे उन विविध विचार-धाराओं की कोई जानकारी नहीं जिन पर इस संसार का काम-काज आधारित माना जाता है। मानवतावादी उन्हें एक ऐसे महत्वपूर्ण तथा सशक्त नेता की अभिव्यक्ति मानते हैं जो अपने विचारों का मेल, शास्त्रसंगत-धारणाएँ चाहे कुछ भी क्यों न हो; सदैव मानवीय वास्तविकता से बैठता है।

मैं यह १९५४ में, मुनोज से मेरी पहली भेंट के कोई तीस वर्ष पश्चात् लिख रहा हूँ। उन्होंने अपने प्रिय पुर्टोरिको को उसकी पिछली कंटकाकीर्ण, टूटी-फूटी राह से निकाल कर एक लम्बे पथरीले और चढ़ाईदार मार्ग ; जालदा-अरिबा तक पहुँचाया ; जालदा अरिबा बारम्बार उनका चुनाव का नारा रहा है। नेता के नाते उन्होंने बीस लाख से अधिक पुर्टोरिकियों एवं साथी अमेरिकनों का दायित्व ग्रहण किया है। मैंने अब तक जितने भी राजनीतिक नेताओं के बारे में सुना है उनसे कहीं अधिक गंभीरता से वे इस उत्तरदायित्व को ग्रहण करते हैं।

उन्होंने ऐसे कर्तव्यनिष्ठ, गंभीर और उत्तरदायी स्त्री-पुरुषों के शासन का निर्माण किया है, जिनका मुनोज के रंगमंच पर आने के पूर्व, शासन संचालन से कोई वास्ता नहीं था। इस शासन के समक्ष उन्होंने निष्ठावान, गंभीर और उत्तरदायी व्यक्ति का आदर्श उपस्थित किया है।

आयु और उत्तरदायित्व दोनों ही दृष्टियों से परिपक्व मुनोज अपनी परिश्रमी-सरकार के किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक परिश्रम करते हैं। फोरटालेझा में वे सर से पैर तक, पूरे प्रशासक हैं। सेनजुआन से बाहर, अपने घर में वे विश्राम करते हैं। वहाँ वे अपने मित्रों को आमन्त्रित करते हैं। उनके चारों ओर व्यक्ति होना चाहिये ताकि वे अपने बुद्धि-वैभव का निखार कर सकें।

जैसा कि बहुतों के साथ होता है, जीवन की विषमताओं ने उन्हें अपनी पहली धर्मपत्नी से पृथक कर दिया। परन्तु मुनाले का पुर्टोरिको में, वाशिंगटन और न्यूयार्क में तथा समूचे दक्षिण अमेरिका में उन्हें जानने वाले आज भी उनका समान रूप से आदर करते हैं क्योंकि लुइस से उन्हें तलाक मिले कई वर्ष बीत चुके हैं। आज, मुनोज की धर्मपत्नी हैं सिन्योरा इनीज मेन्डोजा डि मुनोज मारिन

जो पुर्टोरिको की प्रथम महिला के नाते, दयावान और अत्यधिक सक्रिय हैं।

हाल के वर्षों में मुनोज की वर्तमान संस्कृति परिवर्तन के प्रति अत्यधिक दिलचस्पी हो गई। आर्थिक-अव्यवस्था और उपनिवेशवाद की मानवीय-पीड़ा से पुर्टोरिको को निकाल कर गतिपूर्वक द्वीप का आधुनिकीकरण आरम्भ कर और उसे औद्योगिकीकरण और आर्थिक विकास के अन्य तरीकों से मुक्ति के पथ पर अग्रसर करने के पश्चात् आज उनका अधिकाधिक ध्यान पुरानी स्पेनीय संस्कृति पर हो रहे प्रभाव पर लगा हुआ है। वे नहीं चाहते कि पुर्टोरिको दूसरा न्यू मेक्सिको अथवा केलिफोर्निया बन जाय। वे अपने देशवासियों से जोर देकर कह रहे हैं कि अपनी सांस्कृतिक बुनियाद अक्षुण्ण रखी जाय, स्पेनीय भाषा को, उसमें अमेरिकीवाद की, जिसके कि वे प्रकांड ज्ञाता हैं, मिलावट किये बिना, अपनी भाषा के रूप में कायम रखा जाय, दाक्षिणात्य संस्कृति के शूर-वीरों की परम्पराओं का अनुसरण किया जाय और फैक्ट्रियों में काम के घन्टे गुजारते हुये भी अपने पुराने, प्रजातांत्रिक, सारल्यपूर्ण जीवन को कायम रखा जाय।

— × —

अध्याय ७

हितसाधक

पुर्टो रिको में बिगड़ती हुई परिस्थितियाँ और उपनिवेशवाद के अन्तर्गत इस के उपचार हेतु कुछ भी कर सकने की स्पष्ट असंभावनाओं ने मुनोज का विश्वास और भी दृढ़ कर दिया कि पुर्टो रिको की मुक्ति के लिये स्वतंत्रता आवश्यक है। तथापि यह विश्वास इस अर्थ में आल्बिजु कम्पोस के विश्वास से पूर्णतया भिन्न था कि उसमें अमेरिका के प्रति दुश्मनी की कोई भावना नहीं थी। वास्तव में, जहाँ पुर्टो रिको के अति-देशभक्त मुनोज को अमेरिका-विरोधी मानते थे, वहाँ, वे निःसंदेहात्मक रूप से पुर्टो रिको के समस्त राजनीतिक-नेताओं में सर्वाधिक अमेरिका, और अमेरिकी के सबसे बड़े सच्चे मित्र थे। उन्होंने सदैव ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वे स्वतंत्रता शांतिपूर्ण तरीकों एवं पारस्परिक सहमति से तथा पुर्टो रिको की जनता और अमेरिका की जनता के पारस्परिक लाभ के लिये चाहते हैं।

१९३६ के पश्चात् राजनीतिक—स्थिति के सम्बन्ध में मुनोज ने अपने विचार बदलने आरम्भ किये और शनैः शनैः वे अपनी आज की नीति पर पहुँचे कि विद्यमान परिस्थितियों में पुर्टो रिको की मुक्ति अमेरिका से सम्बन्ध बनाये रखने पर निर्भर है। उस वर्ष की समाप्ति के कुछ महीनों पूर्व तक, फिर भी उन्हें पुर्टो रिकों की समस्या का राष्ट्रीय सार्वभौमत्व की प्राप्ति के अतिरिक्त और कोई हल नजर नहीं आ रहा था।

उनका तर्क था कि अमेरिकी तटकर के संरक्षण के मुख्य रूप है महाद्वीप चीनी—कम्पनियों को मिल रहे थे, परन्तु उसकी हानियाँ,—

जिन में आवश्यक रूप से अमेरिका में खरीदी गयीं एवं खर्चीले अमेरिकी जलपोतों द्वारा पुर्टोरिको लायी गयी सामग्री के लिये भारी कीमत चुकाना मुख्य थीं,—सभी पुर्टोरिकियों को भुगतना होती थी। उन्हें भूमि सुधारों की आवश्यकता अनिवार्य प्रतीत होने लगी, किन्तु इन सुधारों के लिये निर्बाध रूप से कार्य करते रहने पर भी, उनका यह विश्वास था कि एक औपनिवेशिक सरकार, जिसका मुख्य कार्य पुर्टोरिको में अमेरिका के हितों की रक्षा करना है, उनकी अनुमति कभी नहीं देगी। उन्हें यह वांछनीय प्रतीत होने लगा कि पुर्टोरिको में नये उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिये : परन्तु विद्यमान परिस्थितियों में यह भी उन्हें असंभव ही लगता था।

खाद्यान्नों की स्थानीय खेती, जिसमें उपयुक्त यातायात, साख और वितरण तथा माल तैयार करने की व्यवस्था का अभाव था, महाद्वीप की बहुत अधिक संगठित एवं औद्योगीकृत खाद्यान्न-खेती का मुकाबला नहीं कर सकती थी; परिणाम यह होता था कि हमेशा ही, चढ़ती हुई कीमतों पर, जिसे देने की हैसियत पुर्टोरिकियों की नहीं थी,और अधिक खाद्यान्न निर्यात करना होता था। इतना ही नहीं, अमेरिकी शासन के अधीन, दबाव डालकर पुर्टोरिको के तटवर्गी नौका परिवहन कानून की परिधि में समविष्ट कर लिया गया था, जिसका अर्थ था माल-लाने ले जाने की ऊँची दरें, जीवन-यापन एवं व्यापार के व्यय को और भी चढ़ा देंगी।

मुनोज को राजनीतिक स्वतंत्रता के विषय—जिसका यह नहीं तो कुछ भी नहीं के रूप में और आर्थिक व सामाजिक मुक्ति की दिशा में प्रथम चरण के रूप में वे व्यापक प्रचार करने लगे थे – और कोई उपचार नजर नहीं आया।

इन तर्कों का उपयोग उन्होंने १९३२ से १९३६ तक, जबकि वे पुर्टोरिको के विधान मंडल में सिनेटर थे;अपने साथियों पर किया था। विकास-वाद के सिद्धान्त में आस्था रखते हुए उन्होंने प्रभुसत्ता के लिए

अधिकतम तैयारी की दिशा में पुर्टो रिकी अर्थ-व्यवस्था एवं मनोदशा को नया स्वरूप प्रदान करने के लिए अपने पूरे यत्न किये, और उस प्रभुसत्ता को शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण तरीके से प्राप्त करने के अवसर की प्रतीक्षा में रहे।

मुनोज के कुछ मित्र और अनुयायी,जो एक नेता के रूप में उनके समर्थक थे, फिर भी स्वतंत्रता के प्रश्न पर उनका साथ नहीं दे सके उनका तर्क था कि एक प्रभुसत्ता राष्ट्र के रूप में पुर्टोरिको की अमेरिकी तटकर की ढाल के संरक्षण से अलग होगा,यदि उसे अपनी चीनी पर देने पड़े, उसकी चीनी क्यूबा की चीनी का जिसकी उत्पादन लागत कम है, मुकाबला नहीं कर सकेगी; सामाजिक अर्थों में पुर्टो रिको का चीनी उद्योग बुरा होते हुए भी, द्वीप की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार है और इस आधार के खिसक जाने का अर्थ होगा पुर्टो रिको का विनाश। प्रभुसत्ता राष्ट्र के रूप में पुर्टो रिको उस संघीय आर्थिक सहायता की एवं संघ द्वारा दी जाने वाली उन अन्य सुविधाओं की अपेक्षा नहीं कर सकेगा, जो कि द्वीप की व्यवस्था को समेट कर संभाले हुए हैं; इनकी समाप्ति, और उसके साथ चीनी उद्योग का होने वाले विनाश का अर्थ होगा; अवश्यंभावी सामाजिक और आर्थिक अवस्था। प्रभुसत्ता राष्ट्र के रूप में पुर्टो रिको को, भूमि सेना, नौ-सेना के लिए और अभी वाशिंगटन द्वारा किये जा रहे अनेक सरकारी काम के लिए; अत्यन्त भारी और नया सरकारी-व्यय वहन करना होगा।

इस प्रकार स्वतंत्रता के प्रश्न पर विवाद चलता रहा। वास्तव में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं था—और पुर्टो रिको निराशा में अधिकाधिक डूबता जा रहा है। तथापि मुनोज मात्र सिद्धान्त के लिए किसी सिद्धान्त का अनुसरण करने वाले कभी नहीं रहे। १६४० तक वे इतनी दूर आ गये थे कि अपने आन्दोलन के आधार रूप स्वतंत्रता से अपना सम्बन्ध तोड़ नहीं सकते थे। बाद में जब

परिस्थितियाँ बदलीं, उनके साथ वे भी बदले। १९३५ से बहुत भिन्न आज की परिस्थितियों और सम्बन्धों में मुनोज स्वतंत्रता को आशंकापूर्ण बुराई और पुर्टोरिको के निवासियों की जीविकोपार्जन तथा स्वतंत्र एवं प्रजातांत्रिक समाज में आचरण करने की—अनिवार्य स्वाधीनताओं के लिए खतरा समझते हैं। जब आज वे 'अमेरिका से पृथक' स्वतंत्रता का विरोध करते हैं,उनका दावा है कि पुर्टोरिको,अमेरिका की कहीं अधिक सम्पन्न एवं सुरक्षित स्वतंत्रता का भागीदार है।

\+ \+ \+

मार्च १९३४ में जब रेक्सफोर्ड टगवेल वाशिंगटन में कृषि उपमंत्री थे, उन्होंने और श्रीमती रूजवेल्ट ने पुर्टोरिको की यात्रा की। इस समय तक मुनोज की एक छोटी सी विचार-विमर्श गोष्ठी संगठित थी जिसकी बैठकें किसी-किसी रविवार को विश्वविद्यालय के कुलपति डा० कार्लोस चार्डन के निवास-स्थान पर, पुर्टोरिको की यातनाओं एवं उनके संभव उपचार के संबन्ध में चर्चा करने हेतु हुआ करती थीं। मुनोज ने इन दोनो विशिष्ट अतिथियों को इस गोष्ठी के सदस्यों से मिलने के लिए आमंत्रित किया; वे इतने प्रभावित हुए कि चार्डन और दो अन्य—विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक रैफेल फर्नेन्डिज ग्रेसिया और मेनेन्डेज रेमोस, को पुर्टोरिको के आर्थिक पुनर्निर्माण हेतु एक ब्योरेवार योजना तैयार करने हेतु एक आयोग के रूप में वाशिंगटन आमंत्रित किया गया। मुनोज़ से कहा कि वे गैर सरकारी सदस्य के रूप में कार्य करें।

जल्दबाजी में तैयार किये गये और कुछ स्थानों पर आधुनिक प्रतिमानों की दृष्टि से अप्रामाणिक, चार्डन-आयोग के प्रतिवेदन में पुर्टोरिको के निवासियों के हित के लिए, पुर्टोरिको की अर्थ-व्यवस्था को पहले की अपेक्षा अधिक प्रभावशील बनाने हेतु उसका पुनर्रचना करने के लिए कई कार्यवाहियों और कार्यक्रमों की सिफारिश की गई थी। उनमें भूमि के पुर्नवितरण, ग्रामीण-क्षेत्रों के पुनर्वास, गन्ना पेरने वालों

और गन्ना उपजाने वालों के मध्य भावी संबन्धों के मान-दंड स्वरूप कम से कम एक चीनी-मिल की सरकार द्वारा खरीद एवं सञ्चालन, कहवा-उत्पादक क्षेत्रों के लिए कतिपय प्रकार की सहायता जिसमें तूफानों से बीमा भी सम्मिलित हो, सहकारिता के कार्य-क्रम, ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण के विस्तार पर और एक सीमेंट कारखाने की तथा पुर्टोरिको के औद्योगीकरण के आरम्भ और पुर्टोरिको यांत्रिकों के प्रशिक्षण में सहायता हेतु विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रयोगशालाओं की स्थापना पर जोर दिया गया था।

इस कार्यक्रम में ऐसे अनेक विषयों का समावेश था जो पुर्टोरिको की मुक्ति के लिये आवश्यक तो काफी पहले से समझे जाते थे, किन्तु जो मुनोज व दूसरों की सम्मति में पुर्टोरिको के अमेरिका का उपनिवेश रहते संभव नहीं थे। फिर भी, और आंशिक रूप में मुनोज के इस फुर्तीले हित साधन के कारण, यह कार्यक्रम वाशिंगटन के द्वारा स्वीकार कर लिया गया और नयी संघीय एजेंसी, पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन का मुख्याधार बना।

इस एजेंसी को कार्य-निधि के रूप में ४०० लाख डालर की राशि प्रदान की गयी ताकि प्रति वित्तीय वर्ष में अधिक धन माँगने की आवश्यकता न रहे। डा० अर्नेस्ट ग्यूनिंग "क्षेत्र निदेशक और पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन के प्रशासक" नियुक्त किये गये। निष्ठावान उदारवादी, जाज्वल्यमान साम्राज्यवाद-विरोधी और दक्षिण अमेरिका के मित्र के रूप में उनका कार्यकलाप पुर्टोरिको में, जहाँ उनकी नियुक्ति पर हर्ष मनाया गया, सुविख्यात था। डा० कारलोस चार्डोन ने ग्यूनिंग के सामान्य मार्गदर्शन में "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" का कार्य संभालने हेतु क्षेत्रीय प्रशासक का पद अंगीकार किया। ये दोनों और मुनोज—जो "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" में पद संभालने से इन्कार कर चुके थे—स्वदेश में मुक्तिदाताओं की त्रिकुटी के रूप में पुर्टोरिकियों के सच्चे नायक समझे जाते थे।

अध्याय ८

पुनर्निर्माण

अपनी ४०० लाख डालर की चक्रवान निधि के साथ "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने समाज को नया स्वरूप देने का कार्य आरम्भ किया। आज के पुर्टो रिको के अर्थशास्त्री एवं सांख्ययिक समूचे कार्यक्रम और "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" को, अपर्याप्त रूप से कल्पित एवं अपर्याप्त रूप से प्रशासित, सागर में एक बूंद मान कर बहुधा मुस्करा देते हैं। जैसा कि बहुधा होता है, यह उनकी गलती रहती है। "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" की उपलब्धियाँ, चाहे वे महान आवश्यकताओं की तुलना में कितनी ही अल्प और आधुनिक मानदंडों की दृष्टि से कितना ही कम क्यों न हों, फिर भी महान है। यह प्रशासन कितना ही छोटा और कितना ही अव्यवस्थित क्यों न रहा हो परन्तु महान विचारों, थोथी बातों के स्थान पर ठोस कार्य और यथार्थवादी सुधारों की दिशा में आरम्भिक कार्य के रूप में वह अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

"पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" की अपनी त्रुटियाँ भी थीं और उन सबसे सर्वाधिक भारी त्रुटि यह है कि यद्यपि उसकी मूलभूत योजना पुर्टो रिकियों ने तैयार की थी किन्तु फिर भी वह शासक देश द्वारा दान की भावनापूर्वक दिया गया और कठोरतापूर्वक नियंत्रित आंशिक मुक्ति का पुलिंदा थी। तथापि यह योजना वाशिंगटन के भूतकाल के रुख से इस प्रकार अत्यधिक और आश्चर्यजनक रूप में आगे बढ़ी हुई थी कि उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव बहुत लाभप्रद रहे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" एक महान विचार की अभिव्यक्ति था। जेम्स बोन पुर्टो रिको की आवश्यकताओं की पूर्तिस्वरूप उसकी अर्थ व्यवस्था को परिवर्तित करने हेतु "पुर्टो रिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" एवं "पुर्टो-रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" को वास्तव में प्रभावपूर्ण बनाने के लिए जितने वेग से कार्य करते रहे वाशिंगटन के निर्देशों से उनके मार्ग में सदैव उतनी ही बाधाएँ खड़ी होती रहीं। "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" के पूर्व का सहायता सङ्गठन, संघीय सहायता पर आधारित और इस द्वीप के समाज को उसके सर्वाधिक कठिन समय में अपने आपको सम्भाले रखने हेतु अस्थायी व्यवस्था थी। नये सङ्गठन का प्रत्यक्ष उद्देश्य पुर्टो रिको की बुनियादी व्याधियों का, संघीय सहायता की आवश्यकताओं को कम करने की दृष्टि से, उपचार करना था।

इस सङ्गठन में कोई भी अधिकार-पद ग्रहण करने से इन्कार करते हुए भी, मुनोज ने अपने देशवासियों में "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" को तन-मन-धन से समर्थन प्रदान करने की भावना जगाने हेतु अथक परिश्रम किया। जिबारोस के बीच : या राजनीतिज्ञों के, चीनी-उद्योग के मजदूरों के बीच में या व्यापारियों के, व्यवसायिकों के बीच में या चीनी उद्योगपतियों के; इसमें जरा भी सन्देह नहीं था कि वे मुनोज स्वयं "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" थे और व्यक्ति-के विचारों के अनुसार उनका समर्थन या विरोध हुआ करता था। मुनोज के सक्रिय समर्थन के कारण "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" मुख्यतया पुर्टो रिकी यत्न था और उनके अभाव में—जैसा कि बाद में हुआ भी—वह मात्र धन-व्यय करने वाली ऐसी एक और एजेंसी रह जाती, जिसे इस कारण स्वीकार किया गया हो कि पुर्टो रिकी किसी भी दशा में स्वयं अपनी सहायता आप नहीं कर सकते थे। उन दिनों के पुर्टो रिकियों के विचारों में, सदैव शासक देश से आने

वाली हर वस्तु के प्रति संशय की यह भावना थी कि एक प्रशासन अथवा अधिकारी जो कर सकता है, दूसरा उसे बदल सकता है— अतएव किसी भी संघीय समर्थन को अपना सम्पूर्ण समर्थन प्रदान करने में सावधानीयुक्त विवेक की आवश्यकता है।

"पुर्टोरिको पुननिर्माण प्रशासन" को सम्पूर्ण समर्थन प्रदान करते हुए भी, मुनोज—१६३५ व १६३६ के उन वर्षों में—से पृथक पुर्टोरिको की अन्तिम स्वतंत्रता की अपनी माँग से किञ्चित भी विचलित नहीं हुए। मित्रतापूर्वक एवं दोनो पक्षों की पारस्परिक सुविधा के रूप में स्वतंत्रता का लक्ष्य उपलब्ध करने के सङ्कल्प के साथ वे यह भी मानते प्रतीत होते थे कि "पुर्टोरिको पुननिर्माण प्रशासन" एक उदार संकेत है जिसके द्वारा अमेरिका, उपनिवेशवाद के कुछ हानिकर प्रभावों को बदलना चाहती है और जिसके द्वारा पुर्टोरिको अपनी स्वतन्त्रता के लिए उतनी हो अधिक अच्छी प्रकार तैयार हो सकेगा।

"पुननिर्माण प्रशासन" का कार्यारम्भ इस कारण अत्यन्त अनियंत्रित था कि वह एक सर्वथा नया, नये कर्मचारियों से मुक्त संगठन था जिसे विद्यमान "संघीय सहायता प्रशासन" का स्थान ग्रहण करने हेतु भेजा गया था। उन हजारों व्यक्तियों के साथ क्या होना था ऐसा जिन्हें इस "संघीय सहायता प्रशासन" की ओजपूर्ण सहायता गतिविधियों के माध्यम में जीवित रखा गया था ? उन पुर्टोरिकियों के साथ होना था जिन्होंने परिश्रम और निष्ठापूर्वक "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन" के लिये कार्य किया और जिसके परिणामस्वरूप वे पुर्टोरिको की आवश्यकताओं से बहुत अवगत हो चले थे ? खिंचाव सभी स्तरों पर, और वाशिंगटन में भी, अनुभव किया जा रहा था।

"पुननिर्माण प्रशासन" ने अपना महत्वपूर्ण कार्य ; कहवा, तम्बाकू, पशु-पालन, नारियल, चीनी और कृषि की अन्य समस्त

व्याधिग्रस्त शाखाओं में पुर्टोरिको के किसानों को सहायता देने के कार्यक्रम से आरम्भ किया। यह कार्य-क्रम विद्यमान आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से तो कभी नहीं परन्तु अनुभव प्राप्त करने, गलतियाँ करने और ज्ञान एकत्र करने की दृष्टि से फिर भी पर्याप्त था। कम खर्चीले मकानों के अपने कार्यक्रम से उसने गंदी बस्तियों के उन्मूलन को, जो आज पुर्टोरिको सरकार के अन्तर्गत संसार का एक आश्चर्य बन गया है, गति प्रदान की। "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन," एवं उसके भी पूर्व "संघीय संकटकालीन सहायता प्रशासन" के समान "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने भी इस द्वीप की हर प्रकार से दीवालिया सी सरकार की विविध शाखाओं को—विशेषकर जन स्वास्थ्य एवं शिक्षा के विषयों में, सहायता प्रदान की।

"पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने तम्बाकू और कहवा उत्पादक-क्षेत्रों में भूमि खरीदी, उसे दो तीन एकड़ों के टुकड़ों में विभक्त किया, हर टुकड़ों पर कंक्रीट का एक छोटा—साफ स्वच्छ और तूफानी हवा-पानी से सुरक्षित रहने वाला—मकान—उसी डिजाइन पर जिन पर बने तीन-सौ डालर की लागत वाले ग्रमीण मकानों के लिए आज पुर्टोरिको विख्यात है—बनाया और इन भू-भागों को लम्बी अवधि के भुगतान पर वहाँ आबाद किये गये ग्रामीणों को बेच दिया। एक कानून बनाना पड़ा, जिस के अन्तर्गत एक ही मकान की—जो सरकार ने बनाकर दिया है—अनुमति दी जा सकती है। अन्यथा "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने गंदी बस्तियों का एक और सिलसिला आरंभ किया होता, क्योंकि पुत्र पुत्रियाँ बड़े होकर अपने जीवन-संगियों के लिये परिवार के उसी भू-भाग पर गंदी, कच्ची झोपड़ियाँ बनाने लगते

आबाद किये गये इन ग्रामीणों को सरकारी-समितियों में संगठित किया गया और प्रत्येक बड़े विकास क्षेत्र में "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने एक स्कूल, एक अस्पताल, एक सामुदायिक केन्द्र

और एक कृषि परीक्षण स्थल की स्थापना की ये सामुदायिक विकास क्षेत्र बहुत सतोपजनक रूप से विकास करते रहे और आज विद्यमान है।

चार्डन-योजना में चीनी की एक मिल और उसकी भूमि खरीद कर, उसका आंशिक उपयोग, मिलों और स्वतन्त्र गन्ना उत्पादकों, कोलोनोस, को, जो बड़े-बड़े चीनी-उत्पादक कारपोरेशनों द्वारा उन्हें धोखा दिये जाने की शिकायतें काफी दिनों से करते आ रहे थे, मध्य न्यायपूर्ण सम्बन्धों का निश्चय कर उनका मानदंड के रूप में परीक्षणात्मक प्रदर्शन करने का भी प्रावधान था। उसका उपयोग विभिन्न तरीकों से शिक्षा के लिये भी किया जाता था ताकि पुर्टोरिको के किसान व निवासी अपने इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग की व्यवस्था में मुख्य भूमिका सम्पादित करने की योग्यता प्राप्त कर लें।

"पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने एक स्वयं सहायता-निगम की स्थापना भी की। उसका कार्य सहकारी समितियाँ सङ्गठित करना, उन्हें पूँजी के लिये धन देना और उनका तब तक कार्य सञ्चालन करना था जब तक कि उनका ऋण अदा न हो जाय। मंतव्य यह था कि तब तक सहकारी-समितियों के सदस्य सफलता के लिये आवश्यक बुनियादी अनुशासन सीख चुके होंगे। इन निगम को मिलने वाला धन संघीय धन था, परन्तु वह पुर्टोरिको सरकार को दिया गया था। सबसे कठिन कार्य यह था उसकी ऐसी व्यवस्था करना कि राजनीतिज्ञ उसका स्पर्श न कर सकें। प्रशासन, सदस्यता और प्रबन्ध में व्यक्तिगत मामलों का निराकरण,—राजनीतिक सम्बद्धता और प्रभाव के आधार की अपेक्षा,—योग्यताओं के आधार पर होना था। सरकारी एजेंसी को, इस प्रकार कि राजनीतिज्ञ अपनी राजनीतिक शक्ति बढ़ाने के लिये उसका स्पर्श न कर सकें, सङ्गठित करने का मंतव्य ही पुर्टोरिको के लिये इतना नया था कि वह सब कुछ होते हुये भी

क्रान्तिकारी था। सभी पक्षों के राजनीतिज्ञों ने हल्ला किया किन्तु उससे कुछ भी नहीं हो सका। स्वयं, सहायता-निगम आज भी अस्तित्व में है, और आज भी सहकारी समितियों को सङ्गठित करने एवं उन्हें आर्थिक सहायता देने का कार्य कर रहा है।

स्वाभाविक रूप में, इस द्वीप की अंतिम आशा थी, आंशिक रूप में कम खर्चीली शक्ति पर आधारित, औद्योगीकरण। "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" ने पन-बिजली के कई कारखाने बनाकर उन्हें पुर्टोरिको सरकार को, सरकार की उस आवश्यकीय शक्ति-व्यवस्था में सम्मिलित किये जाने हेतु, सौंप दिया जो आगामी कुछ ही वर्षों में समूचे द्वीप को विद्युतवाही तारों के सुनियोजित जाल से छा देने वाली थी।

पुनर्निर्माण के किसी भी कार्यक्रम हेतु, --क्योंकि निर्माण-सामग्री एक बुनियादी आवश्यकता है, और क्योंकि पुर्टोरिको असमान्य रूप से भारी रकम महाद्वीप से सीमेन्ट मंगवाने हेतु निर्यात कर रहा था ;—"पुर्टोरिको पुनिर्निर्माण प्रशासन" ने रूपरेखा तैयार कर एक सीमेन्ट-कारखाने का निर्माण किया और उसे पुर्टोरिको सरकार के हाथों बेच दिया। इस कारखाने का मूल्य उससे प्राप्त होने वाले लाभ से चुकाया जाना था। यह कारखाना यांत्रिक एवं वित्तीय दृष्टियों से एकदम सफल रहा। आज पुर्टोरिको सीमेन्ट के मामले में,—उसके विशाल चालू निर्माण कार्यक्रम के बावजूद भी—न केवल आत्मनिर्भर रहा है वरन् मुख्यभूमि को एवं वेनेजुएला जैसे देशों को सीमेंट निर्यात भी कर रहा है।

आयोजन विभाग ने अन्य संभावित उद्योगों के सम्बन्ध में वे अध्ययन जारी रखे जिनका आरम्भ पूर्व में "पुर्टोरिको संकटकालीन सहायता प्रशासन" और "पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन" ने किया था। इनमें अन्य चीजों के अतिरिक्त इनका सम्बन्ध रम-उद्योग की सहायता हेतु बोतलें बनाने के उद्योग और चीनी की सीठी के उपयोग से, जो कि

चीनी का उप-उत्पादन है, गन्ना बनाने के कारखाने से था। "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" के कार्यकाल में इनका कोई परिणाम नहीं हुआ। कुछ वर्षों पश्चात्, जब शासन मुनोज के हाथों में आ चुका था, इन कार्यक्रमों को उनकी धूल झाड़ कर, पुर्टोरिको के औद्योगीकरण के प्रथम वास्तविक कार्यक्रम का आधार बनाया गया। बोतल बनाने वाला कारखाना, गन्ना व गन्नों के डिब्बे बनाने वाला कारखाना, जूता बनाने वाला कारखाना, द्वीप के निवासियों को रोजगार प्रदान कर-रहे हैं। अर्थ-व्यवस्था को सुधार रहे हैं; वित्तीय दृष्टि से और प्रशासकीय दृष्टि से उनकी अपनी ऊँच-नीच है, और जिनके अन्तर्गत वे संचालित हो रहे हैं वे काफी कुछ बदली जा चुकी हैं, तथापि, उनसे उस नाटकीयतापूर्ण औद्योगीकरण के कार्यक्रम का आरम्भ हुआ जिसके लिए पुर्टोरिको आज प्रसिद्ध है।

आयोजन मंडल ने, पुर्टोरिको के वर्तमान आयोजन-मंडल का मार्ग प्रशस्त किया। यह मंडल पश्चिमी विश्व के ऐसे संगठनों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

आंतरिक दृष्टि से "पुर्टोरिको पुनर्निमाण" प्रशासन में गम्भीर कमजोरियाँ थीं और ये कमजोरियाँ ही मुख्य रूप से पुर्टोरिकियों के महान् आदर्शों एवं प्रयासों के इस प्रतीक के विनाश का कारण बनीं। इन कमजोरियों का उद्गम उसकी समस्त गतिविधियों एवं नीतियों पर वाशिंगटन का कठोर नियंत्रण था, जिसने पुर्टोरिकी अधिकारियों एवं नेताओं में यह भावना दृढ़ कर दी थी कि अन्त में हम 'भाड़े के आदमी' ही हैं।

"पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" में एक प्रमुख व्यक्तिगत तत्व भी था, जो आज इसी प्रकार के किसी पुर्टोरिकी संगठन में मौजूद होना सम्भव नहीं है, जो अन्त में सभी प्रकार की गड़बड़ी का कारण बना। यह तत्व था वे गैर पुर्टोरिकी अभिभाषक जो सीधे वाशिंगटन से भेजे गये थे। ये उत्सुक अभिभाषक, जो जवान, परिश्रमी और अपनी

सामाजिक स्थिति के प्रति सचेत थे, समूचे संगठन पर छाये हूए थे। ये लोग थोड़े बहुत कानून के ज्ञाता थे और अपने आपको काफी बढ़े हुए उदारवादी और कल्याणकारी मानते थे। परन्तु फिर भी वे अपने उदारवाद में सर्वथा कट्टर थे और सम्बन्धित जनता और समाज के वास्तविक ज्ञान अनुभवों का स्थान सामान्य सिद्धान्तों को देना चाहते थे। कुल मिलाकर वे एक ऐसा समुदाय थे जो पुर्टो रिको के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते थे, स्पेनीय भाषा से अवगत नहीं थे और जो पुर्टो रिकियों के साथ होने की बजाय सेनजुआन में अन्य अमेरिकियों के साथ थे।

इस व्यवस्था में वाशिंगटन के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि भी थे। उत्तरदायित्व के समस्त पद पुर्टो रिकियों के देने के पवित्र सिद्धान्त से युक्त इस महान नये संगठन में समूची सत्ता इन युवा-अभिभाषकों के हाथों में ही थी।

मात्र यह तथ्य ही, कि सत्ता वाशिंगटन से आये अधिकारियों के हाथ में है और वे कभी भी पुर्टो रिकी अधिकारियों की अवहेलना कर सकते हैं, और करते हैं, संगठन की एक बड़ी कमजोरी थी। अप्रत्यक्ष-रूप से, इन अभिभाषकों के प्रति हुए अनुभव ने विद्यमान धारणा को, जो पुर्टो रिकी शासन में व्याप्त है, बढ़ावा दिया, कि "हमारे साथ उन दिनों कठिनाई यह थी कि हम हमारी कठिनाइयों के लिए दूसरों को दोषी ठहराने और हमारी मुक्ति के लिए दूसरों से अपेक्षा करने के अत्यन्त ही अभ्यस्त थे। जब तक हमने स्वयं अपने को नहीं संभाला, हम कोई वास्तविक उपलब्धि नहीं कर सके।" इसी प्रकार का योग १६३६ में इन अभिभाषकों ने उस स्वतन्त्रता की माँग में भी दिया होगा, जो ऐसी एक मात्र अवस्था प्रतीत होती थी कि जिसके अन्तर्गत पुर्टो-रिकी महाद्वीप के सद्, आदर्शवादी, कार्यव्यस्तता प्रदर्शित करने वाले अनाधिकारी अमेरिकियों के किसी भी हस्तक्षेप के बिना स्वयं अपना काम कर सकते थे।

अध्याय ६

१६४०

१६४० का चुनाव पुर्टोरिकी प्रजातंत्र के लिए एक ही महान और निर्णात्मक परीक्षा थी।

लुइस मुनोज मारिन के नेतृत्व में, स्त्री-पुरुषों के एक छोटे से दल ने, जो इनकी ईमानदारी और व्यक्तिगत गुणों के कारण उनका समर्थक था, अपने तो नयी पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी (लोकप्रिय प्रजातांत्रिक दल) के रूप में सङ्गठित किया। इस दल के संख्या में थोड़े, निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं ने सेनजुआन और ऊपर पहाड़ी क्षेत्रों में, छोटे कस्बों में, ग्रामों में सभा-स्थलों पर, निजी मकानों की छोटी गोष्ठियों में सरगर्मी से काम लिया। उधर मुनोज ने चुनाव प्रचार करने, किसानों के बीच भाषण देने, उनके स्वाभाविक विवेक को जाग्रत करने, और मित्र व समर्थन प्राप्त करने का अपना विशाल कार्य आरम्भ कर दिया। अन्त में, २२ जुलाई १६३८ को वे यह घोषणा करने में समर्थ हुए कि बरेनाक्विटास और लुकिलो में, दोनों म्युनिसिपैलटियों में पार्टी को रजिस्टर करने हेतु पर्याप्त हस्ताक्षर उपलब्ध हो चुके हैं।

यह आन्दोलन पहाड़ी क्षेत्रों के निवासियों, जिबारोस, किसानों को प्रजातंत्र का वास्तविक अर्थ और उनके मत की, बशर्ते वे उसका उपयोग स्वतंत्रतापूर्वक करें और उसे बेचें नहीं; वास्तविक शक्ति समझाने हेतु एक सबल शैक्षणिक-साधन बन गया।

मुनोज मोटर से, घोड़े पर, और पैदल पुर्टोरिको के हर कोने में गये। उन्होंने जिबारोस से सम्पर्क स्थापित करने हेतु उनके छोटे-छोटे

मकानों में बैठकों व चर्चाओं का तथा ग्रामीण जनता के समक्ष अनौपचारिक रूप में तथा सीधे-साधे शब्दों में तरीके से अपने विचार रखने हेतु गाँव के हरे भरे मैदानों में अगणित छोटी-छोटी सभाओं का आयोजन किया। वे हर स्थान पर बारम्बार गये और हर बार उनके श्रोताओं की संख्या बढ़ती गई। आरंभ ही से मुनोज की बातों पर ध्यान दिया जाने लगा, इसका कारण केवल उनका स्पष्ट और सरल तर्क ही नहीं था वरन् उनकी स्वाभाविकता भी अन्य राजनीतिक नेताओं एवं उनके डिगनीडेड से मुनोज को विशिष्टता प्रदान करती थी। अपने चुनाव आन्दोलन के आरंभिक दिनों में ही उन्होंने एक जलधारा के पास अपनी मोटर रोक दी और स्नान किया, मात्र इसलिये कि उन्हें बहुत गर्मी लग रही थी और वे अपने को शीतल करना चाहते थे। जिन जिबारोस ने उन्हें देखा,कहा यह आदमी तो बिल्कुल हमारे जैसा है। वह अपनी प्रतिष्ठा से हम पर असर डालना नहीं चाहता, और उसे इसकी परवाह नहीं कि हम उसे कपड़े उतारते देख रहे हैं।

विनम्र मित्रों एवं समर्थकों ने अपने घरों पर मुनोज और उनके ड्रायवर के खाने-पीने एवं ठहरने की व्यवस्था की। गरीब ग्रामीण जनता से उन्होंने धन एकत्र किया:—यहाँ से पाँच सेन्ट, वहाँ से कुछ पेनियों, किसी एक विशेष धनी जीबारो से एक चौथाई :—परन्तु इस प्राप्त धन का उपयोग उन्होंने स्वयं अपने खर्च के लिये कभी नहीं किया। इस प्रकार दिया गया धन चाहे वह कितना ही थोड़ा क्यों न हो पार्टी-कोष को दिया गया धन था। मुनोज इस सिद्धान्त की स्थापना करना चाहते थे कि पार्टिडो पापुलर (लोकप्रिय दल) जनता का अपना दल था और जनता को ही उसको बल प्रदान करना था, यह हर चुनाव के समय खुले हाथों राजनैतिक रिश्वत बाँटने के लिए शहरों से आने वाले उन संदिग्ध-व्यक्तियों के सङ्गठनों जैसा संगठन नहीं था।

द्वीप के भीतरी भागों में फैले हुए समस्त छोटे-छोटे कस्बों एवं बस्तियों से आरंभ कर मुनोज अपने इस आन्दोलन की समाप्ति के

लगभग ही—और वह भी तब जब उन्हें पहाड़ी क्षेत्रों के समर्थन का काफी विश्वास हो गया—तटवर्ती नगरों में आये। उन्होंने सरल एवं विवेकपूर्ण शब्दों में पुर्टोरिको की करुण-अवस्था पर प्रकाश डाला। उनके आन्दोलन का आधार विषय था, सामाजिक एवं आर्थिक सुधार, न कि अंतिम राजनीतिक अवस्था, जो इंतजार कर सकती थी। कानूनी तरीकों से उन्होने, और चीनी उद्योग को विनाश से बचाते हुए, चीनी उद्योग की गन्ना उत्पादक भूमि का पुनर्वितरण करने के अपने दल के संकल्प की बात कही। उन्होंने मजदूर हितों की रक्षा हेतु सामाजिक सुधारों, न्यूनतम वेतन कानूनों और अन्य सामाजिक विधि विधानों की, गंदी बस्तियों के उन्मूलन और कम आय वाले मकानों की बातें कहीं। उन्होंने न केवल महत्व के प्रश्नों को ही परन्तु मत की शक्ति को भी, जब कि मत उपयोग, व्यक्ति के निजी जीवन के सुधार के लिये सही रूप में किया जाता है, समझाते हुये 'अल केटेसिस्मो डेल प्यूबलो' जनता का प्रश्नोत्तरवाद शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी जो अब प्रसिद्ध हो चुकी है।

"हमें एक ही अवसर दिया जाय ; एक ही अवसर पर बताने के लिये कि हम क्या कर सकते हैं" के उद्गार हजारों स्त्री-पुरुषों के लिये—उनके अपने घर में और सार्वजनिक जीवन में, मौखिक रूप से और लिखित या मुद्रित रूप में, मकानों में, शहर के चौराहों पर और गाँव के हरे-भरे मैदानों में आन्दोलन का नारा बन गये, और जो सैकड़ों हजारों सभाओं में गूँजे। "हम यदि मांगते हैं तो यही एक अवसर।"

मतों के बेचे जाने की कुप्रथा की भी मुनोज ने विशद रूप से चर्चा की। वास्तव में उनके लिये यह प्रश्न एक बहुउद्देशीय आध्यात्मिक आन्दोलन, मात्र राजनीतिक धोखेबाजी और दांवपेच के विरुद्ध 'स्वस्थ चेतना' और उसकी स्वस्थ राजनीतिक-अभिव्यक्ति के लिये संघर्ष का मूलाधार था।

उन्होंने अपने श्रोताओं से कहा कि "मत बेचने के कारण वास्तव में आपको कोई दोष नहीं दे सकता। दो डालर अत्यन्त ही मुश्किल से आते हैं और उनसे आपके और आपके क्षुधा पीड़ित परिवार के लिये काफी मात्रा में फलियाँ और चावल खरीदा जा सकता है; कौन है जो इसलिये आपको दोष देगा कि आप अपने बच्चों के लिये पेट भरने का प्रबन्ध कर रहे हैं ? किन्तु, आपको इसे साफ-साफ देखना है। आपको दो डालर चाहिये या न्याय चाहिये ? आपको दो डालर और न्याय दोनों साथ नहीं मिल सकते और इस बार आपको दोनों में से एक चुनना है। केवल इस बार दो डालरों को छोड़कर अपना मत हमें दीजिये और देखिये कि क्या होता है।"

आज पुर्टोरिको में मत खरीदे नहीं जा सकते—आमतौर पर इसका कारण यह है कि गरीबों ने अपनी प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति पाली है और वे अब उसी तेजी से अपना वोट बेचने से इन्कार करते हैं जिस तेजी से किसी समय वे बगैर कीमत मिले वोट देने से इन्कार करते थे।

१९४० के चुनावों ने हालत बदल दी, परिणाम इतने अधिक लाभप्रद थे कि, १९४४ के अगले चुनावों तक, मत-विक्रय लगभग एक सर्वमान्य सामाजिक व्याधि बन गया था। यदि यह व्याधि कहीं प्रगट हो भी जाय तो उसे सामाजिक बहिष्कार के साधन से कुचल दिया जाता था।

सतर्कतापूर्वक, एक के बाद दूसरी सभा में, एक के बाद दूसरे गाँव में अपने १९४० के आन्दोलन के दौरान, मुनोज अपने देशवासियों को राजनीति का अर्थ समझाते रहे। उन्होंने देशवासियों के बाद दूसरे आन्दोलन में आप ने राजनीतिज्ञों की बातें सुनी होंगी किन्तु वास्तव में उन से कोई मतलब नहीं निकला। मुनोज ने कहा: कभी किसी राजनीतिज्ञ का भरोसा नहीं करना चाहिये; मेरा भी नहीं। आप को क्या मालूम कि मैं आप को किसी दूसरे से मिलने वाला धन

लेने से रोक कर, और तब आप के विरुद्ध बिके हुये एक और दल को आप पर सवार करवाने के लिये धोखा नहीं दे रहा हूँ ? जाहिर है कि आप को यह मालूम नहीं है और आप को विश्वस्त करने के लिये करने योग्य मेरे पास कुछ है भी नहीं। तथापि यदि आप हमें एक अवसर दें, जो मैं आप से माँग रहा हूँ, यदि आप आज से न उस स्थान में बैठे बदमाशों को हटा कर हमें चुन दें और तब यदि हम भी उतने ही बदमाश साबित हों, तब आप यह जान चुके होंगे कि बदमाशों को सत्ता-स्थान से हटाने हेतु अपने मत का उपयोग आप किस भाँति कर सकते हैं और आगामी चुनावों में आप हमें भी वहाँ से निकाल बाहर कर सकते हैं। क्या ऐसी शक्ति को आप दो डालर में बेच देंगे ?

जब चुनाव का समय आया, मुनोज को उस नये चुनाव कानून से बहुत अधिक सहायता मिली जो १९३६ की मिलीजुली सरकार द्वारा, भारी घोटालों के परिणामस्वरूप उठते हुये जनमत के दबाव के कारण, लागू किया गया था। यह कानून आज पुर्टोरिको के विकासोन्मुख प्रजातंत्र का लक्षण माना जाता है। आज यह सत्तारूढ़ होने की संभावना की दृष्टि से विरोधियों के लिये भी उतना ही सुविधाजनक समझा जाता है। पापुलर डैमाक्रैटिक पार्टी को उसे तोड़ने-मरोड़ने और इस प्रकार अपनी स्थिति को सुरक्षित कर लेने का अधिकार है। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया है। १९४० के बाद से इस कानून में मामूली फेर-बदल हुए और ये फेरबदल भी सभी दलों की पूर्ण सहमति से किये गये हैं।

इस कानून के अन्तर्गत, जिसका परीक्षण १९४० में पहली बार किया गया, लगभग प्रति १५० मतदाताओं के लिये अब एक ही मतदान केन्द्र है। ये मतदाता स्कूलों में, अथवा किसी भी ऐसी इमारत में जो इस उद्देश्य के लिये उपयोगित की जा रही हो, दोपहर एक बजे के पूर्व-जिसके बाद वहाँ किसी को भी प्रवेश नहीं मिल सकता,

किसी भी समय जब वे चाहें, एकत्र हो जाते हैं और मतदान आरम्भ हो जाता है। रजिस्टर्ड मतदाताओं के नाम वर्णमाला के क्रम से पढ़े जाते हैं,और ये मतदाता पर्दा पड़े मतदान-कक्ष में अपने गुप्त मतों को डालने के लिए,एक के बाद एक जाते हैं। हर स्त्री या पुरुष,ऐसी स्थिति जब सब एक दूसरे को जिज्ञासापूर्वक देखते हैं, सभी व्यक्तियों की नजरों के सामने अपने स्थान से खड़ा होकर मत देने जाते हैं। मत दे चुकने के पश्चात वे लोग जा सकते हैं, परन्तु समस्त मतदान समाप्त हो चुकने के पूर्व मतदान केन्द्र में किसी को प्रवेश नहीं मिल सकता। इस व्यवस्था से दोहराने वालों और जाली मत डालने वालों की कदापि सम्भावना नहीं रह जाती।

जब मतों की अन्तिम गणना पूरी हो चुकी, पापुलर्स ने उन्नीस सिनेट-स्थानों में से दस—एक का बहुमत—प्राप्त कर लिये। हाउस में मिले-जुले दलों को मिलने वाले अन्य अठारह स्थानों के मुकाबले, उन्हें भी अठारह स्थान मिले।

परन्तु और भी एक दल युनिफिकेसियन था, जिसने हाउस में तीन स्थान प्राप्त किये थे। न्यायोचित समझौते द्वारा इस दल को अपने दल की ओर मिला कर और पक्ष के सभी सदस्य एक ही ओर मत दें इसका सुनिश्चय करने हेतु सतत मत-निर्धारक बैठकों का आयोजन करते हुए मुनोज, जो सिनेट के अध्यक्ष और इस द्वीप के राजनीतिक नेता बन गये थे, विधान-मंडल को नियंत्रण में रखने की आशा कर सकते थे।

१९४० की विजय ने जिन सुधारों एवं कार्य-क्रमों का मार्ग प्रशस्त किया वे इतने क्रान्तिकारी थे कि बीस वर्ष पूर्व और आज के पुर्टो-रिको में किञ्चित ही समानता शेष रह गयी है।

मुनोज,अपने१९४० के चुनाव-आन्दोलन के दौरान ही पुर्टोरिको की स्वतंत्रता के अपने पिछले विचारों के औचित्य पर गंभीर शङ्काएँ करने लगे थे। अन्तिम राजनीतिक अवस्था के बारे में चाहे कोई

कुछ भी क्यों न कहता हो, यह स्पष्ट था कि पुर्टोरिको के विप्लव के परिणामस्वरूप उपस्थित होने वाली अवस्था में प्राप्त करने वाले गरीब ही होंगे ; मुनोज को अब ज्ञात हुआ कि बहुत से वर्षों से बुद्धिजीवी द्वारा बहुचर्चित 'अवस्था' का ग्रामीण जनता के लिये इसके अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं था कि यह राजनीतिज्ञों की चर्चा का विषय है। तब ये लोग क्या चाहते थे ? ये लोग वही चाहते थे जो विश्व भर में अन्य लोग चाहते हैं। वे क्षुधित थे और उन्हें भोजन चाहिये था। वे रोगग्रस्त थे और उन्हें चिकित्सा-व्यवस्था चाहिये थी। वे अपनी संतानों के लिये शिक्षा और अवसर चाहते थे। वे मानव प्रतिष्ठा चाहते थे जिसका उनको बहुधा इंकार किया जाता था। इनमें से अधिकांश लोग ऐसी वस्तुएँ, किसी भी सरकार से, चाहे उसका केन्द्र कहीं भी क्यों न हो, प्राप्त कर संतुष्ट हो सकते थे।

मुनोज को ज्ञात हुआ कि जिबारोस में वह घृणा बहुत कम मात्रा में शेष रह गई थी जिसे आल्बिज़ु ने फैलाया था। ये लोग चीनी-मिल के अपने मालिक से तो—यदि वह नीच हो—घृणा कर सकते थे, परन्तु यह घृणा इसी कारण थी, न कि उस मालिक के अमेरिकी होने और अमेरिकी सत्ता से शक्ति प्राप्त करने के कारण। वास्तविकता यह थी कि बहुधा और स्पष्टतया, अपनी अमेरिकी नागरिकता के प्रति,—इस तथ्य के प्रति कि वे बिना पासपोर्ट के जब भी चाहें अमेरिका जा सकते थे और उनके पास इस हेतु साधन भी थे,—गौरव का अनुभव करते थे कि वे उस नागरिकता की बिनाह पर विश्व के सर्वाधिक सबल प्रजातंत्र के एक अङ्ग थे। इतना ही नहीं, जहाँ हो सकता था कि चीनी मिल का मालिक (यद्यपि किसी महाद्वीपीय (अमेरिकी) की अपेक्षा बहुधा पुर्टोरिकी ही अधिक बदमाश हो सकता है वे यह बात समझते थे कि समूचा अमेरिका और इस प्रकार अमेरिकियों का महान परिवार, बदमाश नहीं है। यदि उन्हें चीनी मिल के स्वामी के प्रति कोई वास्तविक शिकायत

होती थी तो वे अदालत में जाकर मुकदमा जीत सकते थे। वे जानते थे कि अमेरिका उन्हें सड़कें, स्कूल, अस्पताल और स्वास्थ्य कार्यक्रम दिये हैं। अमेरिका ने उन्हें संकट के समय में, "पुर्टो रिको संकट कालीन सहायता प्रशासन," "संघीय संकट कालीन सहायता प्रशासन" और "पुर्टो रिको पुनर्निर्माण प्रशासन" दिये जो पर्याप्त तो नहीं थे किन्तु उन अपेक्षाओं से जो वे स्वतन्त्रता के अन्तर्गत स्वयं अपने राजनीतिज्ञों से कर सकते थे कहीं अधिक थे।

दस वर्ष पश्चात, मुनोज के ही नेतृत्व में, पुर्टो रिको जनता को अमेरिका के साथ अपने को एकाकार कर विश्व में अपूर्व तथा राजनीतिक-वैज्ञानिकों द्वारा न सुने गये राजनैतिक सम्बन्धों के (इस उपनिवेश में रखे गये) आधार पर स्वयं निर्मित संविधान के अधीन स्व-शासित होने के लिए एक जनमत संग्रह में भाग लेना था।

— x —

अध्याय १०

टगवेल

पुर्टोरिको के औपनिवेशिक मतदाताओं ने जिस साहस के साथ १६४० में, शासन केन्द्र को, स्वयं अपनी आर्थिक-मुक्ति का—सुनियोजित, व्यापक रूप से चर्चित और विजेता दल के समस्त उम्मीदवारों द्वारा संकल्पित और जनमत से समर्थित—ऐसा एक ठोस कार्यक्रम प्रदान किया, जो मुनोज के लिए लगभग एक आदेश ही था, वह कदाचित आधुनिक औपनिवेशिक इतिहास में अद्वितीय है। इसके पहले, इस द्वीप को प्रभावित करने वाले सभी प्रमुख निर्णय वाशिंगटन में किये जाते थे। इतना ही नहीं, समूची परिस्थितियों का सिलसिला असंदिग्ध रूप से वाशिंगटन को यह सूचित करने वाला था कि जब पुर्टोरिको अपने मामलों को, अपने हाथों में लेने हेतु स्वयं वे सुधार लागू करने के लिए जिनकी निष्फल याचना वे पिछले दशकों से अमेरिका से करते आये हैं, और औपनिवेशिक प्रजा के नाते अपनी राजनीतिक-अवस्था की चिंता न करते हुए, तैयार और संकल्पित हैं।

अमेरिका के गृह-विभाग के प्रमुख, सेक्रेटरी आइकेस को इतिहास के साथ कदम मिलाना पड़ा और इस विषय में अपने विचार बदलने पड़े। १६४० के चुनावों ने कुछ अति गंभीर प्रश्न उपस्थित कर दिये थे। मुनोज एक भूमि कानून का मसविदा लेकर अपने "वनवास" से प्रगट हो चुके थे जो विस्फोटक से किसी भी प्रकार कम नजर नहीं आ रहा था। क्या वे, सत्ता पद पर रह कर बदला लेंगे ? क्या वे चीनी कम्पनियों की उस भूमि को, जिन पर उनका कोई अधिकार नहीं है, गैर कानूनी रूप से और बलपूर्वक अपने कब्जे में रखने जाने वाली

मानेंगे ? क्या वे इतने गैरजिम्मेदार सिद्ध होंगे कि बिना उन्हें किसी प्रकार का हर्जाना दिये निकाल बाहर करेंगे ? यदि वे उन्हें हर्जाना देना भी चाहे तो धन-राशि कहाँ से मिलेगी ? उन्होंने संघीय शासन को, "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" अथवा अन्य किसी कृषक एजेंसी के मार्फत नाजुक प्रश्न में हस्तक्षेप के लिये क्यों नहीं कहा ? उनकी सरकार जब एक बार गन्ना उत्पादक भूमि को अपने हाथ में ले लेगी, तब मुनोज, उसका क्या करेंगे ? पुर्टोरिको के इस प्रमुख उद्योग को, तथा साथ ही द्वीप की अर्थ-व्यवस्था को नष्ट न होने देते हुए वे उसकी किस भाँति व्यवस्था करेंगे ? क्या उनका इरादा पुर्टोरिको की सम्पन्न-तम जमीनों को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त कर, "हेटेनीकरण" का विषम चक्र आरम्भ करने का है ?

उस व्यक्ति की, जो संघीय दृष्टि से उत्तरदायी था किन्तु जिसे मुनोज की विचार क्रिया को बारीकी से समझने अथवा पर्वतीय क्षेत्रों में मुनोज द्वारा अपने आश्चर्यजनक चुनाव आन्दोलन में कही गयी बातों से अवगत होने का अवसर नहीं मिला था, ये सही और वास्तविक शंकाएँ थीं।

सेक्रेटरी (आइसेक) ने रैम-फोर्ड टगवेल की सेवाएँ, न्यूयार्क से जहाँ वे नगर-नियोजन का कार्य कर रहे थे, प्राप्त कीं और समूचे मामले की जाँच करने तथा अमेरिका को—विशेष कर भूमि सुधार-कानून के बारे में परामर्श देने हेतु क्या किया जाना चाहिये, पुर्टोरिको भेजा। राजनीतिक-राजनीति-शास्त्री टगवेल पहले, १६३७ तक, न्यूडील के एक विशिष्ट नेताओं और बुद्धिजीवियों में एक रहे थे। कृषि-विभाग में असिस्टेन्ट सेक्रेटरी और अन्दर सेक्रेटरी के नाते भूमि संघ की समस्याओं से उनका बहुत अधिक सम्बन्ध रहा था। वे पुर्टोरिको की आकांक्षाओं से मित्र भाव रखने वाले समझे जाते थे और वास्तव में उन संघीय अधिकारियों में से एक थे जिन्होंने १६३४ में, अपनी

पुनर्निमाण योजना तैयार करने हेतु चार्डन-आयोग की वाशिंगटन-यात्रा को संभव बनाया था।

मुनोज के भूमि-कानून के प्रति टगवेल की प्रतिक्रिया अजीब रूप से रहस्योद्घाटक थी। वे आश्चर्यान्वित प्रतीत होते थे कि कानून के मुख्य तत्वों में वास्तविक बुद्धिमानी के चिन्ह दिखलाई देते हैं। वे इस कानून को आकांक्षाओं की आकस्मिक अभिव्यक्ति बतलाते थे और मुनोज के सम्बन्ध में कहते थे कि गत बीस वर्षों में मुनोज ने संघर्ष व विचारों का जो जीवन व्यतीत किया है यह अभिव्यक्ति उसका अंग नहीं है। कतिपय अन्य तत्व उन्हें नापसन्द थे; किन्तु उस कानून के मसविदे पर, जो चुनाव के पहले ही शब्दः शब्दः रूप में मतदाताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जा चुका है। और पदस्थ होने पर जिसे कायम होने की शपथ पापुलर पार्टी के प्रत्येक उम्मीदवार ने सार्वजनिक रूप से ग्रहण की थी, उनका कोई वश नहीं था। टगवेल को इस बात का श्रेय दिया जा सकता है कि उन्होंने गवर्नर से सिफारिश की कि यह कानून स्वीकार कर लिया जाय। महान पुर्टोरिकी क्रांति को वैधानिक पथ मिल चुका था।

मुनोज को दिये गये सबल समर्थन के अतिरिक्त, पुर्टोरिको का नया रूप संवारने में टगवेल ने राजनीति-शास्त्री के रूप में वास्तविक महान-निजी योग दिया, जो एक क्रान्तिकारी-दर्शन और कार्यक्रम को लेकर, उसका निश्चित सरकारी-ढाँचे और कार्यवाही में रूपांतर कर सका। वे जानते थे कि महान उपलब्धियों के लिये शासन-व्यवस्था की रचना की जानी चाहिये और उसका प्रबंध कैसा होना चाहिये। मुनोज व उनके समर्थक, जब तक उन्हें टगवेल ने यह सब नहीं सिखा दिया, इससे अनभिज्ञ ही थे।

+ × +

द्वितीय महायुद्ध ने इस द्वीप के लिये अपनी सामूहिक महत्व की स्थिति के कारण पुर्टोरिको शत्रु का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित

करता था, भीमकाय समस्यायें उपस्थित कर दीं। जीवनोपयोगी वस्तुओं से लदे हुये कितने ही जलपोतों को पनडुब्बियों ने सागर के तल में भेज दिया। खाद्यान्न के निर्यात में भारी कमी कर दी गयी और मूल्य तेजी से ऊपर चढ़ने लगे। भोजन प्राप्त करने के लिए लगी हुई कतारों को तितर-बितर करने वाले हवाई हमलों के और एक बार सामुद्रिक तूफान की सूचनाओं का मुतहा वातावरण, अत्यन्त सामान्य हो गया। मुख्यभूमि पर युद्ध ने नागरिकों के लिये रोजगार और समृद्धि की अपूर्व परिस्थितियाँ उपस्थित कीं, पुर्टोरिको में, उद्योगों के अभाव के कारण और आंशिक रूप में पनडुब्बियों की सरगर्मी के कारण अलग-अलग रह जाने के कारण, उसने सर्वथा विपरीत ही असर डाला। परिवहन की कठिनाइयों के कारण सिलाई-बुनाई का काम-काज ठप्प हो गया और फल उद्योग की भी यही दशा हुई; वही अर्थ व्यवस्था की अधिकांश शिराओं पर भी इसका गहरा असर गिरा। वेरोजगारी, मन्दी के दिनों से भी अधिक व्यापक हो गयी; और अधिकाधिक सहायता एक अनिवार्य आवश्यकता बन गयी।

दूसरी ओर इस द्वीप का रम-उद्योग समृद्धि के इतने ऊँचे शिखिर पर चढ़ गया जितने ऊँचे शिखर के वह जापान पर विजय पाने के उत्सव के बाद से कभी कहीं निकट भी नहीं पहुँचा था। मुख्य भूमि पर ह्विस्की और अन्य शराब के उत्पादन में भारी कमी कर दी गयी थी। क्योंकि अलकहल की युद्ध-यत्नों के लिये आवश्यकता थी; पुर्टोरिको की रम ने—जिसका उत्पादन १९३६ के आस-पास आरम्भ हुआ था—मुख्य रूप से उनका स्थान ग्रहण किया। न्यूयार्क में और अन्यत्र, साथ में रम की एक-दो बोतल खरीदे बगैर किसी के लिये व्हिस्की की बोतल खरीद सकना बहुधा असंभव ही हुआ करता था। पुर्टोरिको के शराब बनाने वाले मालामाल हो

गये और इस पर लगाये गये कर से पुर्टोरिको के दूरगामी परिणामों वाले कार्यक्रमों को आर्थिक-सहायता भी मिली।

पुर्टोरिको के चेतन कानून के आधीन, जो इस द्वीप और मुख्य भूमि के बीच सम्बन्धों की व्याख्या करता है, यह व्यवस्था की गई है कि पुर्टोरिको में तैयार होने वाली सामग्री पर लिये जाने वाले एक्साइज की रकम संघीय कोषालय में, जैसी की ४८-राज्यों के सम्बन्ध में व्यवस्था है, जमा होने के बजाय, इस द्वीप की सरकार के ही पास रहेगी। एक्साइज-करों से प्राप्त होने वाली राशि ने पुर्टोरिको के बजट को बढ़ा दिया :—जो बजट १९४० के पूर्व २२० लाख डालर का था वह फैल कर १५०० लाख डालर का हो गया—इतनी धन-राशि से सरकार कारखाने खड़े कर सकती थी, वह खरीद सकती थी जो चीनी-निगमों के पास ५०० एकड़ भूमि के अतिरिक्त थी, इस भूमि के वितरण एवं उन पर काम करने की व्यवस्था का प्रबन्ध कर सकती थी, अपनी जन-स्वास्थ्य सेवा को नयी शक्ति प्रदान कर सकती थी और युद्ध-कालीन सहायता में योग देते हुये भी वे समस्त बहु-गुणित गतिविधियाँ आरम्भ कर सकती थीं जो किसी व्याधिग्रस्त समाज के लिये, अपनी पुनर्रचना हेतु आवश्यक है। युद्ध की दुर्घटना और परिणामस्वरूप रम-उद्योग की समृद्धि ने टगवेल-शासन के उन प्रथम चार हलचलपूर्ण वर्षों में पुर्टोरिको के 'अभियान' को वेगवान गति प्रदान की।

नैतिक दृष्टि से भी, मुनोज के महान प्रयत्नों में युद्ध ने सहायता पहुँचायी। सैन्य-अधिकारी जानते थे कि क्षुधित, बेरोजगार और असंतुष्ट जनता, सामरिक महत्व के स्थल पर सैनिक दृष्टि से एक गंभीर समस्या है। मुनोज के नेतृत्व ने एवं सुधार तथा आर्थिक उन्नति के उन के प्रभावशील कार्यक्रम ने इस द्वीप की जनता को उन की युद्ध-कालीन कठिनाईयों के बावजूद भी एक सूत्र में बाँधे रखा और शासक देश के प्रति, जिसने नये पुर्टोरिकी विकास प्रयत्नों

की अनुमति दे दी थी और जो अब उस में सहायक था, उनकी निष्ठा को बल प्रदान किया।

× × ×

नियोजन, क्षेत्रीयकरण और शहरीकरण मंडल की जो आज नियोजन मंडल के सीधे-साधे नाम से जाना जाता है; स्थापना इस द्वीप की प्रगति की रूपरेखा तैयार करने और सरकार के समस्त विभागों के प्रयत्नों में एकरूपता ला कर उन्हें अपने-अपने प्रयत्नों हेतु सामान्य, समरूप, निर्देशन देने के लिये एक एजेंसी के रूप में की गयी थी। एक भूगोल शास्त्री, डा० रेफेल पिको के नेतृत्व में यह संगठन अपने कार्य-सचालन की कल्पनापूर्ण प्रभाव-कारिता के लिये, जो विविध बातों के साथ, विभिन्न सरकारी एजेंसियों द्वारा तैयार किये हुये और क्रियान्वित किये जाने वाले कार्यक्रमों में व्यर्थ के दुह्-राव को रोकता है, आज जगत-ख्याति प्राप्त करता जा रहा है।

मुनोज भली भाँति जानते थे कि औद्योगीकरण, एक ओर तो पुर्टोरिको के समस्त विकास एवं प्रगति के लिये अत्यन्त आवश्यक है, दूसरी ओर विद्यमान परिस्थितियों में जिन में साफ था कि भारी मात्रा में निजी पूँजी उपलब्ध नहीं हो रही थी; वह स्पष्ट रूप से असम्भव थी। पुर्टोरिको का आर्थिक-वातावरण ऐसी पूँजी के लिये अनुकूल नहीं था। तथापि, यदि समाज की जीवन-रक्षा हेतु कारखाने खड़े करना अत्यन्त ही आवश्यक था। अतएव, सरकार ने औद्योगिक ऋण उपलब्ध करने हेतु विकास-कम्पनी और विकास बैंक की रचना की इस तथ्य की मान्यता स्वरूप, कि औद्योगीकरण नितान्त आवश्यक है, सरकार ने यह नीति अपनायी कि इस हेतु सदैव निजी-पूँजी को बढ़ावा दिया जाय, किन्तु, जब और जहाँ कारखानों की स्थापना एवं संचालन हेतु निजी पूँजी सामने नहीं आती, सरकार यह काम करेगी। सरकार भी निजी-उद्योगों का मार्ग-प्रशस्त करेगी, ऐसी जाँच पड़ताल

करवायेगी जिनके माध्यम से औद्योगिक क्षेत्र निजी पूँजी को प्रोत्साहन मिल सके, कतिपय अवस्थाओं में, पुर्टोरिको में निजी पूँजी लगाने के लिये तैयार व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आर्थिक सहायता देगी।

रस-उद्योग को बोतलों की आवश्यकता होती थी; सरकार ने एक काँच का कारखाना बनाया और उसका संचालन किया। विकास कम्पनी की रचना के ढाई वर्ष उपरान्त, जनवरी १९४५ से यह कारखाना काम करने लगा।

लुगदी से गत्ता और रद्दी कागजों तथा चीनी की सीठी से (गन्ने को पेरने के पश्चात वाले पदार्थ से कागज बनाने का कारखाना) काँच के कारखाने के पड़ोस में ही बनाया गया—युद्धकाल में ऐसा निर्माण इसलिए उचित माना गया कि वह पुर्टोरिको को आवश्यक सामग्री प्रदान करने हेतु आवश्यक जहाजरानी में काफी कमी कर सका।

मिट्टी की सामग्री बनाने का एक कारखाना खड़ा किया गया, आरम्भ में वहाँ चमकीले टायल बनते थे, किन्तु बाद में उसने अपने प्रयत्न से सरकार के गन्दी-बस्तियों के उन्मूलन एवं कम लागत वाले मकानों के विकास कार्यक्रम हेतु वाशबाउल और टाइलेट बाउल बनाने की ओर लगा दिये।

क्योंकि यह स्पष्ट था कि पर्यटक-व्यवसाय का इस सीमा तक विकसित हो सकेगा कि वह इस द्वीप की अर्थ-व्यवस्था में आर्थिक दृष्टि से योग प्रदान कर सके, पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विकास कम्पनी ने पुर्टोरिको यात्रा संघ की स्थापना में भाग लिया।

सरकार द्वारा द्वीप के दक्षिण भाग में जूता बनाने का एक कारखाना बनाया गया।

सरकार ने विश्वविद्यालय के साथ मिलकर, अधिकाधिक औद्योगीकरण के विशेष कर चीनी उद्योग के उप-उत्पादनों के उपयोगों के सम्बन्ध में अनुसंधान की व्यवस्था की, तभी विकास

कम्पनी ने भी मेसेच्युसेट्स इन्सिटट्यूट आफ टेकानालाजी जैसी मुख्य भूमि की संस्थाओं में पुर्टोरिकी यांत्रिकों के प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध थीं। श्रम-सम्बन्धों का सुधार और इन सम्बन्धों के सामाजिक पहलुओं के सम्बन्ध में मजदूर व मालिक दोनों का शिक्षण, विकास कम्पनी के लिए एक विशेष विषय बन गया, जिसने शीघ्र ही यह पाया कि राज्य-संचालित कारोबार, प्रजातंत्र में, जहाँ कई विधान-सभा सदस्य मजदूर-नेता उसके पक्ष में हो सकते हैं, हड़तालों और गगनस्पर्शी माँगों की दृष्टि से संक्रामक हो सकता है।

जल-साधन, अभिशक्ति ने अपने सङ्गठन का अन्तिम दौर टगवेल के प्रशासन काल में सम्पूर्ण किया। द्वीप को सस्ती बिजली और जहाँ कहीं सम्भव हो ईंधन के महत्व को घटाने हेतु पनबिजली, प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया यह सङ्गठन शक्ति वितरण शिराओं के रूप में अपने को समूचे द्वीप पर एक विशाल जाल के रूप में फैला दिया। यह एजेंसी, अपनी सस्ती दरों वाली शक्ति द्वारा, पुर्टोरिको में निजी पूँजी से आरम्भ किये गये कई उद्योगों को आकर्षित करने में सफल रही है। तथापि जल-संरक्षण एवं भूमि-साधनों से भी उसका निकट का सम्बन्ध है।

एक यातायात-अभिशक्ति, और बदबू मारने वाली, स्वास्थ्य के लिए हानिकार गन्दी बस्तियों के स्थान पर साफ सुथरे मकान हेतु एक आवास-अभिशक्ति भी उन सरकारी एजेन्सियों में थी जिनकी स्थापना जनता द्वारा, अच्छे जीवन हेतु, दिये गये आदेश को क्रियान्वित करने के लिए टगवेल और मुनोज ने की।

१९४८ के चुनावों में मुनोज गवर्नर पद के लिए उम्मीदवार हुए। अपने चुनाव-आन्दोलन में उन्होंने किसी प्रकार का चमत्कार दिखलाने का वचन नहीं दिया; अपने देशवासियों से उन्होंने वायदा किया किया कि उस लम्बे, पथरीले, कठिन चढ़ाईदार मार्ग पर जिसका १९४१ में अभियान आरम्भ हुआ है, अपना संघर्ष जारी रखने के

अधिकाधिक अवसर उपलब्ध किये जायेंगे। चार अन्य उम्मीदवार उनके विरुद्ध थे, द्वीप का समस्त पत्र-जगत एक स्वर से उनका विरोधी था, उनका अपना पत्र ला डेमोक्रेसिया कब का समाप्त हो चुका था; और कोई समाचार-पत्र चुनाव आन्दोलन के अन्तिम कुछ सप्ताहों को छोड़, जबकि उनके मित्रों ने एक पत्र आरम्भ किया उनका समर्थक नहीं था। विरोधी-पक्ष समूचे पत्र जगत पर नियंत्रण किये हुए था और रेडियो-सुविधाओं का पूरा-पूरा उपयोग अनवरत, उप शब्दों से युक्त, प्रचार के लिए कर रहा था। इस प्रचार में से कुछ तो शरारत भरा और सीधा निजी रूप से मुनोज के विरोध में था। जब मत गिने गए, पाँच प्रतिद्वन्दी उम्मीदवारों में से एक, मुनोज ने प्राप्त मतों के ६० प्रति- शत मत हासिल किये थे।

निर्विवाद रूप से, मुनोज को जनता का दूसरा आदेश प्राप्त हो गया था।

२ जनवरी १९४९ को, उनके गवर्नर-काल का उद्घाटन-परेड और समारोह पुर्टोरिको के इतिहास का महानतम और सर्वाधिक उत्साहपूर्ण उत्सव था।

— x —

अध्याय ११

साधन

जीवन-यापन का स्तर उन्नत करने की पुर्टोरिको की संभावनाओं के प्रति यदि कई विद्वान निराश हैं क्योंकि अयनवृतीय समझा जाता है कि अयनवृतीय जलवायु पुर्टोरिकियों का स्फूर्तिहीन बना डालती हैं—जब वे इस द्वीप के प्राकृतिक-साधनों का अध्ययन करते हैं तो और भी निराश हो जाते हैं। वे मान्यता रखते प्रतीत होते हैं कि अच्छे जीवन के लिए किसी भी समाज की संभावनाएँ प्रत्यक्ष रूप से समाज की सीमा में पाये जाने वाले इन साधनों की प्रचुरता और वैविध्य पर ही निर्भर करती है। उनके कथन में कुछ प्रमाण भी हैं, परन्तु पुर्टोरिको के सम्बन्ध में वे यह भूल जाते हैं कि यह कामनवेल्थ एक अतिव्यापक बृहत्तर समाज का एक अभिन्न अङ्ग है, जिसे साधन प्रचुरता से प्राप्त है। इस तथ्य को भूल कर या नजर अन्दाज कर वे केवल इस द्वीप के साधनों की ही खोज बीन करते हैं और पाते हैं कि धातु, ईंधन, इमारती लकड़ी और यहाँ तक कि जोतने योग्य भूमि जैसे साधन भी यहाँ बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध हैं।

अपेक्षाकृत थोड़ी जगह और प्राकृतिक साधनों का अभाव, उस समस्या का कारण हैं, जो आबादी की समस्या के नाम से जानी जाती है। इस समस्या ने ही उस व्यक्ति को जिसका पुर्टोरिको से किसी भी प्रकार नाता है, चिन्तित कर रखा है। कई भले व्यक्ति इस तथ्य से भयभीत हो जाते हैं कि आज पुर्टोरिको की कुल जनसंख्या २,३००,००० है, उसका कुल घनत्व, विश्व के कृषि प्रधान देशों में सर्वाधिकः—६५० से भी अधिक व्यक्ति प्रति वर्गमील है, और उसकी

जन्म दर इतनी ऊँची है कि समाजशास्त्री उसे विस्फोटक बतलाते हैं। हाल के वर्षों में जहाँ जन्म-दर ने अपनी दिशा बदली है और तेजी से गिरती जा रही है, वहीं महाद्वीपीय अमेरिका को पुर्टोरिकियों का निष्क्रमण भी इस द्वीप पर जनसंख्या के दबाव को कम करने के लिए बहुत योग दे रहा है; तथापि यह भी इतना ही सही है कि पुर्टोरिको की जनसंख्या की वर्तमान वृद्धि के कारण द्वीप के आयोजकों एवं शासकों के लिये पुर्टोरिकयों की संख्या में होने वाली बढ़ती के अनुरूप प्रति वर्ष १८,००० रोजगार पैदा करना आवश्यक हो गया है।

सार रूप में २,३०,००० देशवासियों द्वारा अनुभव की जा रही तीव्र आवश्यकताएँ हीं, पुर्टोरिको के आश्चर्यपूर्ण, उर्ध्व गति वाले विषम चक्र की और जनता की उन शक्तियों की, जो इस विषय चक्र को संगठित संचालित करती है, आवश्यकता उपस्थित करती है। सुखी जीवन व्यतीत करने वाले २० या २५ लाख व्यक्ति द्वीप की आधुनिक प्रगति की रचना नहीं कर सकते थे, क्योंकि पहली बात तो, उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं होती और दूसरी बात, उन्हें आवश्यक श्रम-शक्ति का अभाव होता है

प्राकृतिक साधनों के अभाव की दृष्टि से, कृषि, द्वीप की जोती जा सकने योग्य भूमि चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, पुर्टोरिको की अर्थ-व्यवस्था का मुख्याधार रहना था। कृषि उपजों की उलट-पलट के समस्त आधुनिक तरीकों के बावजूद, समतल तटवर्ती पट्टियों में जहाँ मानव-यत्नों को बहुगुणित करने हेतु यंत्रों का उपयोग किया जा सकता है; उपजाया जाने वाला गन्ना, लम्बे समय तक इस द्वीप की मुख्य फसल, समूची अर्थ-व्यवस्था का मेरुदंड रहेगा। इस तथ्य के अतिरिक्त, कि लाखों डालरों के व्यय से गन्ने की खेती पूर्णतया सुस्थापित हो चुकी है,—कोई भी तीव्र परिवर्तन अव्यवस्था ही उत्पन्न करेगा, अन्य कृषि-उपजों के मुकाबले इसे कई सुविधाएँ प्राप्त हैं।

गन्ने की प्रति एकड़ फसल बहुत होती है, और यह उस बहुलता वाले समाज में, जहाँ उपलब्ध भूमि की एक-एक इंच जमीन का उपयोग अधिकतम लाभ के लिये किया जाना चाहिए, और भी महत्वपूर्ण है। इसकी खेती में प्रति एकड़ भूमि पर अधिक श्रम करना होता है; और यह भी उस समाज में, जो अपने प्रत्येक काम-योग्य व्यक्ति का लाभप्रद रोजगार दिलाने अथवा उसकी व्यवस्था करने हेतु परिश्रम-पूर्वक कार्य कर रहा है, उतना ही महत्वपूर्ण है। गन्ने की फसल पर समुद्री-तूफानों से हुई हानि का प्रभाव अधिक दिनों तक कायम नहीं रहता। गन्ने की फसल के लिये एक काफी स्थिर मंडी भी हैं और जैसे-जैसे मुख्यभूमि की जनसंख्या बढ़ती जायेगी, और उनकी भोजन पद्धति में मिश्री की सलाखों एवं सोडे का अधिकाधिक उपयोग होने लगेगा, यह उम्मीद की जा सकती है कि यह मंडी विकसित होगी। पुर्टोरिको का गन्ना, कम से कम विद्यमान राजनीतिक परिस्थितियों में, उस मन्डी में अन्य क्षेत्रों की फसल का मुकाबला कर सकता है।

द्वीप का आधे से भी कम क्षेत्र उत्पादन के उपयोग में लिया जा रहा है, शेष भारी वनों से नष्टप्राय है अथवा ढका हुआ है और खेती योग्य नहीं है परन्तु पुर्टोरिको के समान घना-बसा देश सचेत रूप से, आधा एकड़ भूमि को भी अनुपयोगी और अनुत्पादक नहीं छोड़ सकता।

घने-बसे पुर्टोरिको की सीमांत पर उसकी अनुपजाऊ भूमि है और आवश्यक था कि उनकी कोई न कोई आर्थिक उपयोगिता खोजी जाय। इस आवश्यकता ने वहाँ मिट्टी, भू-गर्भ व भूमि की वर्तमान उपयोगिता सम्बन्धी सर्वेक्षण एवं कई साहसी योजनाओं एवं परीक्षण-कार्यों को जन्म दिया। उदाहरणार्थ नष्टप्राय भूमि उपयुक्त घास लगाकर, जो दुधारी गायों का आहार हो सकती है, पुनः भूमि-श्रम को रोकने हेतु अवांछनीय चारागाहों के विरुद्ध उपयुक्त प्रतिबन्ध लगाकर, पुनर्जीवित की जा सकती है परन्तु तभी जब

कि किसी ने काफी धन लगा कर वहाँ डेयरी के लिए, और दूध व दूध की अन्य वस्तुओं के लिए, उपयुक्त व्यवस्था की हो।

पुर्टोरिको के आधुनिक आयोजक और यांत्रिक द्वीप की कृषि का फैलाव करने हेतु हर संभावना पर विचार करते हैं और उन्हें लगातार इस बात का ध्यान रखना होता है कि उस समाज की जिसमें जीवन-यापन का स्तर बढ़ता जा रहा है, कौन सी और क्या-क्या आवश्यकताएँ हैं। कई परीक्षण किये गये, कुछ सफल हुये, परन्तु अन्त में असफलता ही अधिक हाथ लगती रही। "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" द्वारा आरम्भ किये गये विकास-कार्य ने एक समय वनीला को आयवर्धक उपज बना दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के कुछ वर्ष बाद तक यह कार्य ठीक चला, और तब उसके लिये मेक्सिको के, जहाँ वेतन-दर बहुत कम हैं, वनीला का मुकाबला करना संभव नहीं रह गया। चकोतरा (एक प्रकार का नीबू) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और उसके कुछ वर्षों बाद तक एक लाभप्रद उपज थी। परन्तु जब, सिसली ने द्वितीय महायुद्ध के बाद पुनः चकोतरा निर्यात करना आरम्भ कर दिया; पुर्टोरिको की मंडियां, इस उपज की भारी उत्पादन लागत के कारण, समाप्त हो गयीं। हाल के वर्षों में काली-मिर्च भी इस नयी दुनिया में लायी गई है और उसके लिये एशिया से आने वाला एक नया एशियाई-मसाला है। आशा की जाती है कि यह उपज पुर्टोरिको के लिए अत्यन्त लाभप्रद होगी और अमेरिकी मंडियों में २०० डालर प्रति एकड़ की निम्नतर दर से लगाकर आज ६००) डालर प्रति एकड़ की विद्यमान दर के बीच शुद्ध आय प्रदान करेगी।

आशंकायें और असफलतायें किसी प्रकार बाधक नहीं हो सकतीं। किसी न किसी रूप में पुर्टोरिको की चप्पा-चप्पा भूमि को उत्पादक बनाने के लिये—चाहे उसकी उपज कम आय देने वाली हो या

अधिक, प्रयत्न किया जाना है। और इसके लिये सावधानी-पूर्ण आयोजन, सावधानीपूर्वक समरूप विकास-यत्नों तथा अनुसंधान की आवश्यकता है।

प्राकृतिक साधनों का भारी अभाव होते हुए भी, चीनी-उद्योग के रूप में, पुर्टोरिको को एक अपरिमित महत्व का साधन प्राप्त है। इसका श्रेय उस राजनीतिक अवस्था को है जिसके अन्तर्गत कामनवेल्थ समूची अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का एक अङ्ग बना हुआ है।

अमेरिकी आर्थिक ढाँचे के भीतर, पुर्टोरिको इस ढाँचे के अन्य सदस्यों के सामान्य धन, पूँजी और ऋण की सुविधाएँ ग्रहण कर सकता। कम खर्चीली शक्ति की सुविधा, अथवा नयी पूँजी या धन की दृष्टि से निम्न—परन्तु बढ़ते हुए—वेतनों या स्थानीय मंडियों की समृद्धि के लिए दी जाने वाली सरकारी, छूट, अथवा पुर्टोरिको के उत्पादनों में सुधार होने के साथ-साथ कच्चे औद्योगिक माल की मात्रा में वृद्धि, अथवा पुर्टोरिको में अर्जित धनराशि पर आय कर की संघीय माफी आदि की सुविधाओं की दृष्टि से आज पुर्टोरिको में जो अमेरिकी पूँजी लगी है वह न्यूयार्क अथवा न्यूजर्सी की उस पूँजी से कदापि अधिक नहीं है जो किसी न किसी कारण से तेनेसी घाटी योजना, या टेक्सास या जार्जिया में लगायी गयी है। अमेरिकी पूँजी भारी ओज भी प्रदान करती है। जैसे-जैसे यह पूँजी स्थानीय वातावरण को अपने अनुकूल पाती जाती है, जैसे-जैसे वहन में वेतन-मानों नये लाभों, नयी बचत की स्थापना करती जाती है, वैसे-वैसे वह एक बड़ी स्थानीय पूँजी का भी निर्माण करती जाती है, जो पुर्टोरिको के विकास-यत्नों में लगती है और बाहरी पूँजी को घटाने का कारण बनती है।

१९४८ में बाद से, जबकि औद्योगीकरण हेतु, कर-माफी और पुर्टोरिकी सरकार के सहयोग आदि के अस्थायी प्रलोभन देते हुये अमेरिका की पूँजी प्राप्त करने हेतु जोर-शोर से यत्न करने का

निर्णय सरकार ने किया, पुर्टोरिको में सैकड़ों नये उद्योग खड़े हो चुके हैं। और भी बहुत से कारखाने प्रति वर्ष लगाये जा रहे हैं। यदि पुर्टोरिको अमेरिकी अर्थ व्यवस्था का एक अभिन्न अंग-अंग नहीं होता तो उनकी स्थापना न होती, न हो सकती थी।

ये कठोर और दुर्दमनीय तत्वों की स्वतन्त्रता के प्रति मुनोज के विचारों के परिवर्तन में बड़ा कारण बने और अमेरिका से पृथक राजनीतिक स्वतन्त्रता को अवांछनीय बनाने में वे प्रतिवर्ष योग देते आ रहे हैं।

भावनाएँ चाहे कुछ भी क्यों न हों, इन्डिपेन्डेन्स पार्टी की घटती-बढ़ती मत-शक्ति कुछ भी क्यों न हो, इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि अमेरिकी व्यवस्था के अंतर्गत पुर्टोरिको की अपने विलक्षण ऊर्ध्वगामी विभ्रमचक्र में जितनी अधिक उन्नति होती जाएगी, राष्ट्रीय प्रभुसत्ता प्राप्त करना उतना ही कठिन होता जायगा, और यदि ऐसा प्रभुसत्ता प्राप्त कर भी लिया गया तो वह उतना ही विनाशक भी होगा।

—X—

अध्याय १२

कृषि

भूमि सम्बन्धी आधुनिक भ्रमजाल जो विशेषकर चीनी-उद्योग के मामलों में सामने आता है, यह है कि सामाजिक-न्याय यह आवश्यकता प्रदर्शित करता है कि उपलब्ध भूमि का वितरण यथासंभव समानरूप से, यथासंभव अधिकतम व्यक्तियों में किया जाय —अर्थात छोटे-छोटे टुकड़ों में। उधर औद्योगिक-सक्षमता और भारी यंत्रों के उपभोग और खर्चीले कारखानों का यह आग्रह रहा है कि काम बड़े पैमाने पर हो। खेती से जीविका कमाने वाला किसान, जिस के पास जमीन थोड़ी है, पूँजी के साधन अल्प हैं और जिसे बैंक से ऋण नहीं मिल सकता, मात्र अपने को अस्तित्व में तो रख सकता है परन्तु जनसंख्या में वृद्धि होने और भूमि के कम उपजाऊ होते जाने के साथ-साथ यह दयनीय अवस्था और भी बिगड़ती जायेगी और अधिक सशक्त आर्थिक शक्तियों की दया पर निर्भर वह किसान पुनः अपनी वह भूमि भी खो देगा।

इस का उत्तर प्रतीत होता था: सहकारी आन्दोलन, जैसा कि डेनमार्क और मेक्सिको में था। परन्तु सबल, सुसंचालित सहकारी समितियों के लिये वर्षों के परिश्रम एवं धैर्यपूर्ण खतरनाक कठिनाइयों से मुक्त कार्य की आवश्यकता होती है। १९४१ में पुर्टोरिको में सहकारिता की भावना की जड़ें इतनी सुदृढ़ नहीं थीं कि उसे द्वीप की अर्थ-व्यवस्था के मुख्य अंग का महत्वपूर्ण भार सौंपने का विश्वास किया जा सके। यदि एक भी वर्ष की फसल नष्ट हो जाती, विनाश उपस्थित हो जाता। अतएव इसी कारण मुनोज के कल्पनापूर्ण भूमि

कानून में विविध उपभोग हेतु सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण की व्यवस्था थी। कुछ भूमि को तो, गन्ना उत्पादन के लिये और कदाचित अन्य नगद-उपजों के सरकार स्वामित्व के और सरकार संचालित अनुपातिक लाभ वाले कृषि-क्षेत्रों में मिला दिया जाता था, अधिकतम २५ एकड़ों के टुकड़ों में किसानों को बेच दी जाती थी, और अधिकांश भूमि, यद्यपि उस पर स्वामित्व तो सरकार का ही रहता था, परन्तु उपभोग हेतु, भूमिहीन किसानों के परिवारों को दी जाती थी, जिससे वे खेती में अपने पैर जमा सकें। अन्य दृष्टि से अनुपयोगी पायी जाने वाली भूमि द्वीप के वन्य-विभाग को संरक्षण-सेवा हेतु सौंप दी जाती थी। इसके अतिरिक्त भूमि अभिशक्ति को दलदल भरी और अनुर्वरा भूमि का अधिग्रहण करने और द्वीप की कृषि-योग्य भूमि में वृद्धि करने हेतु उनका पुनरुद्धार करने का अधिकार भी दिया गया। वर्तमान में (१९५३), भूमि अधिशक्ति के पास ९८,००० एकड़ भूमि है, जिसमें से ४४,००० भूमि पर, मुख्यतया गन्ने की, खेती होती है।

सरकारी कृषि-क्षेत्र इस नाते बेजोड़ हैं कि उनका संचालन लाभांश-वितरण के आधार पर किया जाता है। इन कृषि क्षेत्रों के व्यवस्थापक लाभ में से हिस्सा भी पाते हैं और वेतन भी उन्हें मिलता है। हजारों कृषि-मजदूरों को कानून से निर्धारिता बुनियादी वेतन और उसके साथ लाभ में से हिस्सा मिलता है, यह हिस्सा किसी एक मौसम में काम के घन्टों के अनुपात से वितरित होता है, कभी-कभी यह लाभांश बोनस अर्जित वेतन के १५ प्रतिशत से भी अधिक होता है; १९५२ में वेतनों के अतिरिक्त वितरित आनुपातिक की राशि लाभ ६००,००० डालर से भी अधिक थी।

चीनी-निगम आज मुख्य रूप से, मिलें चलाने वाले, औद्योगिक कारोबार हैं और अधिकांश गन्ना सरकारी कृषि-क्षेत्रों और निजी उत्पादकों द्वारा दिया जाता है। ये निगम, गन्ना पाते हैं; गन्ने के

विषय में निश्चित हैं और अपनी पूँजी के रक्षण की अधिकतम सुविधा उन्हें प्राप्त है। वास्तव में, जहाँ उनकी पूँजी का विनियोग बहुत भारी मात्रा में घट गया है, उनका प्रतिशत-लाभ अधिक ही है।

जहाँ आनुपातिक लाभ के आधार पर कार्य कर रहे कृषि-क्षेत्रों का यांत्रिक संचालन प्रति एकड़ अधिकाधिक उपज के कारण तथा ऐसे सभी क्षेत्रों द्वारा काम में लिये जाने वाले यंत्रादि के केन्द्रीय संग्रह एवं उनके मरम्मत आदि की केन्द्रीय व्यवस्था के कारण उत्तम प्रतीत होता है वहाँ उन के सामाजिक पहलुओं में अभी भी काफी अपेक्षित सुधार किया जाना शेष है। अभी भी कठोर तथ्य यह है कि; इन क्षेत्रों के बहुत से मजदूर, किसान अपने में भूमि के प्रति वांछनीय लगाव पैदा नहीं कर पाये हैं; अभी भी वे यह मानते प्रतीत होते हैं कि सारा कारोबार बेरोजगारी के दौर को नियन्त्रित करने के हेतु सरकार द्वारा संचालित है; उनका यह दृष्टिकोण ऊपर उठने की आवश्यकता उपस्थित करता है और शरीर श्रम में कमी करने वाले यंत्रों को काम में लगाने के मार्ग में बाधक है भूमि अभिशक्ति को ऐसी कोई सोलह मजदूर-यूनियनों से, जो उतनी तेज तर्रार हैं जितनी कि उनकी वे मांगें जो बहुधा दूरदर्शिता पूर्ण नहीं होतीं—सुलझना पड़ता है और भूमि-अभिशक्ति द्वारा खरीदी गयी दो चीनी, मिलों में, उसकी सद्‌भावनापूर्ण नीतियों के बावजूद भी, मजदूरों के झगड़े काफी मात्रा में होते रहे हैं।

यह स्थिति कृषि, उत्पादन, निर्माण और सरकारी-सेवाओं में रोजगार की उपलब्धियाँ पुर्टोरिको द्वारा जैसे-जैसे बढ़ायी जायेंगी निश्चय ही सुधरती जायेंगी; अभी तो वह श्रमिक-शिक्षा की आवश्यकता उपस्थित करती है और इस दिशा में जोर-शोर से कार्य किया जा रहा है।

कार्यक्रम के आरम्भ से लगाकर कुल ४७५,००० डालर की राशि पर सरल किश्तों पर ५०० से अधिक कृषि-क्षेत्र छोटे किसानों को

जिन्हें इस द्वीप की विविध एजेन्सियों और संघीय कृषि गृह-प्रशासन द्वारा उन्हें स्वतन्त्र कृषि-उत्पादकों के रूप में अपनी जड़ें जमा लेने के लिए सहायता मिली, ४७५,००० डालर में बेचे जा चुके हैं। इसी के साथ २६,५५० छोटे भू-खंड, जिनका उपयोग अब १००,००० से अधिक जन संख्या कर रही है, घर से लगे हुए खेतों के रूप में, उपभोग हेतु उन किसानों को दिए गये हैं जो पहले भूमिहीन थे और खेती में मजदूरी कर वेतन पाते थे, कम्पनी की पहले वाली बस्तियों का स्थान यथासंभव तेजी से भूमि से जीविका अर्जित करने वालों की बस्तियाँ बसायी जा रही हैं। उनके मकान उनके अपने हैं परन्तु भूमि की जोत सरकार अपने पास रखती है ताकि अगाऊ सौदों के सट्टे की लहर इस कार्य को पराजित न करने पाये।

भूमि देने के पूर्व आयोजन मंडल उसके भावी उपयोगों का सतर्कता से अध्ययन एवं नियोजन करता है। वह आकार में दो सौ परिवारों और कोई एक हजार निवासियों वाले ग्रामों की बसाहट के उपयुक्त, और श्रमिकों के काम के स्थानों की दृष्टि से निकट स्थान पर स्थित होनी चाहिए। ग्राम का इस भाँति समुच्चय न केवल विद्युत-शक्ति, अच्छे पानी, और नालियों आदि के व्यवसायों को ही कम खर्चीला बनाता है वरन् वह सहकारिता और सामुदायिक-कार्यक्रमों द्वारा समरूप सामुदायिक भावना की स्थापना को भी सरल बनाता है।

नवनियोजित ग्रामों में बसने की पात्रता रखने वाले व्यक्तियों से भूमि का उपयोग वास्तव में किसे मिले, इसका निश्चय पर्चियाँ डाल कर किया जाता है। इन भू-खंडों पर मकान बनाने की समस्या वर्षों गम्भीर रही है। चाहे आयोजन-मंडल कुछ भी क्यों न करना चाहता हो, मजदूरों के पास, जो पहले से अब कई गुना कमा रहे थे, साफ तौर पर अच्छे मकान बनाने हेतु धन नहीं था। जितनी गति से भूमि वितरित की गयी, उतनी ही तेजी से देखी न जा सकने वाली ग्रामीण गन्दी बस्तियाँ भी खड़ी होने लगीं। तब, कुछ वर्षों पूर्व,

सामाजिक कार्यक्रम प्रशासन के कार्य निर्देशक लुइस रिवेरा सेनटोस संघीय आवास प्रशासन के जेकब क्रेन से एक विचार प्राप्त कर तीन सौ डालर की आश्चर्य में डाल देने वाली अल्प लागत से मजबूत और साफ सुथरे कंक्रीट के मकान बनाने की एक योजना का विकास किया। इन्जीनियरों ने उनकी हँसी उड़ाई : कहा कि तीन सौ डालर से तो वे नींव भी खड़ी नहीं कर सकेंगे, और पूरे मकान का खर्च एक हजार-डालर से अधिक ही होगा। रिवेरा सेनटोस ने मुनोज के समीप जाकर कहा : १९४० में आपने हमसे कहा था कि हम आपको अपने मत, सिर्फ इसी बार दें ताकि आप हमें बतला सकें कि आप क्या कर सकते हैं। मैंने आपको ही मत दिया था और ऐसे ही कारण को लेकर आज मैं आप से मत मांग रहा हूँ। मुझे केवल अवसर दिया जाय। परिणामस्वरूप रिवेरा को १०,००० डालर मिले, उन्होंने इस धनराशि से सत्ताईस मकान खड़े किये और फिर भी उनके पास धन बच गया।

आज जो व्यक्ति इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अपना मकान बनाता है उसे तीस डालर की राशि तो आरम्भ में जमा करनी होती है : शेष रकम वह दस वर्षों में प्रति माह २.२५ डालर की दर से चुका सकता है। सरकार उसे सीमेंट-मिश्रण की मशीन और मकान--बनाने का तैयार सामान देती है। यह मकान का नक्शा तथा सामग्री एवं यंत्रों को पहुँचाने की और निर्माण कार्य की देख-रेख की सुविधाएँ बिना मूल्य प्रदान करती है और लागत के मूल्य पर सीमेंट और उसे पुष्ट करने वाला इस्पात बेचती है। तब अपने परिवार और पड़ोसियों की सहायता से वह स्वयं अपना मकान बना लेता है। नाहरू के कीड़ों की गम्भीर समस्या हल करने में सरकार की सहायता के लिए उसे मकान के पृष्ठ भाग में पाखाना अवश्य ही बनाना होता है। पुर्टोरिको का स्वास्थ्य-विभाग ऐसे हजारों शौचालय, प्रति शौचालय कोई ६० डालर की दर से, बनाये थे और अब रिवेरा सेनटोस उनका

निर्माण, अपने स्वयं, सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत पन्द्रह डालर की लागत से करवा रहे हैं।

भूमि अभिशक्ति का सामाजिक कार्यक्रम प्रशासन और शिक्षा-विभाग का सामुदायिक-शिक्षा खंड सरकार द्वारा स्थापित सर्वाधिक उद्देश्यपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण एजेन्सियों में से हैं, इस द्वीप में चार-सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रति वर्ष उन देशों से, जिनकी बुनियादी समस्या पुर्टोरिको के ही समान अल्प आय से सामाजिक सुधारों की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति है ; आने वाले प्रेक्षकों में से सैकड़ों इन एजेंसियों के काम से समान रूप से प्रभावित हैं, और उनकी शिक्षाएँ भारत, हिन्देशिया, और अफ्रिका तथा दक्षिण अमेरिका के विभिन्न हिस्सों तक लेकर जाते हैं। वर्षों तक, वाशिंगटन से चार-सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्व के विविध भागों में भेजे जाने वाले आवास विशेषज्ञ भी पहले उस महत्त्वपूर्ण सामाजिक आविष्कार का अध्ययन करने के लिये, जिसके माध्यम से वह द्वीप अपनी ग्रामीण तथा शहरी आवास समस्याओं को हल कर रह था, पुर्टोरिको जाते थे।

× + ×

कृषि का, चाहे किसी व्यापक कार्यक्रम के, जो कि मौजूद नहीं है, अनुरूप न भी सही परन्तु, क्रमिक रूप से जिस प्रकार आधुनिकीकरण किया जा रहा है, यू० पी० ३ नम्बर का मीठा आलू इसका एक उदाहरण है। विश्वविद्यालय ने विशेष गुण सम्पन्न, और आलू की किसी भी विद्यमान किस्म से कई बातों में अच्छा, मीठा आलू तैयार किया था। फिर भी उसे कोई नहीं बोता था- कुछ तो इसलिए कि विक्रय की सुविधाएँ बहुत कम और अनिश्चित थीं और पहले कारण के ही परिणामस्वरूप, कुछ इसलिये कि खाद्य-उपजों की खेती के लिये न तो सरकार से और न ही निजी रूप से ऋण मिल सकता था। यू० पी० ३ विशेष रूप में डिब्बों में बन्द कर

बाहर भेजने के लिये अत्यन्त ही उपयुक्त था सरकार यह चाहती थी कि इस हेतु कोई कारखाना खोले। और, तभी, यह प्रश्न एक अति-व्यापक विष चक्र मेंउ लझ गया। कारखाना लगाने के लिये कोई पूँजी लगाने को तैयार नहीं हो रहा था, क्योंकि इस आलू का उत्पादन नहीं था ; सरकार कारखाना डालने वाले को स्वयं अपनी जमीन खरीदने और बागान के पैमाने पर इस आलू को पैदा करने की अनुमति नहीं दे रही थी, कोई किसान ऐसा आलू उपजाने के लिये तैयार नहीं था, क्योंकि अपेक्षाकृत सुनिश्चित मंडी की सुविधा देने वाला कोई कारखाना नहीं था। अंत में, सरकार को मुख्य भूमि का एक ऐसा कारखानेदार व्यक्ति मिल ही गया जो इस शर्त पर पुर्टोरिको में अपना कारखाना बनाने के लिये राजी हुआ कि उसके हितों की रक्षा हेतु कम से कम ३०० एकड़ भूमि में यू० पी०—३ आलू की खेती करवायी ही जाय। इसके बाद, बैङ्कों को तैयार किया गया कि वे प्रस्तावित कारखाने से यातायात-परिधि के भीतर यह आलू पैदा करने वाले किसानों को ऋण प्रदान करें। यह कारखाना १९५३ में, इसाबेला में, आरम्भ हुआ।

कृषि किस प्रकार उद्योग से निकटतम रूप से जुड़ी हुई है, उसका नाटकीयतापूर्ण उदाहरण है केरीबी-कारखाना, जो निजी पुर्टोरिकी पूँजी से संतरों व अनानासों के रस का संचय कर, उन्हें डिब्बों में बन्द करने एवं उन्हें ठंडा करने के लिये बनाया गया। कठोरतापूर्वक उच्चकोटि के उत्पादन को, जो आधुनिक औद्योगिक कारोबार के लिये नितांत आवश्यक है, किन्तु गरीब व पिछड़े हुये देशवासियों द्वारा जिसे सीखना कठिन होता है ; आचरित करते हुये यह कारखाना आज अनानास की खेती को नया प्रोत्साहन देता है और साथ ही कहवा उत्पादकों को जो लम्बे समय से कहवे के पौधों पर छाया करने हेतु खट्टा पहाड़ी संतरा बोते आये हैं ; आय का नया साधन भी प्रदान करता है। केरीबी-कारखाने की उत्पादित सामग्री इतनी

उत्कृष्ट और इस द्वीप में इतनी लोकप्रिय है कि अभी उसका महाद्वीप को निर्यात नहीं किया जाता। १९५२ में इस कारखाने के मालिक संतरे के छिलकों एवं अनानास के टुकड़ों को सुखाने एवं उन्हें कूटने के यंत्र लगा रहे थे, ताकि यह निरर्थक सामग्री पशुओं के चारे के रूप में पशु पालक किसानों को बेची जा सके।

पुर्टोरिको में खाद्य उपजों की खेती की जटिलतम समस्या है—संगठित एवं वैज्ञानिक पद्धति वाली मंडी की सुविधा का अभाव। कोई व्यक्ति, हो सकता है कि एक अच्छा उत्पादक-किसान हो, परन्तु यदि उसे अपनी फसल हाथ गाड़ी में लाद कर शहर तक ले जाना पड़े और वहाँ घर-घर जाकर उसे बेचने की व्यवस्था करना पड़े, तो उसका काम नहीं चल सकता। विकल्प आम तौर पर यह रहता है कि वह अपनी उपज किसी स्थानीय बाजार में ले जाय। श्रेणी-निर्धारण व संग्रहण आदि की सुविधाओं के अभाव में वह अपना माल भी उसी समय बाजार में लेकर आयेगा जब कि उसका पड़ोसी अपना माल लेकर। परिणामतः, विद्यमान सुविधाएँ समूचे द्वीप में शाक-सब्जी का तेजी से वितरण करने के लिये अनुकूल न होने के कारण, तथा और भी गंभीर बहुलता, भावों को गिरा देती और काफी माल इस दौरान में नष्ट भी हो जाता। ऐसी परिस्थितियों में किसान यदि ऋण के लिये अच्छा जोखिमदार न हो और अपनी जमीन व परिश्रम गन्ना पैदा करने में लगाये और देश के लिये आवश्यक ६० प्रतिशत खाद्य-उपजें महाद्वीप से खरीद कर उन्हें ऊँची कीमतों पर निर्यात करनी पड़े, तो उसके लिये वह किसी रूप में दोषी नहीं है।

सहकारी समितियाँ, जिनको सरकार यत्नपूर्वक स्थापित करती जा रही है, कृषि उपजों में फेर-बदल करने के आवश्यक कार्य में वितरण समस्या को हल कर बहुत सहायक हो सकती है; इनमें से कुछ समितियों ने सब्जियाँ न्यूयार्क भेजने का कार्य—जो उन्हें

पुर्टोरिको में वितरित करने की अपेक्षा अधिक आसान, अधिक सम्भव और अधिक लाभप्रद है—आरम्भ भी कर दिया है।

२३० लाख डालर की सरकारी रकम से सेन जुआन के निकट एक विशाल, केन्द्रीय मंडी बनायी जा रही है; जहाँ पशुवधशाला भी होगी और संग्रहण, वितरण आदि की सुविधाएँ भी। माल पुराने वाले संगठन के रूप में यह मंडी पुर्टोरिको किसानों से उनकी कृषि-उपज और मांस खरीद कर, इस माल का, और आवश्यक होने पर आयात की हुई खाद्य-सामग्री का संग्रहण करने राजधानी के विशाल क्षेत्रों में होटलों, थोक और खुदरा विक्रेताओं, रेस्टोरेंट आदि को-इस सामग्री के वितरण की व्यवस्था इस भाँति करेगी कि जिस में उपभोक्ता को एक-समान और बढ़िया किस्म का माल देने और उस के स्वास्थ्य की पूर्ण रक्षा—जिस की अपेक्षा महाद्वीप में उपभोक्ता करते हैं—ग्यारंटी हो।

इसमें संदेह नहीं कि यह योजना राजधानी के आसपास की कुछ उर्वर भूमि पर खाद्यान्नों की खेती को बहुत बढ़ावा देगी। खेती को प्रोत्साहन मिल चुकने और केन्द्रीय मंडी का काम चल सकने पर, सरकार उसे किसी निजी-संचालक को बेच भी सकती है और धन का सदुपयोग पुनः पुर्टोरिको की अर्थ-व्यवस्था के किसी और विषम चक्र को समाप्त करने के लिए कर सकती है।

कृषि-ऋण का अभाव कृषि के आधुनिकीकरण में एक महान बाधा है। शिक्षित किये जाने और कृषि विस्तार कार्यक्रम की अपेक्षाकृत सफलताओं के बाद भी किसी भी किसान के लिए तब तक सम्भव नहीं कि वह ठोस तरीके व्यवहार में लाये और साथ ही अपनी भूमि का संरक्षण भी कर सके, कि रासायनिक उर्वरकों, ट्रैक्टरों आदि के लिए उधार लेने की उसे सुविधा न हो, फिर, जब तक वह ठोस तरीके व्यवहार में नहीं लाता, वह उधार भी प्राप्त नहीं कर सकता।

बैंकरों ने अब एक समिति संगठित की है जो कृषक-ऋण-व्यवस्था का फैलाव करने की समस्या पर परिश्रमपूर्वक विचार कर रही है।

पुर्टोरिकी जानते हैं कि वे अपनी कृषिका आधुनिकीकरण, साथ ही अपने जीवन और अर्थ-व्यवस्था के अन्य पहलुओं का आधुनिकीकरण किये बिना नहीं कर सकते। जिस गति से इन पहलुओं की प्रगति होगी, उसी गति से कृषि भी प्रगति करेगी न उससे तेज और न उससे कुछ धीमी।

—x—

अध्याय १३

बिजली और उद्योग

पुर्टोरिको का महान विकास-यत्न यद्यपि १६४० के चुनावों के साथ आरंभ हुआ, उसे उन कई तत्वों से अपार सहायता मिली जो उस क्रान्तिकारी वर्ष के भी बहुत पहले से विद्यमान थे। एक तथ्य था पुर्टोरिको का अमेरिकी आर्थिक-व्यवस्था में सम्मिलित किया जाना, दूसरा था तेजी से विकसित हो रहे रम-उद्योग पर लगाये गये एक्सा-इज कर को अपने पास रखने एवं उस का न्यायपूर्ण उपयोग करने की पुर्टोरिकी सरकार को स्वतंत्रता; तीसरा निसंदेह यह तथ्य था कि सरकार द्वारा सस्ती बिजली का उत्पादन और वितरण काफी समय पूर्व ही एक विधान-सम्मत सिद्धान्त के रूप में स्थापित हो चुका था और शक्ति-योजनाओं एवं शक्ति वितरण लाइनों द्वारा क्रियान्वित किया जा चुका था।

वेगा बाजा नगर उत्तर तटवर्ती मैदान में, सेन जुआन से कोई बीस मील पश्चिम में है। १६४६ में इस नगर की ८००० से कुछ अधिक संख्या के रोजगार कर सकने वाले काम-योग्य निवासियों के बहुत छोटे अंश को विशेषतः चीनी उद्योग में, गन्ने के खेतों और समीपवर्ती मिलों—रोजगार मिला हुआ था। शेष बेकार थे। जिन लोगों के पास काम थे वे भी प्रति वर्ष आधे समय बेकार ही रहते थे और कुल मिलाकर पूरे नगर के लिये उन की वार्षिक आय ७०,००० डालर, अथवा काम योग्य व्यक्तियों के लिए प्रति व्यक्ति ६ डालर, होती थी।

१९४८ में पुर्टोरिकी सरकार ने अपनी औद्योगीकरण नीति बदल कर, सरकार-स्वामित्व और संचालन के स्थान पर, राज्य सहायता प्राप्त निजी पूंजी द्वारा औद्योगीकरण को सक्रिय प्रोत्साहन, कर दी थी। इस द्वीप पर जो बहुत से नये उद्योग स्थापित होने लगे उन में से चार उद्योगों—एक चीनी मिट्टी का सामान बनाने का कारखाना दो इलेक्ट्रिक कम्पोनेन्टस बनाने के कारखाने और एक नर-बोल्ट और वायुयानों के पुर्जे बनाने का कारखाना—को वेगा बाजा के मेयर एन्जेल सैंडिन ने अपने नगर में जमने के लिये राजी कर लिया। इन कारखानों ने, जिन्होंने ७०० व्यक्तियों को रोजगार दिया, बेकारी की समस्या पूर्णतया हल नहीं की और १९५३ में वेगा बाजा के काम कर सकने योग्य व्यक्तियों में से कोई ३००० बेकार ही थे। परन्तु उन्होंने कुल मिला कर इस नगर के लिये चमत्कार ही कर दिखाया। केवल कारखानों के मजदूरों ने चार वर्ष पूर्व समूचे नगर की ७०,००० डालरों की संयुक्त आय के मुकाबले १९५३ में कुल मिलाकर ८००,००० डालर पैदा किये।

वेगा बाजा के औद्योगीकरण के परिणामों का विवरण देते हुए न्यूजवीक लिखता है: एक वस्त्र-भंडार-स्वामी ने गत सप्ताह बतलाया है कि आज मेरे पास इतना कारोबार है जितना बीस वर्षों में पहले कभी नहीं था। गृह उपकरणों का विक्रय दो वर्षों से बढ़ कर दुगना हो गया है। एक दुकान ने बड़े दिन के अवसर पर उन्तालीस और मातृ-दिवस पर चालीस रेफ्रीजरेटर बेचे। यहाँ की तङ्ग सड़कों पर दौड़ने वाली काफी खर्चीली, चमकीली मोटर गाड़ियों की संख्या बढ़ने लगी है। सरकार भी बहुत कुछ यत्न कर रही है। न्यूजवीक आगे चल कर लिखता है: छः माह पूर्व एक साफ सुथरे, चौंतीस शैय्याओं से युक्त एक अस्पताल का निर्माण पूरा किया गया। १८८ परिवारों के लिए एक अल्प लागत वाला स्वयंपूर्ण आवास गत माह

ही आरम्भ किया गया है। पिछले वर्ष में नये मकान बनाने के इकतीस परमिट दिए गये हैं।

वेगा बाजा के अनुभव वैसे ही घटनाओं के अनुभव हैं जो पुर्टोरिको के अन्य दर्जनों नगरों में घटित हो रही हैं। देखा जाय तो प्रति सप्ताह इस द्वीप में कहीं-कोई एक नया कारखाना आरम्भ होता है, १९५२-५३ में इनकी कुल संख्या बयासी थी तथा जुलाई १९५३ में सैंतीस और कारखाने बन रहे थे। ये आंकड़े उन कारखानों से सम्बन्धित हैं जो किसी न किसी प्रकार की सरकारी सहायता से स्थापित हुए हैं। १९४८ से लेकर, जब कि वर्तमान नीति निर्धारित की गयी, मई १९५४ तक इनका योग ३२६ हो जाता है। नया सामाजिक और आर्थिक वातावरण, बिना किसी सरकारी मदद के कतिपय उत्पादन कारोबार के विकास के लिये भी, स्वस्थ है। १९४० के क्रान्तिकारी वर्ष के बाद तेरह वर्षों में पुर्टोरिको में—सरकार की मदद से या बगैर उसके—आरम्भ नये कारखानों की कुल संख्या १,३८८ है। सरकार की मदद के बिना आरम्भ किये गये कारखानों में से अधिकांश छोटे और पुरानी इमारतों में और उन में हैं और उन में थोड़े ही मजदूर काम करते हैं। तथापि औद्योगीकरण की दिशा में सराहनीय-आरम्भ का प्रतिनिधित्व करते हैं। औद्योगिक उत्पादनों से इस द्वीप की कुल आय १९४० में २९० लाख डालर और १९५२ में ११८० लाख डालर थी।

क्योंकि निजी पूँजी औद्योगीकरण के लिये सामने नहीं आ रही थी, टगवेल के शासन काल में स्थापित सरकारी उद्योग १९२० में लुइस फेरी को बेच दिये गये, तब रास्ता खुला और निजी पूँजी प्रगट हुई। कारखानों के संचालन में सरकार की अपनी कठिनाइयाँ थीं। सरकार यांत्रिक व्यवस्था तो सरलता से कर सकती थी; परन्तु विक्रय-व्यवस्था, उत्पादनों का व्यावसायिक वितरण, अधिक कठिन

था। तथापि यह अपरिहार्य ही था कि प्रबन्ध सम्बन्धी निर्णय बहुधा राजनीति को दृष्टि में रखकर किये जाँय।

काँच का कारखाना, जो अमेरिकी-मंडी में सोडा ऐश की अत्यन्त तङ्गी के कारण, अपनी क्षमता से भी काफी कम मात्रा में उत्पादन कर रहा था, एक विनाशकारी हड़ताल के कारण महीनों बन्द पड़ा रहा, इसके परिणामस्वरूप सरकार संचालित अंतिम दो वर्षों में रम-उद्योग को बोतलों के लिए दूसरे दरवाजे खटखटाने पड़े,—तब लाभ की आशाएँ अधिकाधिक हानि में परिणत हो गईं।

गत्ता मिल ने रोजगार प्रदान करते हुये और रम-उद्योग की रक्षा हेतु अपने बनाये हुये गत्ते के डिब्बों की सहायता देकर भी सरकार संचालन में हानि उठाई।

फेर्दों के निजी प्रबन्ध के अन्तर्गत भूतपूर्व सरकारी कारखानों में श्रम-विवाद समाप्त हो गये और उनका नया मालिक लगभग तुरन्त ही उनसे अच्छा मुनाफा कमाने लगा। फेर्दों ने दो वाष्पपोत (स्टीमर) भी खरीदे जिनका उपयोग सीमेंट और बोतलें, बिक्री के लिये, मुख्य भूमि और कैरेबियन सागर के अन्य देशों और अधीन क्षेत्रों में भेजने हेतु और साथ ही यंत्रादि, इस्पात और अन्य सामग्री पुर्टोरिको लाने के लिये किया जाता है। परम्परागत, चीनी के अतिरिक्त कई नये औद्योगिक उत्पादनों का 'निर्यात' करने वाला पुर्टोरिको के पास एक बीज रूप में व्यापारिक जहाजी बेड़ा है, जो द्वीप के औद्योगीकरण के विकास के साथ-साथ अपने अनुपात का भी विकास करता हुआ किसी दिन काफी बल प्राप्त कर लेगा। जहाजरानी के लाभ पुर्टोरिकी बैङ्क के खातों में जमा होने लगे हैं।

कारखानों की बिक्री से प्राप्त धन राशि एक प्रकार से चक्रवान राशि समझी जाती है, उसका उपयोग, विनियोजित निधि के साथ, निजी पूँजी के माध्यम औद्योगिक विकास की गति द्रुत करने हेतु किया जायेगा। इस कामनवेल्थ का एक कानून सरकार की व्यावसायिक

कारोबार में अल्पमति हिस्सेदार होने से, जिसकी कि सम्भावना है, और जो कि बहुधा चिली व वेनेज्युएला जैसे दक्षिण अमेरिकी देशों में है भी, रोकता है। सरकार ऐसे किसी औद्योगिक कारोबार में आर्थिक रूप से हिस्सा नहीं ले सकती जिस पर कि उसका नियंत्रण नहीं है, और वर्तमान सामान्य नीति राज्य स्वामित्व की ओर उसके द्वारा एवं संचालित उद्योगों की स्थापना के विरुद्ध है। फिर भी, कभी-कभी 'विषम चक्र' की स्थिति ऐसा प्रसङ्ग उपस्थित कर देती है, जहाँ निजी पूँजी से औद्योगीकरण को द्रुत करने हेतु सरकारी पूँजी का उपयोग आवश्यक हो जाता है।

उदाहरणार्थ, औजार और डाई बनाने को एक राज्य स्वामित्व का कारखाना डालने की वांछनीयता का अध्ययन किया जा रहा है। कई उद्योग, जो अन्यथा आकर्षित होते, पुर्टोरिको में इसलिए स्थापित नहीं किये जा रहे हैं कि यहां औजार और डाई बनाने का कोई कारखाना नहीं है, भावी खरीदार के रूप में यहां वैसे कारखाने नहीं होने से निजी पूँजी द्वारा यह कारखाना डाले जाने की सम्भावना भी नहीं है। अतएव अभी तो सरकार औजार तथा डाई बनाने का कारखाना स्थापित कर, अन्य उद्योगों को आकर्षित करने हेतु उसका संचालन करेगी और जब वह चलने लग जाएगा, उसके निजी हितों को बेच देगी।

"पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" द्वारा बनाया गया सीमेंट कारखाना, जो पुर्टोरिको सरकार को—जिसने वाशिंगटन को उसकी समूची लागत बहुत शीघ्र चुका दी, दे दिया गया, औद्योगीकरण के आधुनिक कार्यक्रम का पहला कदम था। सर्व आवश्यक—मकान, कारखाने, बांध और राज-मार्गों के निर्माण के लिए—और समाज के विकास व निर्माण के साथ अधिकाधिक परिमाण में आवश्यक सीमेंट कार्य आरम्भ करने हेतु एक अतिउत्तम सामग्री थी।

सरकार ने जो विविध कारखाने स्थापित किये वे अधिकाधिक-भौतिक-स्वयं-निर्भरता के समान दर्शन पर आधारित थे। सरकार का, जूता बनाने वाला कारखाना इस बात का प्रारम्भिक प्रमाण था कि यह दर्शन पुर्टोरिको की आवश्यकताओं को देखते हुए अत्यन्त संकीर्ण है। सिद्धान्तरूप से एक कारखाने के लिए उतने सारे जूते, जो पुर्टोरिको के बाजारों में खरीदे जाते हैं, बनाना तो सम्भव था, परन्तु व्यवहार में एक कारखाने में विविध स्वरूप, आकार और ना के उतने सारे जूते बनाना असम्भव सिद्ध हुआ। सरकार द्वारा स्थानीय मांग को पूरा करने के लिए संचालित यह कारखाना आर्थिक दृष्टि से हानि कर सिद्ध हुआ। फिर भी अब यह कारखाना महाद्वीप के एक जूता बनाने वाले को, जो व्यापक महाद्वीपीय बाजार के लिए जूते बनाता है, लीज पर सौंप दिया गया तो उसकी जड़ें अत्यन्त मजबूत हो गयीं।

एक कृषि-प्रधान समाज का औद्योगीकरण करने योग्य औद्योगिक मजदूर वर्ग का निर्माण करने के लिए शिक्षा पद्धति में क्रान्तिकारी नये विचार आवश्यक होते हैं। हाल के वर्षों में शिक्षा विभाग ने अपने को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने हेतु अपने में भारी फेर-बदल किये हैं। व्यवसायिक प्रशिक्षण पर, जो नये कारखानों हेतु कुशल कारीगर तैयार करता है और पुर्टोरिको के आधुनिक भारी संस्कृति परिवर्तन में महत्वपूर्ण है, अब पहले से अधिक जोर दिया जा रहा है।

अध्याय १४

पर्यटन-व्यवसाय

जनता के लिए उत्तम मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध करने की अपनी नीति के अनुसार, १९४० के आरम्भ में सरकार ने, सेन जुआन से बीस मील पर सौन्दर्य-पूर्ण लुकिल्लो सागर-तट का विकास लोकप्रिय तैराकी स्थल के रूप में किया है। जहाँ पुलिस का प्रबन्ध है, जो साफ-स्वच्छ रखा जाता है और जहां स्नानागारों और पिक-निक के लिए टेबिलों की व्यवस्था है। अब प्रति रविवार और सप्ताह के आधे दिन वहां भारी भीड़ रहती है। पुर्टोरिको जिस भांति अपनी पिछली सांस्कृतिक कूपमंडूकता को उतार कर फेंकता जा रहा है, उसी प्रकार समुद्र के प्रति उसका पिछला भय भी घटता जा रहा है।

जिस प्रकार पुर्टोरिको पर्यटकों के केन्द्र के रूप में भी अधिकाधिक लोकप्रिय हुआ, उसके चारों ओर के समुद्र तटों को भी अधिकाधिक लोकप्रिय होना ही था। सरकार यह भली भांति जानती है कि यदि पर्यटक उद्योग के वास्तविक विकास की उसकी इच्छा है तब मात्र यह देखकर ही सन्तोष नहीं किया जा सकता कि यात्री ऊँची कीमतों पर बढ़िया होटलों में ठहरा दिये जाँय; परन्तु यहाँ आने के पश्चात् उनके लिए कुछ अच्छे मनोरञ्जन की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

१९५१ में विकास कम्पनी के पर्यटक-विभाग ने एक मछली मार नौका व चालक दल के साथ मियामी से एक कप्तान से बुलवा भेजा ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि चार शताब्दियों से पुर्टोरिको अपने सागर के सम्बन्ध में जो बातें कहते हैं वह सही भी है या नहीं। जो व्यक्ति आया वह अपनी पड़ताल से अत्यन्त उत्साहित

प्रतीत हुआ; उसने अपने धन्धे के लिए इससे बढ़िया समुद्र बहुत कम देखा था। आज मियामी के बहुत से नौका-शौकीन अपनी नावें लेकर पुर्टोरिको जाते हैं और अपना विशेष धन्धा उन पुर्टोरिकियों को सिखलाते हैं, जो आवश्यक पूँजी प्राप्त होने पर इस कारोबार को बढ़ाते हैं।

उस सर्वेक्षण के बाद से मछली मारने का खेल एक प्रमुख पुर्टोरिकी गतिविधि बन गया है। पर्यटक विभाग के तत्वावधान में प्रतिवर्ष मछली मारने की दो प्रतियोगिताएँ होती हैं और उसमें समस्त अमेरिका व पुर्टोरिको के खिलाड़ी भाग लेते हैं।

कुछ दशक पूर्व पुर्टोरिको के पर्यटक व्यवसाय को व्यावसायिक महत्व का बनाने का विचार सचमुच पागलपन लगता था। पुर्टोरिको के महान विकास प्रयत्नों के दौरान अच्छे होटलों का अभाव एक बाधा था। इस द्वीप के निवासी व जनता, पुर्टोरिको के विकास-कार्यों में पूँजी लगाने वाले व्यावसायिकों को आकर्षित करना चाहते थे, विश्व प्रतिमानों की दृष्टि से घटिया, गन्दे और अपर्याप्त-कर्मचारियों वाले होटलों में उन व्यावसायिकों को ठहरा कर वे अपने बारे में बुरी राय नहीं कायम होने देना चाहते थे। अतएव, १९४८ में, और इसलिए कि इस द्वीप में जहाँ 'पर्यटक' के नाते कोई नहीं आता था, पर्यटन सुविधाएँ उपलब्ध करने के लिए निजी पूँजी तत्पर नहीं हो रही थी, सरकार ने एक विशिष्ट होटल के निर्माण में ७,२००,००० डालर व्यय करने का निर्णय किया।

पुर्टोरिको की एक फर्म टारे, फेरर एन्ड टोरीग्रोसो द्वारा बनाया गया केरिबीहिल्टन होटल, आज न केवल पर्यटकों के लिए एक आकर्षण ही वरन् उस आधुनिक वस्तुकला का सुन्दर उदाहरण है जिसने सेन जुआन के कई हिस्सों का सांस्कृतिक स्वरूप बदलना आरंभ कर दिया है। पुर्टोरिको पर आज उन तेरह भवन निर्माताओं एवं फार्मों का, जो पुरानी स्पेनीय शैली से दूर हटकर साहसपूर्वक

फा०—८

सर्वथा आधुनिक शैली को अपनाने जा रहे हैं, कभी-कभी एक पुराने स्पेनीय उपनिवेश की दृष्टि से आश्चर्यचकित कर देने वाला परन्तु सर्वदा प्रभावोत्पादक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

पर्यटक व्यवसाय उसके अपने अन्य अंग-प्रत्यंगों के ही समान होगा। चाहे उसकी भौतिक सुविधाएँ कुछ भी क्यों न हो, वह उतना ही अच्छा होगा, जितने अच्छे उसका संचालन करने वाले कुशल कर्मचारी। गन्ना-खेतों के अपढ़ मजदूरों से, उन्हें सुन्दर वर्दियाँ पहना कर कोई सेवकों और परिचारकों का कार्य नहीं ले सकता। जिस प्रकार आज सरकार हजारों यांत्रिकों और ऐसे ही अन्य कुशल कारीगरों को विकासशील कारखानों के लिये प्रशिक्षित कर रही है, उसी प्रकार वह पुर्टोरिकियों को होटल के सफल संचालन हेतु सभी प्रकार की कुशलता की प्रशिक्षा दे रही है। सेवकों से लगाकर खजांची तक कुशल होटल कर्मचारी तैयार करने का पाठ्य-क्रम दस माह का है और शिक्षा स्विस-अध्यापकों द्वारा दी जाती है।

पर्यटक-विभाग ने एक दीर्घकालीन कार्यक्रम आरम्भ किया है जिसके अन्तर्गत पुराना शहर पनाह से घिरा सेन जुआन नगर, जो अब एक समूची जटिल और उफनती हुई राजधानी का अंग है, पहले एक संरक्षित ऐतिहासिक महत्व का स्मारक घोषित कर दिया गया और अब उसे सुन्दर और पुराने स्पेनीय शहरी केन्द्र के रूप में कायम रखा जायगा।

यह कार्य नगर के क्षेत्रीयकरण कार्य के साथ जुड़ा हुआ है ताकि पुराने सेन जुआन में आधुनिक इमारतों का बनाया जाना रोका जा सके, अब सड़कों पर जड़े चौकोर पत्थरों को खोदकर उनके स्थान पर कंक्रीट नहीं बिछायी जायेगी, यदि कोई व्यक्ति अपने व्यापार के लिये नियान-साइन लगाना चाहता है तो उसे हटकर राजधानी के सेंचुरसी क्षेत्र में, जो हर प्रकार से वास्तव में व्यावसायिक केन्द्र बन गया है, जाना होगा।

कुछ वर्षों पूर्व, पर्यटक-विभाग ने एक कानून बनाया था जिसके अन्तर्गत अब ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों एवं राष्ट्रीय मार्गों पर और अधिक इश्तिहार लगाने वाले बोर्ड नहीं खड़े किये जा सकते और जो अभी विद्यमान हैं, उन्हें कुछ वर्षों के भीतर जबकि उन पर खर्च किये गये धन की दृष्टि से उन की उपयोगिता पूरी हो चुकी होगी—हटा लेना होगा।

अपनी कई समस्याओं के बावजूद भी पुर्टोरिको का पर्यटन व्यवसाय उन्नति और विकास कर रहा है। विद्यमान सभागृहों में समाने योग्य छोटे संगठनों के सम्मेलन प्रतिवर्ष होते हैं। पहले से कहीं अधिक यात्री-जलपोत आज इस पुराने शहर से और अपने सर्वांगीण विकास प्रयत्नों के लिए पुर्टोरिको द्वारा हाल के वर्षों में अर्जित विशिष्ट ख्याति से आकर्षित होकर सेन जुआन ठहरते हैं।

—×—

अध्याय १५

जन स्वास्थ्य

अमेरिका जन-स्वास्थ्य-सेवा के डाक्टरों का कथन है कि 'जन-स्वास्थ्य खरीदा जा सकता है। यह आपको उतनी ही मात्रा में मिल सकता है जितनी मात्रा में आप खर्च कर सकते हैं, या करना चाहते हैं।' यह इस अर्थ में एक अच्छा सिद्धान्त है कि जन-स्वास्थ्य जीवन स्तर के नाम से जाने वाली व्यवस्था से सम्बन्धित कार्य है। आधुनिक पुर्टोरिको उन अनेक समाजों में से एक है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि अयनवृतीय जलवायु में निवास करने वाला समाज जो प्राकृतिक-जलवायु को बदलने के स्थान पर मानव-निर्मित सामाजिक जलवायु को, जो अपने समूचे रूप में जीवन-स्तर कही

जाती है, सुधार कर अपनी स्वास्थ्य समस्या हल करने के यत्न कर रहा है, और सम्भावना है कि वह उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त करेगा।

वाशिंगटन के सत्कार-समारोह में मेरी भेंट पुर्टोरिको के हँसमुख और स्फूर्तिवान स्वास्थ्य-मन्त्री डा० जुआन पोन्स से हुई। अयनवृत के उस क्षेत्र में अपनी रुचि की तथा उनकी समस्त समस्याओं की मैंने उनसे चर्चा की और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पुर्टोरिको द्वारा की गयी विशिष्ट प्रगति पर मैंने उन्हें बधाई दी। 'देखिये' पोन्स ने कहा, 'हम अयनवृतीय औषधियों की चर्चा न करें, क्योंकि इस नाम की वस्तु है ही नहीं। जीवन-यापन के निम्न स्तर वालों के लिए एक औषधि है और उन्नत स्तर वालों के लिए दूसरी, पुर्टोरिको में हमारे अनुभव से और समूचे विश्व के रोगों से यह बात स्पष्ट है।

बीस वर्ष पूर्व पुर्टोरिको में, उसी प्रकार जिस प्रकार कि कई अन्य अयनवृतीय देशों में; और एक समय वाशिंगटन, डी० सी० में भी, उत्तर में ओहियो से लगाकर साराटोगा, न्यूयार्क तक, मलेरिया एक अभिशाप था।

१६३६ में "पुर्टोरिको पुनर्निर्माण प्रशासन" के आयोजन विभाग द्वारा तैयार किये गए, एक अप्रकाशित विवरण के अनुसार उस समय मलेरिया से पुर्टोरिको में होने वाली मृत्यु की संख्या प्रति १००,००० व्यक्ति २२०, अथवा अलबामा, फ्लोरिडा, मिसिसिपी और दक्षिण कोरोलिना की मलेरियाग्रस्त पट्टियों की मृत्यु संख्या से छः गुनी थी। १६४० के आंकड़ों ने बतलाया कि उस वर्ष में मलेरिया से प्रति १००,००० व्यक्ति ६७ मृत्यु हुई; अथवा मलेरिया से बीमार होने वालों की संख्या लगभग २००० और २४००० रही, अथवा प्रति १००,००० व्यक्तियों के पीछे लगभग १,३०० व्यक्ति मलेरियाग्रस्त रहा, क्योंकि उन दिनों हजारों बीमार पुर्टोरिको डाक्टर के पास जाते

तक नहीं थे, अतएव मलेरिया-ग्रस्तों की संख्या कहीं अधिक, इससे दुगुनी या तिगुनी रही होगी।

वेगवान स्वास्थ्य आन्दोलन के जिसका आरम्भ १६४१ में डा० एन्टोनियो फेरनांस इसर्न ने किया था और जिसे आजकल डा० पोन्सा आगे बढ़ा रहे हैं, परिणामस्वरूप पुर्टोरिको की भूमि से अब मलेरिय उन्मूलित कर दिया गया है। १६५१ में, एक अत्यधिक सुधरी हुई और पहले से कहीं-कहीं अधिक सक्षम अंक-संकलन-सेवा ने बतलाया कि मलेरिया से कुल ८८ व्यक्ति बीमार हुए; अर्थात १००,००० व्यक्तियों में से चार व्यक्ति; इस बीमारी से होने वाली मृत्यु की दर घट कर प्रति १००,००० व्यक्ति ०'०६ हो गयी है, इसका अर्थ है वर्ष में पुर्टोरिको में मलेरिया से केवल दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक मलेरिया के बीमारों की संख्या इतनी घट गयी है कि अब ऐसे रोगी चिकित्सा-जगत की एक दुर्लभ वस्तु बन चुके हैं।

१६३६ के विवरण में बतलाया गया है कि तपेदिक से पुर्टोरिको में होने वाली मृत्यु प्रति १००,००० व्यक्ति ३०८ से ३३७ के बीच थी। १६४० में ६००० से अधिक पुर्टोरिकी; प्रति १००,००० व्यक्तियों के पीछे ५०० से अधिक; तपेदिक के रोगी थे और इनमें से आधी से अधिक संख्या के लिए घातक सिद्ध हुई। दस वर्षों पश्चात, जन-संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि और उस अपेक्षाकृत बहुत अधिक उन्नत स्वास्थ्य सेवा के बावजूद भी, जो ऐसे हजारों रोगियों का पता लगा कर जो पहले ध्यान में भी नहीं आ सकते थे, उनका उपचार करती थी; तपेदिक के बीमारों की संख्या घट कर ६०००, वहीं इससे होने वाली मृत्यु की संख्या घट कर प्रति १००,००० व्यक्ति ११२ हो गयी। १६५२ में तपेदिक से मृत्यु की संख्या प्रति १००,००० व्यक्ति ६० थी तथा तेजी से घटती ही जा रही थी।

उदर और अंतड़ियों सम्बन्धी रोगों के सम्बन्ध में भी, जो पुर्टो-

रिको में लम्बे समय से, और अभी भी, सर्वाधिक घातक रोग रहते आये हैं, आँकड़ों की गति इसी प्रकार की रही है—१६३६ में उनके कारण मृत्यु संख्या प्रति १००,००० व्यक्ति ३६० थी। । १६४० में यह आंकड़ा प्रति १००,००० व्यक्ति और १६५१ में १२७ था।

निःसन्देह आज के उन्नत स्वास्थ्य का आंशिक योग इस तथ्य में रहा है कि पुर्टोरिको के गरीब आज पहले से अच्छा आहार ग्रहण करते हैं। फिर भी इस सुधार का अधिकांश श्रेय स्वास्थ्य विभाग के प्रत्यक्ष कार्यक्रम को दिया जाना चाहिए।

मुनोज ने १६५३ में कोलम्बो-दिवस के रेडियो-भाषण में यह प्रश्न किया था कि "हमने अपने जीवन में इतनी अधिक वृद्धि किस भांति कर ली?" उन्होंने ही उत्तर दिया "मुख्य रूप से देशवासियों को उनके भावी के निर्धारण में सम्मिलित करने के मार्ग से।"

डा० पोन्स के समस्त जन स्वास्थ्य नियमों के अनुसार १६४७ के बाद भी, सरकार के अन्य विभाग डा० पोन्स के मत से, जिस अतिशय धीमी गति से आर्थिक अवस्थाओं को सुधार रहे थे उन्हें देखते हुए, मृत्यु संख्या में और अधिक कमी नहीं की जा सकती थी। परन्तु फिर भी यह संख्या घटी और इतनी तेजी से कि पोन्स अब निकट भविष्य की उस स्थिति की कल्पना करते हैं जब तपेदिक और उदर-अंतड़ियों के रोगों से होने वाली मृत्यु की संख्या भी उतनी ही रह जायेगी जितनी महाद्वीपीय अमेरिका में विद्यमान है। पोन्स का कथन है कि जब ऐसी स्थिति आ जायेगी, कुल मिलाकर पुर्टोरिकियों की मृत्यु संख्या प्रति हजार ७·६, विश्व में कहीं भी निम्नतम हो जायेगी।

औसत पुर्टोरिकी की जीवन सम्भावना १६०० में ३२ वर्ष थी; १६३० में ४२, १६४० में ४६ थी; १६५२ में बढ़कर ६१ हो गई, और अभी भी उसकी बढ़ती रुकने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं।

उपयुक्त और सक्षम चिकित्सा-सुविधा, निश्चय ही, किसी भी जन-स्वास्थ्य कार्यक्रम का एक प्रत्यंग ही है। दूसरा है उपयुक्त साफ-स्वच्छता के वातावरण की व्यवस्था। जिस भाँति का पानी लोगों को पीने के लिये उपलब्ध किया जाता है, वह ऐसे वातावरण के कई सूचकों में से एक है।

यह महत्वपूर्ण विषय है कि, १६५० से सेन जुआन जल-प्रादाय को अंतर राजकीय व्यापार की अनुमति मिल चुकी है। इसका तात्पर्य यह है कि राजधानी में आने वाले वाष्पपोत और वायुयान अपनी टंकियाँ नगर के पानी से भर सकते हैं और अब उस पानी को और अधिक शुद्ध करने का विचार नहीं उठता, इस बात का खतरा नहीं रहता कि उनके चालक-दल और यात्री दूषित जल के उपयोग से बीमार हो जायेंगे। यदि आप अब वहाँ जाते हैं तो आपको उन सब बातों का ध्यान रखना आवश्यक नहीं है जिन्हें अयनवृतीय प्रदेशों में स्वस्थ रहने के लिये सलाह रूप में कहाँ लिखा जाता है। जिस प्रकार मलेरिया के निरोध हेतु कुनैन की गोलियाँ खाना आप भूल चुके होंगे; उसी प्रकार आप कहीं किसी के भी नल से किसी भी होटल या रेस्त्रां में सामान्य जल-व्यवस्था का उपयोग भी, पानी को उबालने, छानने एवं उसमें क्लारीफीन की गोलियाँ मिलने के सामान्य अयनवृतीय तरीके को काम में लाये बिना, करने लगेंगे।

साफ-सफाई व्यवस्था के एक सक्रिय कार्यक्रम के अन्तर्गत, जो सदैव सीमित धनराशि के कठोर बंधनों पर अपनी मानवीय शक्ति से दबाव डालता रहता है, सार्वजनिक जल-प्रादाय की और गंदगी बहाकर ले जाने वाली नालियों की व्यवस्था, स्वच्छता को प्रवाहित करने, औद्योगिक स्वास्थ्य विज्ञान, गंदगी से खाद्याहारों के संरक्षण, भूमि के रक्षण और नगर की सफाई के लिये की जाती है। निर्धारित अवधि पर अब निजी जल स्रोतों में जीवाणुओं सम्बन्धी जाँच की जाती है और गंदगी बहाने वाली नालियों का नियमित

निरीक्षण किया जाता है। स्वास्थ्य विभाग, जो सरकार के अन्य विभागों की गतिविधियों से निकट सम्बन्ध रखता है, इस द्वीप की गंदगी बहाकर ले जाने वाले जलमार्गों एवं नालियों की अभिशक्ति के साथ और द्वीप की एवं नगरपालिकाओं की आवास अभिशक्तियों के साथ, कार्यक्रम बनाने एवं इन कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की प्राथमिकता निर्धारित करने हेतु कार्य करता है। स्वास्थ्य विभाग और अन्य सभी सम्बन्धित, अभिशक्तियों को (जो सदैव आयोजन मंडल द्वारा संचालित होते हैं) जब तक यह संतोष नहीं हो जाता कि नई अल्प लागत आवास योजना की जल एवं नालियों की व्यवस्था, आज और आने वाले वर्षों; दोनों ही की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिये पूर्णतया उपयुक्त है, तब तक ऐसी कोई योजना—ग्रामीण अथवा शहरी—आरम्भ नहीं करने दी जाती। नये और पुराने कारखानों की नियमित रूप से; तापमान और सीलन, उनमें साफ हवा आने की व्यवस्था, प्रकाश, वातावरण, जल, गंदगी और साफ-सफाई की व्यवस्था की दृष्टि से, जाँच की जाती है।

इन तरीकों द्वारा, और रेस्टोरेन्टों, बर्फ बनाने के कारखानों, बोतलों में खाद्य एवं पेय पदार्थ भरने की फेक्ट्रियों, और ऐसे ही अन्य केन्द्रों के-निजी घरों की तो बात ही नहीं; समय-समय पर निरीक्षण द्वारा और हर गरीब व्यक्ति को स्वच्छता बुनियादी सिद्धान्तों में शिक्षित करने के कार्यक्रम द्वारा, १९४१ के बाद से, साफ-सफाई के कुल वातावरण में काफी सुधार हो गया है।

यह विभाग छः तपेदिक अस्पतालों एवं पाँच सामान्य चिकित्सालयों का प्रबंध सम्भालने के अतिरिक्त विभिन्न जिलों में ६६ जन-स्वास्थ्य इकाईयों का संचालन भी करता है। इन में से प्रत्येक इकाई एक चिकित्सा केन्द्र है (यद्यपि कुछ के साथ अस्पताल भी जुड़े हुए हैं) जिनमें तपेदिक, सुजाक, हृदय-रोग जैसी बीमारियों का इलाज किया जाता है। प्रत्येक इकाई, जिस में डाक्टर और नर्सें विभिन्न

स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में रोगियों को समझाते रहते हैं, एक महत्व का शिक्षा केन्द्र तो है ही, परन्तु साथ ही तपेदिक तथा गुप्तांगों के रोगों के उपचार-माता व शिशु स्वास्थ्य विज्ञान, अपंग बालकों के कल्याण, मलेरिया तथा कीटाणु, जन स्वास्थ्य सुश्रुषा तथा स्वच्छता के क्षेत्रों में कार्य करने वाले ब्यूरो जैसे उपसंगठनों का क्षेत्रीय-केन्द्र भी है। मुख्य रूप से अपने इन्हीं केन्द्रों और अपने समाज कल्याण विभाग के माध्यम से जन स्वास्थ्य विभाग बहुत बड़ी संख्या में ग्रामीण गरीब जनों तक जो अपनी गरीबी के कारण रोगों के आगार बने हुए हैं, अपनी सेवाऐं पहुँचाता है।

नवम्बर १९५० में अमेरिकी चिकित्सा महाविद्यालयों के द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन में अपने कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए पोन्स ने कहा "यह नितांत ही आवश्यक है कि हम देशवासियों की मनोवृत्ति में, उनके दैनिक जाग्रत विचारों में, यह बात दृढ़ कर दें कि बीमारी और अशक्यताएँ एक बहुत बड़ी सीमा तक रोकी जा सकती हैं, वह ऐसा बोझ है जो घटाया जा सकता है, और उनकी पीड़ा झेलना व्यर्थ है, हमें देशवासियों को उनका (बीमारियों) का इलाज करने वाली सेवा की अपेक्षा उनकी रोकथाम करने वाली सेवाओं के सम्बन्ध में शिक्षित करना होगा। हमें ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि स्वास्थ्य सुधार का कार्य करने वाली एजेन्सियों का समुदाय रचनात्मक तरीकों से सहयोग प्रदान करें। जब हम ऐसी व्यवस्था कर देंगे तब वह चिकित्सा-जगत में हमारी महानतम सफलता होगी।

अब से कुछ दशकों पश्चात्, जबकि कृषि, औद्योगीकरण, शिक्षा के कार्यक्रम, जो अभी अपनी बाल्यावस्था में हैं पूरे जोर-शोर पर होंगे और उनके परिणाम स्वरूप ऐसा जन-स्वास्थ्य कार्यक्रम होगा जिसे पहले से कहीं अधिक धनराशि, अधिक कर्मचारी, अधिक विचार एवं उत्साह उपलब्ध होगा, तब पुर्टोरिको में रोग विज्ञान तथा मृत्यु,

जन संख्या के मुकाबले मृत्यु के अनुपात तथा जीवन संभावनाओं के आंकड़े क्या होंगे ?

अध्याय १६

शिक्षा

पुर्टोरिको उन दिनों को बहुत पीछे छोड़ आया है जब कि उस की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अंग्रेजी पढ़ाना था।

१८६६ में पढ़ने योग्य पुर्टोरिकी बालकों की संख्या २६०,००० थी, जिन में से २२,००० या ८ प्रतिशत ही वास्तव में स्कूलों में जाते थे, १६४० में छः से अठारह वर्ष के बीच की आयु के ५८६,६४६ बालकों में से ५० प्रतिशत स्कूलों में जाने लगे, १६५२ में कुल पढ़ने योग्य बालकों का ६७ शिक्षा प्राप्त करने लगा था, उसके बाद के वर्ष में कुल संख्या ५२०,००० हो गयी। जब अमेरिका ने पुर्टोरिको का शासन संभाला था, दस वर्ष या अधिक आयु वाले केवल १५ प्रतिशत पुर्टोरिकी ही साक्षर थे, १६४० तक यह आंकड़ा बढ़ कर ६८.५ हो गया और आज यह लगभग ८० प्रतिशत है। न केवल शिक्षा की बढ़ती हुई मांग और इस कारण कि वृद्ध साक्षर अधिक दिन जीवित नहीं रहेंगे, परन्तु इस लिये भी कि शिक्षा की दिशा में कानून द्वारा शिक्षा विकास द्वारा तैयार की गयी योजनाओं के अनुसार बहुत जोर लगाया जा रहा है; शीघ्र ही निरक्षरता की बीमारी भी उसी प्रकार मर जाएगी जिस प्रकार कि आज मलेरिया मर चुकी है।

पुर्टोरिको में जन-शिक्षा का व्यय आज समूचे व्यय का लगभग एक तिहाई होना—जबकि शासन की अन्य सभी शाखाएँ अधिकाधिक धनराशि प्राप्त करने हेतु जी तोड़ कोशिश कर रही हैं--एक सजीव एवं महत्वपूर्ण रुचि का संकेत है। जब कि डालर के अवमूल्यन का विचार किया जा रहा है; प्रति छात्र ७१ डालर वार्षिक का व्यय, १६४० में खर्च किए जाने वाले २४ डालर के मुकाबले, शिक्षा के विकास का द्योतक है।

शिक्षा विभाग का सङ्गठन, कामनवेल्थ के जीवन एवं प्रत्येक समस्याओं में और उनके प्रत्येक भागों में प्रभावपूर्ण ढंग से पैठने के अपने सङ्कल्प का प्रतिबिम्ब है। स्कूलों की स्थापित व्यवस्था इस प्रकार है; छः वर्ष तक प्रारम्भिक स्कूल; तीन वर्ष तक जूनियर हाई स्कूल,—ग्रामीण और शहरी (इन दोनों की पद्धति और पाठ्यक्रम में, उनसे की जाने वाली भिन्न अपेक्षाओं के कारण, भेद होता है);—और हाई स्कूल। इतना ही नहीं काम धन्धा की शिक्षा देने वाले स्कूलों, जो औद्योगीकरण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योग देते हैं; प्रौढ़ शिक्षा के स्कूलों, सांयकालीन हाई स्कूलों, सामुदायिक शिक्षा विभाग और निःशुल्क संगीत स्कूलों की व्यवस्था भी है। इनके अतिरिक्त शिक्षा विभाग वैचारिक कार्यक्रमों, व्यावसायिक पुनर्वास, कार्यक्रम, स्कूलों में मध्यान्ह भोजन कक्षो और बच्चों की निःशुल्क भोजन देने की व्यवस्था, भूतपूर्व सैनिकों के शिक्षा के कार्यक्रम और छात्रों एवं अध्यापकों के लिए एक सूचना सेवा का संचालन भी करता है।

यह विभाग एक रेडियो स्टेशन भी चलाता है जिसका उद्देश्य किसी न किसी भाँति इस द्वीप के समस्त निवासियों तक पहुँचना है। शिक्षा विभाग एक फोटोग्राफी प्रयोगशाला सञ्चालित करता है, जहाँ पुर्टोरिको के जीवन एवं विकास के हर दौर को चित्रों में अंकित किया जाता है। उसका एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नया प्रयोग है शिक्षा-प्रेस विभाग।

जीवन के अमेरिकी तौर तरीकों से वास्तविक मेल बैठाने एवं अंग्रेजी के ज्ञान के साथ बढ़ाने की उत्कंठा आज पहले से कहीं अधिक बलवती है परन्तु उसे पुर्टोरिको के पुराने जीवन तरीकों और सांस्कृतिक मूल्यों को समाप्त करके पूरा नहीं किया जा सकता। इस तथ्य का अनुभव नये शिक्षा साहित्य की आवश्यकता उत्पन्न करना है, जो स्पेनीय भाषा में लिखा हुआ हो और जिसमें पुर्टोरिको की संस्कृति के उद्गम और उसके वर्तमान स्वरूप परिवर्तन, उसके बदलते विचारों,

उसके इतिहास, उसकी विशिष्ट स्थानीय और अमेरिका तथा समस्त शेष विश्व सम्बन्धी समस्याओं का ध्यान रखा गया हो।

ऐसा साहित्य मौजूदा प्रकाशकों से प्राप्त नहीं हो सकता था। अतएव पुर्टोरिको के शिक्षा विभाग को विद्यमान और बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा साहित्य तैयार करने के लिए प्रकाशन व्यवसाय में उतरना पड़ा।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात पुर्टोरिको ने युद्ध से बची हुई यंत्र-सामग्री और साधन बहुत बड़ी मात्रा में खरीदे और उनका उपयोग, संसार के सबसे बड़े व्यावसायिक शिक्षा स्कूल की स्थापना के लिए किया जिसका उद्देश्य औद्योगीकरण की ओर बढ़ रहे कृषि समाज की जिसे कुशल कारीगर चाहिए थे, अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। सेन जुआन क्षेत्र में स्थित इस स्कूल का सञ्चालन आरम्भ में विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता था, वहाँ शीघ्र ही तीन हजार छात्र वेल्डिंग से लगाकर पाक-शास्त्र सुतारी लगाकर विद्युत-अणुओं, लुहार से लगाकर स्वचालित यन्त्रों के सम्बन्ध में—५० विभिन्न काम धंधों की शिक्षा ग्रहण करते थे। १९५० में इस स्कूल को शिक्षा विभाग ने अपने हाथ में ले लिया और पुर्टोरिको के निवासियों की अधिक अच्छी तरह सेवा करने के उद्देश्य से उसका विकेन्द्रीकरण कर दिया गया। इसकी सेन जुआन स्थित इकाई, जो मिग्युल सर्च स्कूल के नाम से जानी जाती है, आज से सबसे बड़ी इकाई है परन्तु अन्य इकाईयाँ पुर्टोरिको के अन्य नगरों में स्थित हैं।

पुर्टोरिको की बदलती संस्कृति की एक विशेषता है, अंग्रेजी में शिक्षा की बढ़ती हुई माँग; जो टेक्सी-चालकों और होटल के सेवकों द्वारा, जो बड़ी संख्या में महाद्वीप से आने वालों की सेवा में नियुक्त रहते हैं, उन पुर्टोरिकियों द्वारा जो उन फेक्ट्रियों में काम करते हैं जिनका प्रबन्ध महाद्वीप से आये व्यक्तियों के हाथों में है; उन पुर्टोरिकियों द्वारा फसल काटने वालों के रूप में स्थायी या अस्थायी

रूप से महाद्वीप जाते हैं; और सभी वर्ग के स्त्री-पुरुषों एवं उनके बालकों द्वारा की जाती है। चालू व्यवस्था और विचार-प्रवाह के अन्तर्गत समस्त पुर्टोरिकियों को द्विभाषी बनने में अधिक समय नहीं लगेगा।

विश्वविद्यालय की पद्धति, प्रबन्ध और शिक्षा-व्यवस्था में भी गत दशक में, कुलपति जेमी बेनिट्ज़ के तत्वावधान में भारी परिशोधन किया जा चुका है ताकि वह, पहले से अधिक भली भाँति, उदयशील समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। इञ्जीनियरिंग और खेती सम्बन्धी गवेषणा और कार्यक्रमों के विस्तार ने नया महत्व एव लोकप्रियता प्राप्त की है। विश्वविद्यालय का समाज विज्ञान गवेषणा केन्द्र इस द्वीप की वास्तविक समस्याओं को स्पष्ट करने के उद्देश्य से सतत एक जाँच कार्यक्रम में व्यस्त रहता है। अंत में—आंशिक रूप से नये विचारों, प्रवृत्तियों एवं पद्धतियों को प्रभावित करने, आंशिक रूप से महाद्वीपीय शिक्षा जगत से निकटतम सम्बन्ध बढ़ाने के व्यापक उद्देश्य से इस विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु प्रति वर्ष काफी संख्या में मुख्यभूमि, अमेरिका और दक्षिण अमेरिका से प्राध्यापकों को पुर्टोरिको आमंत्रित किया जाता है।

विश्वविद्यालय में छात्रों की कुल संख्या १६४० में ५,००० थी, यह आज ११,००० है और बढ़ती जा रही है।

सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था और विश्व-विद्यालय दोनों ही प्रति वर्ष काफी बड़ी संख्या में विदेशी, विशेष कर दक्षिण, अमेरिका के छात्रों को जो अपने-अपने देशों के विकास हेतु आवश्यक पद्धति और विभिन्न कुशलताएँ प्राप्त करने हेतु उत्सुक हैं, छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती हैं। ये छात्रवृत्तियाँ चार सूत्रीय कार्यक्रम की दिशा में, जिसमें यह कामनवेल्थ एक उल्लेखनीय अगुआ रहा है और अभी भी है, पुर्टोरिको का एक काफी बड़ा योग है।

गत दशक में, पुर्टोरिको ने, स्वयं अपने छोटे से समाज एवं समूचे अमेरिका का प्रतिनिधित्व करते हुये, अन्तर्राष्ट्रीय केरीबियन

आयोग के काम काज में उपयोगी एवं रचनात्मक भूमिका सम्पादित की है।

कुछ वर्षों पूर्व जब कुजको भूकम्पों से ध्वस्त हो गया था, पीरू की सरकार ने पुर्टोरिको आयोजन मंडल के अध्यक्ष डा० रैफेल पिको को नगर-नियोजन से युक्त प्रभावपूर्ण पुनर्निर्माण सम्बन्धी परामर्श हेतु आमंत्रित किया था। १९५३ में डानजोस फिगूरस के क्यूबा के प्रेसिडेन्ट चुने जाने के पश्चात् उस देश से पिको को, वहाँ एक पुर्टोरिको के समान आयोजन मंडल की स्थापना हेतु बुलाया गया। जनवरी १९५३ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें अविकसित देशों में आवास सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक मार्गदर्शक के रूप में नई दिल्ली भेजा।

संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस, २४ अक्टूबर १९५१, के एक भाषण में डा० रिडोरियस बो ने उन अनेक योगों में से, जो पुर्टोरिको एक संयुक्त एवं विकासशील विश्व के उद्देश्य एवं विचारों में प्रदान कर रहा है, कुछ का उल्लेख किया और कहा ; "हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में बहुत ही कम अनुभव और बिना किसी विशेष व्यवस्था के साथ उतरे हैं, परन्तु हम सद्पद्धति एवं सेवा का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।"

अब पुर्टोरिको को कुछ वर्षों पूर्व के वे दिन—जब वह मनोवैज्ञानिक रूप में विश्व से अलग-अलग, उपेक्षित, था और न केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही वरन् हीनत्व की उस विनाशकारी भावना से भी पीड़ित था, जो कई औपनिवेशिक देशों की जनता को ग्रसित किये हुए है और उपनिवेशवाद की प्रथा को कायम रखने एवं उसका जीवन बढ़ाने में सहायक होती है, पुनः नहीं देखने पड़ेंगे।

—※—

अध्याय १७

नागरिक-रोजगार

"पुर्टोरिको के विकास प्रयत्नों का एक पहलू, जो इस द्वीप में जाने वाले प्वार सूत्रीय कार्यक्रम के पर्यवेक्षकों को सर्वाधिक आकर्षित करता है और जिसे गवर्नर मुनोज मारिन ने सरकारी आय के साधनों में छठा स्थान प्रदान किया है, नागरिक-रोजगार है। कामनवेल्थ के कृषि विभाग के अधीन भू-भागों पर, सामाजिक कार्यक्रम प्रशासन द्वारा आरम्भ की गयी योजना के परिणाम-स्वरूप पाँच वर्षों में ही २५,००० से अधिक मजबूत और स्वास्थ्यप्रद ग्रामीण मकान बनाये जा चुके हैं। इस योजना के अन्तर्गत नई सड़कें स्वयं जनता द्वारा बनायी गयीं, सामुदायिक केन्द्रों के भवन, सरकारी समितियों के भवन और स्कूल तथा ऐसे ही अन्य स्थान बनाये गए हैं। शासन अधीन समस्त भू-खंडों पर इस योजना ने सरकार के न्यूनतम व्यय और मानव अस्तित्व के सुधार हेतु मानव शक्ति को उन्मुक्त करने के अधिकतम लाभ के साथ--पुर्टोरिको का सांस्कृतिक चित्र ही बदल दिया है।

परन्तु ऐसा कोई कारण नहीं था कि इस कार्यक्रम को केवल राज्याधीन भू-भागों तक ही सीमित रखा जाय। सामूहिक प्रयत्नों के लिए आवश्यक पद्धति, सिद्धांत और सामाजिक रीति-नीति सभी देशवासियों को संगठित शिक्षा-प्रयत्नों के रूप में सिखायी जाती थी। इन्हें एक बार ग्रहण कर लेने पर वे समूचे समाज तथा उसके व्यक्तिगत सदस्यों के लिए अत्यधिक मूल्यवान होती है। परिणामस्वरूप, १६४६ में, कामनवेल्थ के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत सामुदायिक शिक्षा-खंड की स्थापना की गयी।

पुर्टोरिको के बाहर भी, यह खंड उन अभिचित्रों (डाकयूमेंटरी

फिल्म्स) की श्रेष्ठता के लिए, जिनका उपयोग वह नागरिक चेतना फैलाने हेतु करता है, ख्याति प्राप्त करता जा रहा है। इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक जिस ताजे अभिचित्र का निर्माण इस खड ने सम्पूर्ण किया है वह एलफुन्टे (पुल) है। कामनवेल्थ के श्रम विभाग का न्यूयार्क कार्यालय ये अभिचित्र और अमेरिका भर में स्कूलों व अन्य शिक्षण संस्थाओं में प्रदर्शित करने हेतु प्रदान करता है। इन अभिचित्रों की बड़ी माँग है और वे पुर्टोरिको का नाम उज्जवल करने में सहायक हुए हैं। सादगी पूर्ण, किन्तु प्राविधिक और कलात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ, यह अभिचित्र इस कथा का चित्रण करता है कि साधनहीन गांव वालों ने बोटिजास नदी पर पुल किस लिए और किस प्रकार बनाया।

अनुमान किया जाता है कि, इस पुल के निर्माण के पूर्व, सैकड़ों बालकों का स्कूल का आधा समय नदी पार करने में ही नष्ट हो जाता था। दशकों से, इस कठिनाई में फँसे ग्रामवासी पुल की माँग के लिए सरकारी अधिकारियों से चख-चख करते रहे। एक बार पड़ोस के गाँव वालों ने एक काम चलाऊ लकड़ी का पुल खड़ा कर दिया था, परन्तु पहली ही बाढ़ में वह नदी में बह गया।

तब, १९४९ में, सामुदायिक शिक्षा खड ने डेमिंगो सोरेस मेट्टी को, जो समूचे जिले में सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति थे, चुना। प्रशिक्षण अवधि हेतु उन्हें सेन जुआन लाया गया और बाद में दल-संगठनकर्त्ता का पद देकर उन्हें वापस उनके क्षेत्र में भेजा।

उन्होंने ग्रामीणों को सामुदायिक समस्याएँ समझाना और पुर्टोरिको के जन जीवन, स्वास्थ्य, काम के नये तौर-तरीकों और अत्यधिक दिलचस्प, विषयों पर हजारों पुस्तिकाओं का वितरण आरम्भ किया परन्तु पुल की समस्या हल करने में उनसे कोई सहायता नहीं मिल सकी। आसपास के मीलों क्षेत्र के हर व्यक्ति से उन्होंने सम्पर्क साधा और कुछ समय पश्चात उन्होंने अपने जिले में निःशुल्क सिनेमा

प्रदर्शन की तारीखों की घोषणा करने वाले रंग-बिरंगे इश्तिहार लगाने आरम्भ कर दिए। सिनेमा प्रदर्शन के इन अवसरों पर उन्होंने एकत्रित जन समूह को, जिनमें से कितनों ही ने अभी तक कोई चल-चित्र नहीं देखा था, पुर्टोरिको के जन-जीवन से सम्बन्धित एक चित्र दिखलाया। यह चित्र आकर्षक था, परन्तु फिर भी उस पुल की समस्या हल नहीं हुई जो सभी लोगों के दिल-दिमाग पर छायी हुई थी।

दिसम्बर १९५० में २४ पड़ोसियों का एक दल उनसे इस समस्या पर चर्चा करने हेतु आया और पूछा कि सरकार चल-चित्रों पर तो इतना धन खर्च करती है परन्तु नदी पार करने की सुरक्षित व्यवस्था पर, जिसके अभाव में उनकी उपार्जक शक्ति घट रही है और उनके बालकों की शिक्षा में बाधा खड़ी होती है, क्यों एक छदाम भी खर्च करना नहीं चाहती। मेट्टी ने सहानुभूति-पूर्वक उनकी बातें सुनी और बतलाया कि समाज स्वयं पुल का निर्माण कर सकता है। यह सर्वथा नया तो नहीं था, किन्तु कठिन तथा लगभग असंभव, और उन ग्रामीणों को जिनके पास धन और आवश्यक कौशल का अभाव था, कठिनाई में डाल देने वाला विचार था। परन्तु डोमिंगो उन्हें लगातार प्रोत्साहित करते रहे, और पहली चर्चा के बाद से सामुदायिक चर्चाओं में यह पुल उनका मुख्य विषय बन गया।

समाज के सदस्यों ने अंश-अंश कर के १२५ डालर एकत्र किए। एक व्यक्ति को निर्माण कार्य का थोड़ा अनुभव था, डोमिंगो के प्रोत्साहन से एक कांक्रिट पुल का नक्शा तैयार किया जिसमें पुल को मजबूती प्रदान करने हेतु दो पुरानी ट्रकों के चौखटों (चैसिस) का उन्हें वह बारेन्क्विटास के कबाड़खाने में देख चुका था और आशा थी कि वे उपहार स्वरूप मिल जायेंगे, इस्तेमाल होना था। यह नक्शा पुर्टोरिको के गृह-विभाग के स्थानीय जिला इन्जीनियर को भेजा गया, जिसने उस की जाँच की, उस में यहाँ-वहाँ सुधार किए और निर्माण आरम्भ

करने की सलाह दी। समीप ही एक स्कूल की मरम्मत की जा रही थी और वहाँ काट-कबाड़ पड़ा था ; ग्रामीण ने इसे प्राप्त करने की मांग की और वह उन्हें मिल भी गया। ग्रामीण बारेन्क्विटास के मेयर के पास गये और उन्हें नगर-कोष से ८० बोरी सीमेंट तथा ६०० पौंड लोहे की छड़ें देने के लिये तैयार कर लिया। सीमेंट मेखों, औजारों ट्रक के दो चौखटों के दान भी उन्हें मिलने लगे। जुलाई १९५१ तक बैरियो बोटिजास-२ के नागरिकों ने पुल निर्माण हेतु समस्त सामग्री एकत्र कर ली थी।

डोमिंगो के नेतृत्व में उन्होंने अपने एक पड़ोसी को कार्यक्रम का फोरमैन निर्वाचित किया। उसने अपना कार्य १२ जुलाई को आरम्भ किया, प्रति दिन यह घोषणा कर दी जाती थी कि खेतों में नियमित काम करने के बाद जब कभी ग्रामीण घन्टे दो घन्टे या एक-आध दिन का समय दे सकें, उसे व्यक्तियों की आवश्यकता होगी। उसे किसी अभाभाव समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। जब उस ने दस सहायक बुलाये, उत्सुक और उत्कंठित ५० स्त्री-पुरुष और बालक आ जाते।

बाइस दिन पश्चात पुल बन कर तैयार हो गया, उसके निर्माण कार्य में कोई ६० व्यक्तियों ने योग दिया और उस पुल को संस्कारित करने का समारोह, जिसमें समस्त समाज ने भाग लिया, पुर्टोरिको के लिए सर्वथा नवीन था। स्थानीय राजनीतिज्ञ केवल अतिथि के नाते ही उपस्थित थे, भाषण देने के लिए नहीं। मुख्य भाषण उस छोटे बालक ने दिया जो गत वर्ष उस नदी में बह कर दूर चला गया था, एक माता के हाथों ने पुल का रेशमी फीता काट कर पुलका उद्घाटन किया। सामुदायिक शिक्षा-खंड के प्रतिनिधि केवल इस दृश्य का सजीव चित्रांकन करने हेतु वहाँ उपस्थित थे।

यदि पुर्टोरिको सरकार ने यह पुल पहले ही बना दिया होता, उस पर ४,००० डालर की लागत आती। सामुदायिक शिक्षा खंड के आलोचक इस बात को लेकर बड़ा शोर करते हैं कि बारियो बोटि-

जास-२ के निवासियों में स्फूर्ति पैदा करने में प्रयुक्त चलचित्र और अन्य साधन सामग्री दल संगठनकर्त्ता का वेतन, उस की जीप-मोटर, शक्ति उत्पादक यंत्र (जनरेटर), सिनेमा-मशीन, इश्तिहार, पुस्तक-पुस्तिकाएँ और उन सब को तैयार करने हेतु सेन जुआन में किये गए प्रयत्नों, पर इससे कहीं अधिक खर्च आया। परन्तु वे आलोचक यह भूल जाते हैं अथवा इसे उपेक्षित दृष्टि से देखते हैं कि ऐसी जाग्रत-सामुदायिक भावना का उदय हुआ है जो पुल बन जाने के बाद, सामुदायिक जीवन सुधारने के अन्य कार्यों में भी योग दे सकती है।

सामुदायिक शिक्षा खंड की रचना १४ मई १९४९ को विधान मंडल द्वारा की गयी थी। एक छोटे से रूप में, इसका आरम्भ हुआ, कर्मचारी नहीं थे, साधन सामग्री नहीं थी, जो कुछ भी था वह गवर्नर और विधान मंडल को वरदहस्त प्राप्त एक उपादेय विचार और इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए अपर्याप्त धनराशि। इस पुस्तक के लिखे जाने के समय तक यह खंड १५० (किसी भी दशा कम नहीं) योजनाओं का इस द्वीप के इतने ही हिस्सों में आरम्भ कर उन्हें आगे बढ़ा रहा था। इन में से ४९ योजनाएँ पूरी हो चुकी हैं।

इस द्वीप के एक हिस्से में, जहाँ सरकार ने एक बाँध पूरा किया है, एक जलाशय बनाया गया जो मछलियों से भरा हुआ है। समीपवर्ती निवासियों को सरकारी विशेषज्ञों ने समझाया कि एक वर्ष तक इस जलाशय में मछलियों का शिकार नहीं किया जाय चाहे उन की खाद्य-आवश्यकता कितनी ही जोर क्यों न दे। यदि वे चाहते हैं कि यह जलाशय स्थायी तौर पर उनके खाद्य का भंडार बना रहे; उन्हें मछलियों को अपनी संख्या बढ़ाने का अवसर देना होगा। इस समस्या पर दल संगठनकर्त्ता से चर्चा की गयी, परिणाम यह हुआ कि समूचा समुदाय स्वेच्छा से 'शिकारागाह का संरक्षण' बन गया न केवल लोग स्वयं मछली का शिकार न करने के लिए (वे एक

तैयार हो गए, परन्तु उन्होंने इस जलाशय में मछली मारने के बाहरी लोगों के उत्साह को भी ठन्डा किया। पूरे वर्ष भर वे बारी-बारी से जलाशय के सब हिस्सों पर पहरा देते थे और जब कभी कोई मछली मारता नजर आता वे उसे सभ्य, नम्र गरिमापूर्ण तरीकों से, परन्तु सदैव दृढ़ता और बल के साथ जिनके लिए पुर्टोरिको का जिबारो प्रसिद्ध है; रोकते थे। जो लोग पुर्टोरिको के ग्रामों की आर्थिक-अवस्था से आहार के लिए उनके अनवरत संघर्ष से-परिचित हैं वे यह समझ सकते हैं कि यह योजना सरकार का कैसा चमत्कार थी। अब देश के भाग में न केवल प्रोटीन का (जो मछलियों से प्राप्त होता है) स्थायी भण्डार ही है, वरन् संरक्षण में भी वह सर्वाधिक सम्भव प्रभावोत्पादक तरीके से एक मूल्यवान पाठ पढ़ चुका है।

— x —

अध्याय १८

संस्कृति-परिवर्तन और जनसंख्या की समस्या

किसी भी परिभाषा के अनुसार पुर्टोरिको घना बसा हुआ द्वीप है जिनकी जनसंख्या का घनत्व जापान या ब्रिटेन से मिलता है। १६५२ में इस की जन-संख्या २,२८५,००० के सन्निकट थी और घनत्व ६६८ प्रति वर्गमील।

जब "चोर्डन आयोग" ने अपनी वह योजना तैयार की थी जिस के फलस्वरूप "पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन" की स्थापना हुई, उसने जनसंख्या की अधिकता की समस्या हल करने के लिये आर्थिक सुधारों का प्रतिपादन किया था। उसने अपने विवरण के आरम्भ ही में कहा : पुर्टोरिको की आर्थिक-समस्या, जहाँ तक उसके अधिकांश निवासियों का सम्बन्ध है; सरल शब्दों में बढ़ती हुई भूमिहीनता, ——— बेरोजगारी और जनसंख्या की असह्य वृद्धि हैं।

यदि पुर्टोरिको कोई बात प्रमाणित करता है तो वह बात यह है कि मानव-सम्बन्धी मामले इतने जटिल हैं कि उनका साधारणीकरण नहीं हो सकता। समाज एक चेतनापूर्ण संगठन है, जिसमें हर वस्तु दूसरी हर वस्तु से गुंथी हुई है; वह भी इस भाँति कि कारण तथा परिणामों को पृथक-पृथक अलग नहीं किया जा सकता। जब कभी और जहाँ कहीं इस समाज में आवश्यकताएँ उत्पन्न हों, जन-संख्या की समस्या उसे अन्य समस्याओं से पृथक करने के तौर-तरीकों का उपयोग कर हल नहीं की जा सकती। यह समस्या जीवन-स्तर उन्नत करने की व्यापक समस्या का एक अविभाज्य अंग है। सचमुच, इस कथन का पक्ष प्रबल है कि जन संख्या बाहुल्य की स्थिति समस्त मानवीय प्रगति की जड़ हैं।

समाज तीन तरीकों से जनसंख्या की समस्या हल करने के यत्न करता प्रतीत होता है; ये तरीके परस्परावलम्बी हैं और साथ-साथ चलते हैं। ति-तरफा प्रहार करते हुए वे एक दूसरे से पृथक नहीं किये जा सकते। इनमें से एक है जीवन स्तर उन्नत करने हेतु आर्थिक विकास उसकी समस्त जटिलताओं को लिए हुए। दूसरा है निष्क्रमण, तीसरा तरीका है संतति-निग्रह के साधनों का उपयोग जबकि उसकी आवश्यकता (किन्तु इसके पूर्व नहीं) उत्पन्न हों; क्योंकि जीवन स्तर उन्नति के साथ छोटे-परिवार की कल्पना बलवती होती जा रही है।

गन्दी जगहों पर रहने वाले निर्धन, निरक्षक लोगों के बच्चों की संख्या सामान्यतया उन व्यक्तियों के बच्चों की संख्या से अधिक ही होती है जिनके आवास सुधारे जा चुके हैं। और जो आर्थिक उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे हैं, १९३० के आसपास के वर्षों के आरम्भ के पूर्व तक, जबकि "पुर्टोरिको सङ्कटकालीन सहायता प्रशासन" और "पुर्टोरिको पुनर्निमाण प्रशासन" ने अल्प लागत वाले मकान बनाने की योजनाएँ आरम्भ की थीं, नगरों का विकास मुख्य रूप से मनमाने ढंग से और फलस्वरूप बड़े ही अव्यवस्थित रूप

में हुआ था और इस कारण उसके परिणाम बड़े ही भयावह थे। दुष्प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों के लोग किसी न किसी प्रकार से जीविकोपार्जन के हेतु नगर में आकर भर गये थे। विद्यमान मकानों में, जिनका निर्माण, मूलतः मुट्ठी भर परिवारों के लिए हुआ था, सैकड़ों लोगों के जमा हो जाने से सेन जुआन का सुन्दर, पुराना शहर पनाह से घिरा नगर एक बहुत बड़ी गन्दी-बस्ती के रूप में बदल गया।

यह स्थिति नयी सरकार के लिए, जो १९४१ में सत्तारूढ़ हुई, एक महान चुनौती थी। आज भी आयोजन-मंडल के अधिकांश प्रयत्न प्रभावोत्पादक नगर-नियोजन की दिशा में हो रहे हैं।

समूची शक्ति लगाकर सरकार, आरामदेह, स्वच्छ, मजबूत, अल्पलागत वाले मकानों की योजना तैयार करती है और ये मकान बनाती है, जिसमें रहने वालों से उनकी क्षमता के अनुरूप किराया लिया जाता है। सेन जुआन की नगर सीमा के भीतर ऐसी ही एक योजना के अन्तर्गत ७,००० कांक्रीट के बने मकान हैं और यह योजना पश्चिमी दुनिया की सर्वाधिक बड़ी अल्प-लागत वाली आवास योजना समझी जाती है ; और इसके निर्माण का अर्थ है एक व्यापक पैमाने पर, २०,००० से ३०,००० व्यक्तियों के लिये, बाजारों व दुकानों, स्कूलों, सड़कों, बस-सुविधा, फुटपाथ युक्त सड़कों, गंदा पानी बहाने वाली नालियों, साफ पानी की सुविधा, विद्युत प्रकाश एवं शक्ति, उपयुक्त स्वच्छ स्वस्थ वातावरण और उन सब सुविधाओं से जो किसी शहरी बस्ती को आधुनिकता प्रदान करती हैं, सम्पन्न एक पूरा नगर बसा देना। गंदी बस्तियों के उन्मूलन की योजनाएँ, आराम व न्याय सङ्गत लागत वाले आवासों का निर्माण जैसे-जैसे योजनाएँ पूरी होती जा रही हैं और संघीय सहायता से धन राशि मिलती जाती है, एक-एक कर विभिन्न नगरों में भी आरम्भ होता है।

सरकार के विभिन्न विभाग आरामदेह उद्यानों की रचना करने,

बेसबाल, बास्केट बाल के खेलों एवं मनोरंजन के अन्य तरीकों को प्रोत्साहन प्रदान करने, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से लोगों को नये वातावरण एवं जीवन के नये तौर तरीकों से अपना मेल बैठाने के लिये सहायता देने के कामों में लगे हुए हैं।

नगरों में, अन्य स्थानों के समान ही; पुर्टोरिको सरकार लोकप्रिय मांगों के परिणामतः जन संख्या में कमी करने के उद्देश्य से एक नया सांस्कृतिक वातावरण तैयार करने में लगी है। क्योंकि एक व्यक्ति को हर नवजात बालक के लिये मकान का अधिक किराया देना होता है; उसे अपने बालकों के लिये, जब वे स्कूल जाने लगते हैं, जूते और आरामदेह कपड़े खरीदने होते हैं, जब बालक स्कूलों में सुधरे हुये जीवन-स्तर की बातें सुनते हैं, जब महिलाएँ भी यही ज्ञान प्राप्त करती हैं, छोटे परिवार के इस नये पुर्टोरिकी विचार को अत्यन्त दृढ़तापूर्वक ग्रामीण या शहरी क्षेत्र के, निर्धनतम पुर्टोरिकी तक फैलाना ही वांछनीय है।

सन्तान जन्म और उससे सम्बन्धित मामले इतना अधिक गहरा विषय है कि सन्तान की उत्पत्ति होने या न होने का प्रश्न उन व्यक्तियों की निजी चेतना से सम्बन्धित है जो इस क्रिया में प्रत्यक्ष और महत्पूर्ण भूमिका सम्पादित करते हैं। और यही व्यक्तिगत-चेतना जो सामाजिक चेतनाओं के रूप में सैकड़ों हजारों गुनी सबल हो जाती है; मानव के सदैव परिवर्तित संस्कृति की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। संस्कृति से मेरा तात्पर्य धर्म नहीं है; मेरा तात्पर्य शिक्षा भी नहीं और मेरा तात्पर्य आर्थिक या राजनैतिक परिस्थिति नहीं है, मेरा तात्पर्य प्राकृतिक वातावरण, जातीय परम्परा, वर्ग भेद अथवा ऐसा कुछ भी नहीं है। मेरा तात्पर्य इन सब और उनके अतिरिक्त बहुत सी, एक दूसरे से सदैव महत्वपूर्ण एवं जटिल रूप में सम्बन्ध रखने वाली बातों को मिलाकर है।

आज पुर्टोरिको में जन्म-संख्या घटती जा रही है क्योंकि

पुर्टोरिको की जनता ऐसा चाहती है। सरकार ने संतति-निग्रह सम्बन्धी सूचनाओं के प्रचार और उन महिलाओं को, जिनके लिये और अधिक सन्तानों का जन्म घातक होता है, 'अनुर्वरा' बना देने के कार्य को वैधानिक बना दिया है।

अधिकृत तौर पर, सरकार ने कोई नीति निर्धारित नहीं की है और न संततिनिग्रह की समस्या पर कोई विज्ञप्ति ही प्रकाशित की है। इस मौन के राजनैतिक कारण भी हो सकते हैं। यह कारण भी हो सकता है कि मुनोज मारिन सदैव व्यक्ति की दृष्टि से सोचते हैं। वह व्यक्ति की चेतना को ज्ञानवान बनाने के लिये संघर्ष करते हैं, किन्तु यदि यह चेतना अज्ञान है, तब भी वे उसका सम्मान ही करते हैं।

अध्याय १६

अब किधर ?

१६५३ में अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को अधिकृत तौर पर सूचित किया कि पुर्टोरिको अब पराधीन-क्षेत्र नहीं रह गया है और वाशिंगटन इस कारण उसके (पुर्टोरिको) के सम्बन्ध में (सं० रा० संघ को) विवरण नहीं देगा। कुछ समय के लिये संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रधान कार्यालय पुर्टोरिको विवाद का अखाड़ा बन गया। "स्वतन्त्रता-पार्टी" के प्रतिनिधि इस आधार पर प्रतिरोध करने न्यूयार्क पहुँचे कि पुर्टोरिको अब भी, व्यवहार रूप में, एक उपनिवेश ही है। उनका विरोध किया पुर्टोरिको सरकार के प्रतिनिधियों ने जिनका दावा था कि कामनवेल्थ ने स्वतन्त्र इच्छा से और स्वयं

वाशिंगटन के साथ, उसकी वर्तमान राजनीतिक-अवस्था के सम्बन्ध में सन्धि की है कि पुर्टो रिको ने अमेरिकी संघ की परिधि में स्वयं-शासन प्राप्त कर लिया है और वह, वास्तव में अब अधीन देश नहीं रह गया है। प्रेसिडेन्ट आइसन हावर ने इस आशय का एक वक्तव्य दिया कि पुर्टो रिको जब भी चाहे अपना राष्ट्रीय प्रभुसत्ता प्राप्त कर सकेगा। उत्तर में मुनोज ने,प्रेसिडेन्ट महोदय को उनकी इस उदारता के लिये धन्यवाद देते हुए परन्तु अपने देशवासियों की ओर से वैसी किसी इच्छा को, उसे "पृथक स्वतन्त्रता" की संज्ञा देते हुए खण्डन किया।

हजारों पुर्टो रिकी आज उस पार्टी को अपने मत देते हैं जो अन्तत: स्वतंत्रता के पक्षपाती हैं। समूचे विश्व में, सम्मान की दृष्टि से देखे जाने वाले स्वतंत्रता के भाव के प्रति संभवत: उन अधिकांश पुर्टोरिकियों का लगाव होगा जिन्होंने इसका बीड़ा उठाने वाले दल को कभी मत नहीं दिए हैं। स्वतन्त्रता का कई स्वरूप है, और यदि उन्हें किसी जनमत संग्रह में अपने मताधिकार का उपयोग करना पड़े, तब न केवल उन्हें केवल यही समझना होगा कि स्वतन्त्रता का वह विशिष्ट स्वरूप कैसे-क्या है, वरन उन्हें उस प्रकार की स्वतन्त्रता प्रदान करने के सम्बन्ध में वाशिंगटन की तत्परता की जानकारी भी होनी चाहिए।

स्वतन्त्रता पार्टी के प्रधान गिलबर्टो कन्सेप्सियन डिग्रेसिया का विचार है कि वे वाशिंगटन को, सार्वभौमत्व की अर्थ व्यवस्था का विकास करने हेतु कदाचित ५० वर्षों की स्वतन्त्रोत्तर अंतरिम अवधि के साथ व्यावहारिक किस्म की स्वतन्त्रता देने हेतु तत्पर कर सकते हैं। यदि कभी वे किसी चुनाव में विजयी हुए, वे निःसन्देह वाशिंगटन से इस प्रकार की कोई स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हेतु यत्न करेंगे। यदि वाशिंगटन तत्पर हो जाता है, जो कि सन्देहपूर्ण प्रतीत होता है, तब कदाचित उन्हें इस प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार करने हेतु एक

जनमत संग्रह आयोजित करना होगा। ऐसी स्थिति में, पुर्टो रिको की आज की राजनीति को देखते हुए, यह आश्चर्यजनक नहीं होगा कि, मतदाता, कन्सेप्सियन को स्वतन्त्र नीति के लिए चुनने के पश्चात, बलपूर्वक उस प्रकार की स्वतन्त्रता अस्वीकार कर देंगे, जो वह उन्हें देने के हेतु तत्पर है।

वर्तमान कामनवेल्थ दर्जे का क्रमिक विकास एक क्रान्तिकारी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है। यह उद्भव, विश्व के राजनीति-जगत में जो अद्वितीय और संसार और उसके इतिहास में बेजोड़ है, विचारों को भावनात्मक रूप में देखने वाले राजनीति-शास्त्रियों की शब्दावलियों की अपेक्षा, प्रत्यक्ष रूप से पुर्टो रिको अभिव्यक्ति से जन्मा है। यह आंशिक रूप में इसलिए अद्वितीय है कि इसका विकास, वाशिंगटन में स्वीकृत एवं पुर्टो रिको पर थोपे गये किसी कानून द्वारा नहीं, परन्तु पुर्टो रिको द्वारा वाशिंगटन के समक्ष प्रस्तावित ऐसी सम्बन्ध-संधि के कारण हुआ है जिसके अनुसार पुर्टो रिको की जनता और वाशिंगटन की सरकार परस्पर सहमति से और मित्रतापूर्वक अपने भावी सम्बन्धों का निर्धारण करेगी। कांग्रेस द्वारा पारित एवं ३ जुलाई १९५० को स्वीकृत सार्वजनिक कानून ६०० ने, 'स्वीकृति से शासन' के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की और स्पष्ट रूप से निर्धारित किया कि, यह कानून एक संधि के रूप में है, और उसके अपने अनुबन्धों के अनुसार, इस अर्थ में एक अद्वितीय संघीय कानून है कि पुर्टो रिको के निवासियों की स्वीकृति के बिना वह कानून का रूप ग्रहण नहीं करेगा; नकारात्मक मत देकर, एक छोटा सा औपनिवेशिक समाज, तब शासक देश की कांग्रेस द्वारा बनाये गए कानून को अवैध करार दे सकता था। यह कानून और उसी प्रकार वह सम्बन्ध-संधि भी १९५१ में एक जनमत संग्रह द्वारा ३८७,०१६ के विरुद्ध ११९-, १६९ के मतों से जो एक ओर तो अमेरिका से राजनीतिक सम्बन्ध

जारी रखने के सबल समर्थन में थे और दूसरी ओर पृथक स्वतन्त्रता के विरोध स्वीकार कर ली गयी।

सार्वजनिक कानून, ६०० के अधीन पुर्टोरिको में संघीय सरकार की कार्य-संचालन पद्धति और पुर्टोरिको की सरकार तथा जनता और अमेरिका के मध्य सम्बन्ध पूर्ववत है। अमेरिका अभी भी भूमि-सेना, नौसेना, वायुसेना, डाक-सेवा, कस्टम-सेवा का और भूमि संरक्षण सेवा जैसे विविध संघीय एजेन्सियों का पुर्टोरिको में संचालन करती है। पुर्टोरिको में उत्पादित सामग्री पर वसूल किया जाने वाला एक्साइज कर और पुर्टोरिकी बन्दरगाहों में एकत्र किये जाने वाले कर, संघीय कोषालय की बजाय आज भी पुर्टोरिकी कोषालय भेजे जाते हैं। पुर्टोरिको में अर्जित आय आज भी, "बिना प्रतिनिधित्व के कर नहीं" सिद्धान्त के अनुसार, संघीय आय कर से मुक्त है। पुर्टोरिको में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व आज भी केवल एक रेजिडेन्ट-आयुक्त करता, जिसे मत व्यक्त करने का तो अधिकार है, परन्तु मत देने का नहीं। पुर्टोरिको अमेरिका की अर्थ-व्यवस्था का अंग है।

तथापि स्वायत्त शासन से सम्बन्धित समस्त विषयों में सार्वजनिक कानून ६०० की संधि के अन्तर्गत पुर्टोरिको को सम्पूर्ण स्वतन्त्रता दी गयी है, नियन्त्रण केवल, वैधानिकता के आधार पर अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय का है। सन्धि-कानून पारित करते समय कांग्रेस ने स्वेच्छा से अपनी साम्राज्यवादी-सत्ता का समर्पण कर दिया। इस कानून में प्रावधान था कि पुर्टोरिको स्वयं अपने संविधान की रचना करेगा, जो, पुर्टोरिकी मतदाताओं और साथ ही काँग्रेस की स्वीकृति प्राप्त होने पर, उदयशील राजनैतिक इकाइयों को, जो अधिकृति, तौर पर, अंग्रेजी में कामनवेल्थ, और स्पेनीय भाषा में "इस्टेडो लिबरे एसोसिएडो' या स्वतन्त्र सम्बन्ध राज्य कहा जाता है, मूलभूत कानून होगा। इस संविधान की रचना हेतु पुर्टोरिकियों ने संविधान परिषद के सदस्यों का चुनाव किया। जब यह परिषद

अपना कर्तव्य पूर्ण कर चुकी, एक पुर्टोरिकी जनमत संग्रह द्वारा, ३७५,५६४ के विरुद्ध ८२,८७७ के मतों से संविधान स्वीकारा गया।

कांग्रेस, सार्वजनिक कानून—६०० पारित करते समय अपने अधिकांश अधिकार छोड़ ही चुकी थी, उसने बाद में तैयार किया गया संविधान भी स्वीकार कर लिया। सामान्य रूप में, पुटोंरिको के निवासियों को उनके अपने संविधान के अन्तर्गत स्व-शासन प्राप्त हैं; परन्तु दो प्रश्नों का, जो एक दूसरे से नजदीक सम्बन्ध रखते हैं, निराकरण अभी होना है। आज भी कांग्रेस में इस द्वीप का मताधिकार सम्पन्न प्रतिनिधि नहीं है, यद्यपि कांग्रेस पारित कानून पुटोंरिको पर लागू होते हैं; तथा कामनवेल्थ व संघीय सरकार के मध्य सम्बन्धों की व्याख्या करने वाले तथाकथित संघीय सम्बन्ध कानून में संशोधन का कोई प्रावधान नहीं है। यदि भविष्य में कांग्रेस में मताधिकार सम्पन्न प्रतिनिधि हेतु और संघीय सम्बन्ध कानून में अन्य परिवर्तनों हेतु प्रावधान किया जाता है; तब क्या ऐसा कांग्रेस द्वारा एक पक्षीय रूप में किया जायेगा, अथवा 'एक सन्धि स्वरूप में' पुटोंरिको और वाशिंगटन द्वारा सम्मिलित रूप में? यदि भविष्य में ऐसा निर्णय किया जाता है कि संघीय शासन के खर्चे में पुटोंरिको भी हिस्सा देगा, पुटोंरिको में उत्पादित सामग्री पर लिया जाने वाला एक्साइज कर अब कामनवेल्थ को लौटाया नहीं जायेगा, पुटोंरिकी संघीय आय-कर देंगे, तब निर्णय कांग्रेस अकेली करेगी अथवा पुटोंरिको की सरकार व जनता से इस प्रश्न पर परामर्श किया जायेगा कि जीवन-स्तर उन्नत करने एवं शिक्षा व जन स्वास्थ्य की सुविधाओं का द्वीप के समस्त निवासियों तक फैलाव करने के अपने वेगपूर्ण कार्यक्रम को अभंग किये बिना वे ऐसा योग दे सकते हैं या नहीं? इन अति महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर का सार्वजनिक कानून ६०० में या अन्य कहीं कोई प्रावधान नहीं है और जहाँ तक ये प्रश्न कामनवेल्थ की राजनैतिक अवस्था को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करने की इच्छा

रखने वाले लोगों को चिंतित किये हुए हैं वहीं तक पुर्टो रिको को, अमेरिकी संघ के एक अंग के नाते, स्वयं अपने भविष्य को नियंत्रित करने का अधिकार का अभाव है।

निःसंदेह इस परिस्थिति के कारण ही मुनोज मारिन को कई अवसरों पर संघीय कोषालय में योग देने की आशंका का प्रश्न उठाना पड़ा है। यदि, अब भी समय आयेगा, कामनवेल्थ स्वेच्छा के ऐसे योग देने की तत्परता व्यक्त करेगा और ऐसे योग की व्यवस्था हेतु कांग्रेस के समक्ष कोई विधान प्रस्तुत करेगा तब उसे अपने आप ही— एक संधि के स्वरूप में व्यवस्था के सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त करने का अधिकार मिल जायेगा। जब तक ऐसा कुछ नहीं किया जाता, अथवा जब तक समूचे प्रश्न का कदाचित अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से निराकरण नहीं हो जाता, पुर्टो रिको को स्वयं अपने भाग्य का निर्णय करने का अपर्याप्त ही अधिकार रहेगा, उसे अपने सिर पर लटकती नंगी तलवार के प्रति सदैव सावधान रहना होगा। यह मानना होगा कि अभी कांग्रेस कामनवेल्थ की स्वीकृति के बिना पुर्टो रिको को प्रभावित करने वाला कानून बना सकती है। कांग्रेस को आज एकपक्षीय रूप में संघीय सम्बन्ध कानून हैं, इस प्रकार से संशोधन करने का अधिकार प्राप्त प्रतीत होता है कि जिन से परिवर्तन हेतु किए जा रहे महान पुर्टो रिकी प्रयत्न अपंग हो जायेंगे अथवा उन में गंभीर अवरोध उत्पन्न होगा।

इस बीच, और जब कि ऐसे प्रश्नों का निराकरण होना शेष है, पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा १९४० के चुनाव जीतने के बाद से अवस्था-सिद्धान्त के विकास ने उल्लेखनीय प्रगति की है। जब तक इस पार्टी को जब तक इस मामले में सबल नेतृत्व का अधिकार प्राप्त है, उसकी निरंतर बल वृद्धि, औपनिवेशिक प्रजा के-रूप में सहन की गयी पिछली यातनाओं से ऊपर उठाकर विकासवादी तरीकों से प्रगति का विश्वास लेकर—अमेरिकन नागरिकों के रूप अमेरिकी

व्यवस्था के अन्तर्गत रहने की पुर्टोरिकियों की इच्छा को भी साथ ही बलवती करेगी, १६५२ में, पापुलर्स को ४२६,०६४, मत, अर्थात कुल मतों का ६५ प्रतिशत, प्राप्त हुये। विरोधी दल मंडल में एक भी स्थान या किसी भी कस्बे या नगर में म्युनिसिपालटी का भी पद नहीं जीत सके। उन्हें केवल इस लिए विधान मण्डल में प्रतिनिधित्व प्राप्त है कि सविधान में, एक दलीय शासन के खतरे को मान्य करते हुए, अनुपातिक आधार पर ऐसे प्रतिनिधित्व का-प्रावधान है।

इस प्रकार सरकार ने यह व्यवस्था की कि विरोधी दलों, चाहे वे अपने प्रतिनिधियों को निर्वाचित कर भेजने में असमर्थ रहे हों को प्रतिनिधित्व मिले, उस ने विधान मंडल में यह व्यवस्था भी की कि राजनीतिक-दलों का जीवन पहले की अपेक्षा अधिक लम्बा हो। कानून में परिवर्तन, जिसके अन्तर्गत किसी दल को राजनीतिक दल के रूप में अपना अस्तित्व कायम रखने एवं आगामी चुनाव लड़ सकने के लिए पिछले १० प्रतिशत मतों के स्थान पर अब केवल किसी चुनाव में कुल डाले गए मतों का ५ प्रतिशत की ही आवश्यक होती है—विशिष्ट रूप से इस लिए किया गया था कि पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी सर्वत्र विजयी हो रही थी और स्वस्थ प्रजातांत्रिक समाज में उसे स्वस्थ विरोध की आवश्यकता थी।

स्वतंत्रता पार्टी को हाल में मिली सफलताओं के बावजूद, कई पर्यवेक्षक, जिन में मैं स्वयं भी सम्मिलित हूँ, यह अनुभव करते हैं कि स्वतंत्रता की उत्कंठा तेजी से क्षीण होती जा रही है, और यह भी कि आज की सी परिस्थितियों में किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता की प्राप्ति इस द्वीप के लिये एक महान दुर्भाग्य होगा।

कोरिया-युद्ध से, जिसमें पुर्टोरिको पैदल सेना की ६५वीं रेजिमेंट ने, २००० हताहतों की संख्या के साथ, यश अर्जित किया, सम्बन्धित

नई दिशा का संकेत करती है। १६५२ के चुनावों के ठीक पूर्व राज्यत्व-दल के प्रधान ने इस आशय का एक वक्तव्य दिया कि प्रेसिडेन्ट पद के उम्मीदवार आइसनहावर ने इस युद्ध को एक एशियाई-युद्ध बतलाया है और उसे एशियावासियों के बीच ही छोड़ देने और अमेरिकी सैन्य हटा लेने की इच्छा से संकेत दिया है। उन्होंने पुर्टो रिको के राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा संयुक्त रूप से से उक्त वक्तव्य का समर्थन करने एवं संघर्ष से पुर्टो रिकी सेनाएँ हटाने हेतु वाशिंगटन से प्रार्थना करने का आह्वान किया। इन्डिपेन्डेन्स पार्टी के प्रधान ने तुरन्त अपना वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने पुर्टो रिको इन्डिपेन्डेन्स पार्टी की नीति की पुष्टि की और यह दावा किया कि कोरिया युद्ध का पुर्टो रिको से (एक उपनिवेश होने के नाते) सम्बन्ध नहीं है और ६५वीं रेजिमेंट को वापस बुलवाने हेतु अन्य पार्टियों के नेताओं के साथ संयुक्तरूप से कार्यवाही करने की अपनी उत्कंठा प्रदर्शित की। मुनोज ने इन्कार करते हुये इस आशय का उत्तर दिया कि उनके मत से आइसनहावर गलती पर हैं, यह युद्ध एशियावासियों का युद्ध नहीं है, यह युद्ध आक्रमण के विरुद्ध एवं जीवन की प्रजातांत्रिक प्रणाली के लिए है और पुर्टो रिको की जनता को जो जीवन की इस प्रणाली में इतने उल्लेखनीय रूप में हिस्सा लेने लगी है, उसकी रक्षा के लिये लड़ने हेतु तत्पर रहना चाहिये।

इस वक्तव्य के कारण मुनोज को, जहाँ तक कोई कह सकता है, एक भी मत की हानि नहीं उठानी पड़ी—कुछ दिनों बाद पापुलर्स को पूर्ण विजय प्राप्त हुई—इतना ही नहीं उन्हें भारी संख्या में ऐसे पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से लगभग सभी में, 'उनके जैसे नेता के लिये सर्वशक्तिमान को धन्यवाद' दिया गया था। मुनोज का वक्तव्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने के बाद, एक घंटे के भीतर ही एक वृद्ध टेक्सी-चालक एक पत्र के साथ फोर्टलेझा पहुँचा जो वह स्वयं महानुभाव लुइस को सौंपना चाहता था। इस पत्र में कहा गया था कि

उस वृद्ध के दो पुत्र अब तक कोरिया युद्ध में काम आ चुके थे और उसका अंतिम पुत्र भी सेना में, कोरिया जाने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। पत्र में गवर्नर को उनके वक्तव्य के लिये धन्यवाद दिया गया था और पत्र लेख राज्यत्व और स्वतन्त्रता पार्टियों के नेताओं के कार्य के प्रति, जो उसके दो मृत पुत्रों की स्मृति और तीसरे की अचल निष्ठा के प्रति अपमान जनक थे, क्षोभ व्यक्त किया था। फोर्टलेक्जा में आने वाले पत्रों में से अधिकांश इसी प्रवाह में उन व्यक्तियों द्वारा लिखे गए थे जो कोरिया में अपने सैनिक-पुत्र गँवा चुके थे और उनमें गवर्नर को उनकी स्मृति व निष्ठा की रक्षा हेतु धन्यवाद दिया गया था।

इसके अतिरिक्त कि उसने स्वतन्त्रता के समर्थकों को, उनके तर्कों की कुछ थोड़ी वैधताधीन कर उन्हें अशांत कर दिया, कांग्रेस की निष्पक्षता ने, जिनके माध्यम से कामनवेल्थ को वह राजनीतिक-अवस्था प्राप्त हुई थी; स्वतन्त्रता की भावना को बलवती करने में बहुत कम योग दिया। अमेरिका में, अमेरिकी नागरिक के नाते स्वतन्त्रतापूर्वक आने व जाने का विचार मात्र, जिसके साथ यह विचार कि स्वतन्त्रता की स्थिति में आर्थिक दृष्टि से पुर्टोरिको का और पुर्टोरिको में रोजगार का क्या होगा, भी मिला हुआ था; स्वतन्त्रता की आशङ्का के विरोध में व्यापक रूप से सबल तर्क माना जाता है।

मुनोज ने अपनी आरम्भिक स्वतन्त्रता-समर्थक नीति का परित्याग मुख्य रूप से इस कारण किया कि उन्हें यह समझ में नहीं आता था कि कोई भी काँग्रेस, चाहे वह कितना ही दयापूर्ण रुख क्यों न रखती हो, किस भाँति अमेरिका में पुर्टोरिको के उत्पादनों को कर-मुक्त प्रवेश प्रदान कर सकती है। चीनी पर तटकर का लगाया जाना चीनी-उद्योग का, जो उस समय और आज भी इस द्वीप की अर्थ व्यवस्था का मेरु-दण्ड है, को नष्ट कर देता। आर्थिक विकास के उस समूचे कार्यक्रम का, जिसने गत पन्द्रह वर्षों में इतनी उल्लेखनीय प्रगति की है,

सबल आधार है मुख्य रूप से अमेरिका से, अमेरिका आर्थिक व्यवस्था के अन्तर्गत, अमेरिकी संघ के एक अंग के रूप में विद्यमान सम्बन्ध। यदि स्वतन्त्रता आनी है और उसके साथ अमेरिका को भेजे जाने वाले माल पर ड्यूटी चुकाने की आवश्यकता थी; तब राष्ट्रव्यापी वितरण के लिए उत्पादन हेतु, अधिकांश अमेरिकी पूँजी से स्थापित सैकड़ों नये उद्योगों का क्या होगा ?

स्वतंत्रता का पक्ष लेने वालों के पास ऐसे प्रश्नों के कोई उचित उत्तर नहीं है, सिवाय एक ओर, यह आशा करने के कि भविष्य में कोई काँग्रेस पुर्टोरिको को अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था के अन्तर्गत रखते हुए भी उसे राजनीतिक प्रभुसत्ता प्रदान कर देगी और दूसरी ओर यह बतलाने के कि स्वतंत्र पुर्टोरिको स्वयं अपने विदेश-व्यापार समझौते कर सकेगा और अमेरिका की तटकर-परिधि के बाहर से माल अधिक सस्ती दरों पर खरीद सकेगा। विरोध उन्हें यह कह कर उत्तर देते हैं कि स्वयं अपने विदेश व्यापार समझौते कर लेना तो ठीक है परन्तु जब सुई के नोक के बराबर द्वीप को इन समझौतों में विशाल अमेरिका से मुकाबला करना पड़े तो ऐसे समझौते करने का अधिकार आर्थिक दृष्टि से निरर्थक होगा। उनका दावा है कि उस स्थिति में पुर्टोरिको पुनः घट कर चीनी जैसे कुछ ही वस्तुओं का उत्पादक और निर्यातकर्त्ता रह जावेगा, परन्तु उसका विकासशील औद्योगिक कार्यक्रम, जो अब अमेरिका के सूक्ष्म कार्यक्रम का अभिभाज्य अंग है; ढह जावेगा और सिकुड़ कर, पुर्टोरिकियों के स्वयं के उपयोग हेतु माल तैयार करने के थोड़े से कारखाने भर रह जायेगा।

यह शंका हो सकती है कि राजतत्व पार्टी, मुख्य रूप से स्वतन्त्रता के प्रति किसी भावी झुकाव की सम्भावना के विरुद्ध ओट के रूप में राजतत्व के पक्ष में है। गृह-युद्ध ने एकता, एक राज्य, सदैव के लिए राज्य का सिद्धान्त स्थापित किया था; जिस सिद्धान्त के अंतर्गत कोई भी राज्य या उनका दल स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण करने

हेतु अलग नहीं हो सकता। संयुक्त राष्ट्र मंडल में बहस के समय दिये गए प्रेसिडेंट आइसनहावर के वक्तव्य ने जिसमें, यदि पुर्टोरिकी चाहें, उन्हें स्वतन्त्रता देने की तत्परता प्रदर्शित की गयी थी, यह तथ्य स्पष्ट किया कि वर्तमान कामनवेल्थ की अवस्था को अस्थायी समझा जा सकता है, जो भविष्य में राज्यत्व, स्वतन्त्रता या कामनवेल्थ अवस्था को अनिश्चित काल तक कदाचित समय-समय पर विकासवाद की प्रक्रिया से उत्पन्न नई परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित रूप में, जारी रखने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

इस समय कोई नहीं कह सकता कि भविष्य क्या लाएगा। मुनोज मारिन खुले तौर पर स्थिति को लचीला रखने, उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं एवं आने वाले अवसरों के अनुसार परिवर्तन करने, किसी भी भावी काँग्रेस द्वारा पुर्टोरिको के विरोध में बनाए जाने वाले "खराब" कानूनों का सामना करने का पक्ष ले रहे हैं। उनका कथन है कि इस भूतपूर्व उपनिवेश और काँग्रेस के बीच सद्-भावना इतनी अधिक है और पारस्परिक सहमति की सन्धि इतनी सफल रही है कि, पुर्टोरिको की स्थिति इतिहास में पहले किसी भी समय आज कहीं अच्छी है और द्रुत गति से सुधर रही है। वे समर्थन करते हैं कामनवेल्थ की अवस्था को अनिश्चित काल तक के लिए जारी रखने का जिसका उद्देश्य है काँग्रेस के साथ मिल कर समाधान हेतु पारस्परिक सहमति के सिद्धान्त के माध्यम से उसे स्थायित्व प्रदान करना।

इसी के साथ, पुर्टोरिको आज अमेरिकी प्रजातन्त्र की सजीव विज्ञापन है। आज दिन तक उन परिस्थितियों में परिवर्त्तन का किंचित भी चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हुआ है जिन परिस्थितियों के कारण चेस्टर बाउल्स ने, भारत में अमेरिकी राजदूत के नाते, बारम्बार मुनोज का भारत में उनके पास आने का निमंत्रण, इसलिए दिया था कि वे भारत और अमेरिका के बीच सद्-सम्बन्धों को बढ़ावा

देने के लिए किसी भी अन्य अमेरिकी से अधिक योग प्रदान कर सकते हैं। जिस भावना से प्रेरित होकर मुनोज ने १९५१ में काँग्रेस को यह समुद्री-तार दिया था कि : "आज अमेरिका की प्रतिष्ठा की रक्षा करने हेतु हम पर पूर्ण विश्वास कर सकते हैं" उस भावना में परिवर्त्तन का कोई चिन्ह नहीं है।

पुर्टोरिको और अमेरिका के सम्बन्धों की कई महत्वपूर्ण समस्याओं को हल किया जाना अभी भी शेष है, किन्तु उन्हें, स्वतन्त्रता और प्रजातांत्रिक तरीकों से, हल करने की पद्धति उसी समय स्थापित हो चुकी थी जब कि विश्व के कम्युनिस्ट पक्ष की ओर से अमेरिका उसे सर्वग्राही साम्राज्यवादी कहते हुए का विषाक्त प्रहार किया जा रहा था। जब विश्व उपनिवेशवाद के उन्मूलन और उन लाखों-करोड़ों मानवों के लिए, जो आज भुखमरी के कगार पर खड़े हैं, जीवन-यापन का स्तर उन्नत करने के प्रश्नों के तूफान में फँसा हुआ है, पुर्टोरिको ने वाशिंगटन के पूर्ण समर्थन से, इन समस्याओं को हल करने के तौर-तरीकों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया है।

विश्व जब दो मूलभूत रूप से भिन्न बुनियादी दर्शनों में विभक्त है, स्वतन्त्र विश्व के हर कोने से इस द्वीप में आने वाले हजारों व्यक्ति देखते हैं कि पुर्टोरिको क्या कर चुका है और क्या कर रहा है और वे यह कहते हुए लौट कर अपने-अपने देश जाते हैं कि : "यह अमेरिका का साम्यवाद को उत्तर है।" और अमेरिका और आधुनिक विश्व के लिए, यह पुर्टोरिको के महानतम महत्व की अभिव्यक्ति है।

॥ समाप्त ॥

प्रकाशक—श्री बनवारी तिवारी, आदर्श पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद—३
मुद्रक—श्री आई० बी० सक्सेना, माधो प्रिंटिंग वर्क्स इलाहाबाद—३